भैरव साधना विशेषांक

नवम्बर-2021

मूल्य-40/-

वर्ष 12

अंक 2

नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान

सौभाग्य लक्ष्मी सा.

पदमावती साधना

भैरव प्रयोग

अमृत प्रयोग

संन्यास जयंती- आत्म दीप प्रज्वलन साधना

सर्व साधना सिद्धि दीक्षा

मंत्र, तंत्र और यंत्रों के इस विशाल समुद्र में अवगाहन करने का प्रयोजन साधनाओं में सिद्धि ही होता है।

यह सिद्धि किसी को शीघ्र तथा किसी को बहुत अधिक प्रयास के बाद मिल पाती है, और जिनको बहुत प्रयास के बाद भी नहीं मिलती वे साधनाओं को भ्रमजाल मान लेते हैं।

परंतु यह सत्य नहीं है, यदि किसी को मंजिल नहीं मिली तो इसका अर्थ नहीं है, कि मंजिल है ही नहीं। हां, यह अवश्य सत्य है कि मंजिल तक का रास्ता लम्बा था और वहां तक पहुँचते-पहुँचते व्यक्ति निराश हो गया अथवा यह भी हो सकता है कि उसे सही रास्ते का ज्ञान नहीं हो या फिर वो रास्ता मंजिल तक जाता हो, परन्तु किन्हीं कारणों से रुकावट आ रही हो। मनुष्य के मस्तिष्क तन्तुओं में स्वयं के ही विकारों के फलतः कई ऐसी ग्रंथियाँ पड़ जाती हैं, जो साधनाओं में सिद्धि मार्ग को अवरुद्ध कर देती हैं।

इस दीक्षा द्वारा ऐसी ग्रंथियों के खुलने की क्रिया प्रारंभ हो जाती है और साधक को शीघ्र ही साधनाओं में सफलता अनुभूत होने लगती है।

योजना केवल 3-4 नवम्बर एवं 20-21 नवम्बर इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- **'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'**, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे।

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

सुख, सौभाग्य और लक्ष्मी की स्थिरता हेतु : सौभाग्य लक्ष्मी प्रयोग

आत्मोन्नति एवं ज्ञान-दीप प्रज्वलन हेतु : आत्म प्रज्वलन साधना

आकस्मिक दुर्घटनाओं पर विजय प्राप्ति हेतु : काल कीलन प्रयोग

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

स्तोत्र

योग

आयुर्वेद

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता
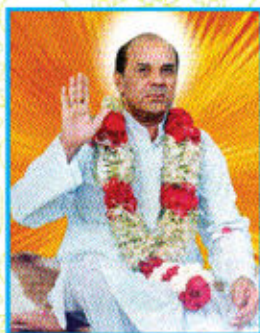
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
प्रगति प्रिंटर्स
A-15, नारायणा, फेज-1
नई दिल्ली: 110028
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित
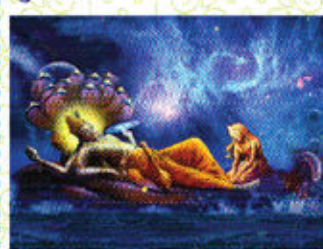
मूल्य (भारत में)
एक प्रति 40/-
वार्षिक 405/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

गूहत गुह्यं तमो वि यात
विश्वमत्रिणाम् ज्योतिष्कर्ता यदुश्मसि।

-ऋग्वेद 1/86/10

हे गुरुदेव! मेरे मन के गुह्य अंधकार को विलीन करो। अपने में सभी को विलय करते हुये अंधकार को दूर भगा दो और आपके द्वारा हमें आत्मज्योति प्राप्त हो। ऐसी ही हमारी प्रार्थना है।

साधना

एक शिशु असहाय सा पड़ा हुआ छटपटा रहा है, मां-मां पुकारते हुए रुदन कर रहा है, उसकी आँखों में सिर्फ उसकी मां का ही बिम्ब है, मां के सिवा उसे न तो किसी दूसरे की कामना है, न वह किसी और को पहचानता ही है। मां की दृष्टि तुरन्त उस पर पड़ती है और वह उसे अपनी गोद में उठाने के लिए व्यग्र हो जाती है। वह उसकी तरफ जाने के लिए पैर भी बढ़ाती है, कि तभी उस शिशु के कुछ निकट सम्बन्धी उसे रंग-बिरंगे खिलौने देते हैं, वह एक क्षण के लिए चुप होकर उन्हें देखने लगता है, वे खिलौने बड़े ही आकर्षक, लुभावने हैं, क्षणिक प्रसन्नता देने में समर्थ भी हैं, लेकिन मां... और पुन: मां का बिम्ब उसकी आँखों में उतर आता है तथा उस बिम्ब के उतरते ही वह उन सबको भूल कर पुन: रुदन करने लगता है, उसकी पुकार सिर्फ मां के लिए ही है, उसके लिए मां के अतिरिक्त अन्य किसी का कोई अस्तित्व ही नहीं है... और उसे अन्य किसी तरीके से चुप होते न देख मां तुरन्त दौड़ी चली आती है और अपनी गोद में उठा कर उसे अपने वक्षस्थल से चिपका लेती है... यही तो साधना का वास्तविक स्वरूप है।

शिष्य भी शिशुवत् होकर ही गुरु को प्राप्त कर सकता है। यदि उनके लिए आँखों में आँसू नहीं आये, उनको तड़प कर पुकारा नहीं, बाहरी रंग-बिरंगे खिलौनों में ही उलझ गए और पुन: उनका बिम्ब नहीं उभरा, तो उनसे दूरी बनी ही रहेगी। उन्हें अपना बनाने के लिए प्राण भरे रुदन की आवश्यकता है, इसके बिना साधना, योगाभ्यास, वेद, उपनिषद्, मीमांसा सब कुछ व्यर्थ है। उनके उपस्थित हुए बगैर, उनकी सामीप्यता प्राप्त किये बगैर आत्मरूप का प्रकाश सम्भव ही नहीं है। जो उनके लिए शिशुवत् रोयेगा, वही उनके वक्षस्थल से लिपट पायेगा। यही यथार्थ भाव साधना है।

साधना में सफलता का रहस्य

मंत्र-जप, साधना, दीक्षा क्या होती है ?

साधना में सफलता शीघ्र क्यों नहीं प्राप्त होती है ?

दीक्षा धारण करने के क्या नियम हैं ? ये सारे प्रश्न साधक के मन में बार-बार उठते रहते हैं, जब तक मन में संशय रहता है तब तक उसे किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती है।

इन्हीं सब संशयों के निवारण करने हेतु सद्गुरुदेव ने यह महान प्रवचन दिया, जिससे व्यक्ति यह जान ले कि वह किस धरातल पर खड़ा है और उसका साधना पथ कैसा है -

वदामि नित्यं भवदेव रूपं गणेशं वदामि, भव रूप चिन्त्यं
लक्ष्मी र्वदां भवदेव हितं सदैव कायो र्वतीर्वे भवदे व न दुखं।

गणेश उपनिषद का यह एक महत्वपूर्ण श्लोक है सभी साधकों के लिए इस श्लोक में उन प्रश्नों को उठाया गया है जो प्रश्न आपके हृदय में उठ सकते हैं। इस श्लोक में उन प्रश्नों के उत्तर दिए हैं जो आपके लिए जरुरी है।

प्रश्न हैं-

हमारे जीवन में हम किन कारणों से तनावमय, दुखमय, चिंतामय रहते हैं ? और यदि भारतवर्ष में देवी-देवता है, प्रत्यक्ष देवता हैं, यहां राम और कृष्ण ने जन्म लिया है तो फिर हम इतने परेशान ओर दुखी क्यों हैं ? इंग्लैण्ड और अमेरिका में जहां देवताओं ने जन्म लिया ही नहीं तो वहां लोग सुखी क्यों हैं, क्या कारण है कि हम दुखी है। और वे सुखी हैं, उनके पास धन है, यश है इसका मूल कारण क्या है ?

यह आप लोगों की एक शंका है; शंका है कि वे ज्यादा सुखी है। और आप ज्यादा दुखी है। और भारतवर्ष में हमने यह देखा है कि उनकी अपेक्षा हम कमजोर हैं धन के मामले में भी और स्वास्थ्य के मामले में भी यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि हम इतने दरिद्री, हम इतने परेशान क्यों है यदि यहाँ गणपति हैं, यहां शिव हैं, लक्ष्मी हैं, साधना है, मंत्र जप है, गुरु है ये सब होते हुए भी क्यों हमारी दरिद्रता नहीं जाती है। ?

हमारी परेशानियाँ क्यों नहीं मिटती हैं, और हमारे जीवन में अभाव क्यों है, यह आप लोगों का ही सोचना है कि आप दुखी है इसलिए कि आपने वहां का जीवन देखा ही नहीं है। वे जब यहांआते हैं तो बहुत अच्छे कपड़े पहन कर आते हैं चाहे आपके भाई हो या मित्र हों यहां रहकर आप उनकी परेशानी को नहीं समझ सकते हैं।

२४ घण्टे वे काम में लगे रहते हैं चाहे पति हो चाहे पत्नी हो, चाहे बेटा हो या चाहे बेटी हो सात दिनों में वे एक दूसरे मिल ही नहीं पाते। यहां जो पारिवारिक वातावरण आपको मिलता है उनको नहीं मिलता, मैं उनके घर में रहा हूँ और कई बार रहा हूँ एक बार नहीं बीस बार रहा हूँ मैंने देखा है उनको तनाव में, दुख में जितना दुख उनको है आपको नहीं, वहां पर आत्महत्या की दर के मुकाबले हमारे यहाँ उसका चौथा भाग भी नहीं है, ऐसा क्यों हो रहा है ? इसलिए कि उनके जीवन में धर्म का और गुरु का कोई स्थान नहीं है और हमारे जीवन में धर्म का स्थान है और हम फिर भी ज्यादा संतुष्ट हैं। आपके जीवन में जितना धन है उतना ही वहां है।यह केवल आपकी कल्पना है कि वे वहां पर सुखी हैं जब वे यहां आते हैं तो अच्छे कपड़े पहने होते हैं, अच्छी घड़ी होती है, अच्छा बैग होता है लेकिन उनके बैग से आप उनके जीवन को नहीं आंक सकते, उनके मूल्य को नहीं आंक सकते। वे आपसे ज्यादा परेशान दुखी और संतप्त हैं। सुबह उठते हैं तो पति अपनी चाय बनाकर पीता है, पत्नी अपनी चाय बनाकर दौड़ती है वे आपस में मिलते ही नहीं सात दिनों में एक बार मिलते हैं। रात को ग्यारह बजे आते हैं तो होटल में खाकर आते हैं और लेट जाते हैं।

हमारी केवल कल्पना है कि वे सुखी हैं। जब हम अपने जीवन में ईश्वर को स्थान नहीं दे पाते तो हमारे जीवन मे परेशानियाँ और बाधाएं आती हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि हम परेशान नहीं है मगर उसका समाधान है।

समाधान तब होगा जब आस्था हो, विश्वास हो, जब विश्वास डगमगा जाता है तब जीवन में धर्म नहीं रह पाता, आस्था नहीं रह पाती पुण्य नहीं रह पाता, जीवन में प्रगति नहीं हो पाती। और इस श्लोक में यही बताया गया है कि हम जीवन में पूर्ण रूप से समृद्ध हो सकते हैं और कुछ ही समय में, ऐसा नहीं है कि मंत्र जप आज करें और बीस साल बाद फल मिले। उस

फल की कोई महत्ता नहीं है। दुखी आप आज है, धन की परेशानी आज है और मैं तुम्हें मंत्र दूं और पांच साल बाद लाभ मिले तो उस मंत्र का कोई फायदा नहीं है।

आप ट्यूब लाइट या बल्ब लगाएं और स्विच दबाएं और दो साल बाद लाइट जले तो उस लाइट की कोई उपयोगिता नहीं है। बटन दबाते ही लाइट ऑन होनी चाहिए तो वह लाइट सही है। मंत्र को करते ही आपको लाभ होना ही चाहिए।

यदि ऐसा है तो गुरु सही है अन्यथा गुरु फ्राड है। फिर छल है, झूठ है, वह गुरु बनने के काबिल नहीं है। मगर आवश्यकता इस बात की है कि ट्यूब लाइट सही होनी चाहिए। मैं यहां बटन दबाता रहूं और ट्यूब आपकी फ्यूज है तो मैं उसे जला नहीं सकता।

यदि आपमें आस्था है ही नहीं, न गणपति में है, न गुरु में आस्था है, न देवताओं में आस्था है तो मैं कितने ही बटन दबाऊं आपको लाभ नहीं हो सकता और लाभ नहीं हो सकता तो फिर आप कहंगे बिजली बेकार है, मैंने ट्यूब लाइट लगाई है पर जलती नहीं है तो लाइट लग ही नहीं सकती तीस साल तक बटन दबाते रहें तो भी लाइट नहीं लग सकती। आवश्यकता इस बात की है कि आप इस बात को समझें। समझें और आपको अनुकूलता प्राप्त हो।

हमारे मन में विश्वास नहीं रहा देवाताओं के प्रति, अपने आप पर भी विश्वास नहीं रहा। मेरे कहने के बावजूद भी विश्वास नहीं रहेगा। मैं कहता हूँ तुम्हें मंत्र जप करना है, तुम्हें सफलता मिलेगी तो अनमनें मन से आप मंत्र जप भले ही करेंगे परन्तु एक जो गहराई होनी चाहिए वह आप में नहीं है। ऊपर से आप मुझे गुरु गुरु भले ही कहेंगे मगर मन से जो अटैचमेंट बनना चाहिए वह नहीं बन पाता और अटैचमेंट नहीं बन पाता तो ज्योंहि अपनी तपस्या का अंश, साधना और सिद्धि देना चाहूंगा, नहीं दे पाऊंगा और आप नहीं ले पाएंगे। लेने और देने में दोनों में एक स्वरूपता होनी चाहिए। जहां मैं खड़ा हूँ वहां आपको खड़ा होना पड़ेगा, तब में दे पाऊंगा और आप ले पाएंगे फिर मंत्र जप करने से कुछ नहीं हो पाएगा, मंत्र देने से भी कुछ नहीं हो पाएगा, आवश्यकता है कि मैं दूं और आप पूरे शरीर में उसे धारण कर सके। मैं जो दूं उसे आप कानों से ही नहीं सुनें, बल्कि पूरे शरीर में मंत्र समा जाना चाहिए, मैं भोजन दूं और आप भोजन करें तो पूरा खून बनना चाहिए और पूरे शरीर में घूमना चाहिए। मैं भोजन दूँ और आप उसे पचा नहीं पाएं, उसका खून नहीं बन सकता।

इतना विश्वास करना ही पड़ेगा कि जो भोजन किया है उसका खून बनेगा ही, इतना विश्वास करना पड़ेगा कि भोजन किया है तो उसका लाभ मिलेगा ही। मंत्र की स्थिति यही है। मैं आपको मंत्र दूं तो उसके प्रति आस्था बननी चाहिए आपकी, आध्यात्म चेतना बननी चाहिए, चाहे वह एक दिन में बने या दो दिन में। मंत्र किया है तो चेतना बनेगी ही बनेगी। यह हो ही नहीं सकता कि मैं मंत्र दूं और आपको सफलता नहीं मिले। यह हो सकता है कि मैं आपको कम मिल पाऊं, हो सकता है कि एक मिनट केवल मिलूं। इससे आपके विश्वास में अन्तर नहीं आना चाहिए। जिसको मैंने एक बार शिष्य कहा वह मेरा शिष्य है ही।

सैकड़ों शिष्य मेरे पास जोधपुर आए मुझसे मिले, मैं उनसे मिला हूं उनके पास रहा हूं,उनका मेरे प्रति अटैचमेंट रहा है और मेरा भी उनके प्रति उतना ही स्नेह रहा है। मगर आवश्यकता इस बात की है कि शिष्य बुलाए और गुरु आए।

बिना बुलाए तो न गुरु आ सकता है, न गुरु का चिंतन बन सकता है, न गुरु में आस्था बन सकती है और ऐसा हो ही नहीं सकता कि आप बुलाएं और मैं नहीं आऊं और इसके बावजूद भी जीवन में तनाव है तो संसार में सभी लोगों के जीवन में तनाव है दूसरों के जीवन में लगता है कि उसमें कम तनाव है, परन्तु यदि हम उसको अंदर से कुरेंदेंगे तो पता लगेगा, उनकी जिन्दगी खोलकर देखें तो मालूम पड़ेगा कि हमसे ज्यादा परेशान हैं, दुखी हैं, संतप्त हैं।

और श्लोक में यही बताया गया है कि पीड़ा है, बाधा है, अड़चन है, कठिनाइयां है तो सबसे पहले उस रास्ते पर चलना है जहां एक दूसरे पर विश्वास बने तुम्हारे पति-पत्नी के बीच विश्वास नहीं होगा तो बीस साल आप एक छत के नीचे रहेंगे तो न आप पत्नी का लाभ उठा सकते हैं और न पत्नी आपका लाभ उठा सकती है। तनाव में जीवन कट जाएगा, पूरे बीस साल कट जाएंगे, यह नहीं कि आप मर जाएंगे मगर जो जीवन का आनंद होना चाहिए वह नहीं होगा।

आप बीस साल भी मेरे साथ रहें,तो अगर विश्वास नहीं होगा तो मैं जो मंत्र साधना दूंगा उसका लाभ आप नहीं उठा पाएंगे। दीक्षा के बाद केवल यह नहीं हैं कि मंत्र आपको दे दिया। ऐसी दीक्षा मैं आपको देना भी नहीं चाहता और उस दीक्षा से लाभ भी नहीं है। तुम्हारा पैसा भी मुझे नहीं चाहिए, नारियल हाथ में रखने से और तिलक करने से कुछ नहीं हो पाएगा। मैं चाहता हूँ कि मैं दूं और आप पूरी तरह से ग्रहण कर सकें। आपने दो पैसे खर्च किये तो आपको लाभ होना ही चाहिए यदि मैं आपको दीक्षा दूं तो उनका मंत्र आपके हदय में उतरना ही चाहिए उतरे और आप उसका लाभ उठा सकें। आप अनुभव कर सकें कि आपको एक तृप्ति मिली है सुख मिला है, मन में एक शांति मिली और आपके हदय में एक ऐसा विश्वास पैदा होना चाहिए कि मंत्र जप के बाद आपके चेहरे पर एक आभा, एक चमक ज्योत्सना होनी चाहिए और ऐसा होगा तो जो मैंने मंत्र दिया है वह भी सार्थक होगा, वह चाहे गुरु का मंत्र हो, लक्ष्मी का मंत्र हो, या गणपति का मंत्र हो। हरिद्वार में तोकई लाख लोग रहते हैं। हम जाते हैं और गंगा में स्नान करते हैं तो बहुत शांति अनुभव करते हैं कि आज गंगा जी में स्नान किया, जीवन धन्य हो गया और हरिद्वार में रहने वाले गंगा स्नान करते ही नहीं हैं। उनकी आस्था ही नहीं है हरिद्वार में। उनकी गंगा में आस्था है ही नहीं उनके लिए वह सिर्फ नदी है और हम जाते हैं तो पवित्रता अनुभव होती है। ऐसा क्यों है ? इसलिए कि हमारे मन में गंगा के प्रति अटैचमेंट है, एक भावना है, उनके मन में भावना है ही नहीं जो बहुत आसानी से प्राप्त हो जाता है उसके प्रति भावना रहती ही नहीं। यदि गुरु आसानी से मिल जाएंगे तो उनके प्रति वैसा भाव रहेगा ही नहीं।

तुम्हारे, मेरे मन में भावना है गंगा के प्रति तो शीतलता अनुभव होगी ही होगी। यह तो आत्मविश्वास की बात है आत्मचिन्तन की बात है इसलिए जब आप स्नान करते हैं तो इतनी पवित्रता अनुभव करते हैं, और मिलती है पवित्रता । सिर्फ महसूस नहीं करने, मिलती ही है पचित्रता । आत्मा का आनन्द मिलता है, जीवन की पूर्णता मिलती है, जीवन की चेतना मिलती है और जीवन में जो कुछ हम चाहते हैं वह मिल जाता है।

और जब मैं दीक्षा देता हूं आपको, तो उस दीक्षा के माध्यम से अंदर उतनी चेतना पैदा होनी चहिए, मंत्र को धारण करने की शक्ति पैदा होनी चाहिए। दीक्षा का तात्पर्य है

कि मैं आपको गणपति मंत्र दूं और धारण हो जाए, दीक्षा का अर्थ है कि केवल कान आपके मंत्र को ग्रहण नहीं करें, शरीर का प्रत्येक अंग आंख बन जाए, कान बन जाए।

एक-एक अंग आपका गणपति मंत्र को ग्रहण करें और ग्रहण करेंगे तो आपके हृदय के अंदर गणपति की भावना बनती है और उसके माध्यम से आपके पापों का नाश होता है, आपका कर्ज समाप्त होता है, आपका रास्ता बन जाता है, जो आपके शत्रु हैं, बाधाएं हैं वे आपके अनुकूल बन जाते हैं, जो आपके शरीर में रोग हैं वे समाप्त होने की क्रिया आरम्भ हो जाती है और ऐसा होता ही है, अगर मैं उससे लाभ उठा सकता हूं तो आप भी उठा सकते हैं। गुरु ने अगर मंत्र दिया है तो लाभ होगा ही उससे गुरु ने अगर उपाय किया है तो ठीक होगा ही , दीक्षा दी तो आपके पूरे शरीर ने मंत्र को ग्रहण किया। आप केवल कान से मंत्र ग्रहण करते हैं, कान से मंत्र ग्रहण करना और पूरे शरीर से मंत्र ग्रहण करने में अंतर है, ऐसा हो की एक-एक रोम कान बन जाए।

और वह कान बन जाता है दीक्षा के माध्यम से। मैं आपको दीक्षा दूं और आप उसका लाभ उठा सकें, मैं आपको दीक्षा दूं और आप पूर्णता प्राप्त कर सकें।

गुरुर्मे देह मदैव भवतांवरेम्यं ज्ञानोप दीक्षा भवतां महितं
बहन्ती रूपं वदैव भवतां परीतं श्रीयंतु।
दीक्षो वदां भवतां मयौव सिद्धिः।

इस श्लोक में एक अत्यंत तेजस्वी ऋषि विश्वामित्र ने उच्च्य कोटि की बात कही और विश्वामित्र जो ऋषि थे वे अपने जीवन में आपसे भी ज्यादा दरिद्री रहे। विश्वामित्र ने ही राम और लक्ष्मण को धनुर्विद्या की दीक्षा दी। वहीं विश्वामित्र जो अस्त्र-शस्त्र में, धनुर्विद्या में, मंत्र में, तंत्र में इतने उच्च्य कोटि के थे कि अकेले राम ने रावण और करोड़ों की उसकी सेना को समाप्त करके पूर्ण विजय प्राप्त की।

जरूर उनके मंत्रों में और तंत्र में एक ताकत थी जो विश्वामित्र ने राम को दी, इस प्रकार की अद्‌भुत शक्तियाँ प्रदान कीं, जिनके माध्यम से वे अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें। यद्यपि रघुकुल के गुरु तो वशिष्ठ थे, मगर दशरथ ने राम लक्ष्मण को स्वयं विश्वामित्र के हाथों में सौंपते हुए कहा कि आप जैसा उच्च्य कोटि का तंत्र ज्ञाता कोई नहीं है। इस प्रकार का अद्‌भुत तेजस्वी व्यक्तित्व पृथ्वी पर कोई नहीं है। इसीलिए मैं अपने दोनों पुत्रों को वशिष्ठ को नहीं सौंप करके आपको सौंप रहा हूँ। इसलिए कि ये जीवन में अद्वितीय व्यक्तित्व बन सके और उस समय भरी सभा में विश्वामित्र ने दशरथ को एक बात कही और वाल्मीकि रामायण में वाल्मीकि ने उस आँखों देखी घटना का उल्लेख किया है। तुलसी दास तो बहुत बाद में पैदा हुए, वाल्मीकि तो उसी समय थे ही क्योंकि जिस समय सीता का राम ने निष्कासन किया उस समय सीता वाल्मीकि के आश्रम में ही रही। वाल्मिकी रामायण में आता है कि दशरथ ने कहा मैं अपने दोनों पुत्रों को अद्वितीय बनाना चाहता हूँ, ऐसा बनाना चाहता हूँ कि फिर पृथ्वी पर उनके समान दूसरा हो ही नहीं, मंत्र में, तंत्र में, योग में साधना में, दर्शन में शास्त्र में, राज्य में वैभव में और सम्मान में।

तब विश्वामित्र एक ही पंक्ति में उत्तर देते हैं कि दशरथ-

भोगीव भेव भवता वरेण्यं,

दीक्षा वदेम्यं भवतां वरिथं।

मैं तुम्हारे पुत्रों को अद्वितीय बना तो दूंगा अद्वितीय का मतलब कि उनके मुकाबले पृथ्वी पर कोई हो ही नहीं, ये राजा की संतान नहीं कहलांएगे, ये भगवान राम कहलाएंगे, रघुवंश में ऐसा कोई बालक नहीं हुआ, ऐसा मैं इनको बना दूँगा। मगर ये केवल मुझे ही गुरु मानें तो इतना कि मुझे अपने आप में पूर्णता के साथ ग्रहण कर लें तो मैं अपनी समस्त सिद्धियां इन्हें दे सकता हूँ। मैं इनको सिद्धियां तभी दे सकूंगा जब यह पूर्ण रूप से मुझे गुरु स्वीकार कर सकेगा। मुझे पूर्ण रूप से स्वीकार करेगा तभी मैं इनको ज्ञान दे पाऊंगा। चौथाई मंत्र स्वीकार करेगा तो उसे चौथाई ही ज्ञान दे पाऊंगा क्योंकि...

मंत्र तीर्थे द्विज दैवे देवज्ञे च गुरौ तथा
याहशी भावना यस्य तादशी फलितं भयः।

मंत्र में, तीर्थ में, देवताओं में, ब्राह्मण में और गुरु में आपकी भावना जितनी जुड़ेगी उतना ही फल मिलेगा। गंगा के प्रति आपकी भावना जितनी ज्यादा होगी उतनी आप पवित्रता अनुभव करेंगे। गुरु के प्रति जितनी भावना होगी उतना ही आप लाभ उठा पाएंगे। यदि आप दूर से प्रणाम करेंगे और मन में कोई अटैचमेंट नही होगा तो गुरु देगा भी आशीर्वाद तो यह यों ही लौट जाएगा।

दो स्थितियां बनती है। जीवन में एक श्रद्धा होती है, एक बुद्धि होती है। आदमी दो तरीकों से जीवन व्यतीत करता है। श्रद्धा के माध्यम से और बुद्धि के माध्यम से ।

जो बुद्धि के माध्यम से प्राप्त करते हैं। वे जीवन में सुख प्राप्त नही कर सकते, आनंद प्राप्त नहीं कर सकते। वे हर समय तनाव में रहते हैं, वे समझते हैं हम बहुत चालाक हैं, बहुत होशियार हैं, हमने जीवन में इसको धोखा दे दिया, इसको मूर्ख बना दिया, इसको कुछ भी कर दिया और हम ज्यादा सफलता प्राप्त कर सकते हैं, वे नहीं कर सकते। हर क्षण उनके जीवन में तनाव होता है और जीवन में आनंद क्या होता है, वे अनुभव कर ही नहीं सकते। संभव ही नहीं है क्योंकि बुद्धि के माध्यम से केवल भ्रम पैदा होगा, संदेह पैदा होगा। बुद्धि तो कहेगी कि यह शिवलिंग है ही नहीं, पत्थर है और पत्थर के माध्यम से तुम्हें सफलता नहीं मिल सकती । बुद्धि तो यह भी कहती है कि पत्नी है तो क्या हुआ मैं शादी करके लाया हूँ। इसकी ड्यूटी है कि सेवा करे। मैं इसको रोटियों दे रहा हूं। वह पति अपनी पत्नी को सुख नहीं दे सकता।

तुम्हारी जिंदगी में आनंद तभी हो सकता है जब बुद्धि को एक तरफ करके श्रद्धा के द्वारा जुड़ोगे। देवताओं के प्रति, मंत्र के प्रति, तीर्थ के प्रति और गुरु के प्रति श्रद्धा से जुड़ोगे तब फल मिलेगा। यह आपके हाथ में है कि आप बुद्धि से जुड़ते हैं कि श्रद्धा से जुड़ते हैं। अगर मेरे प्रति श्रद्धा नही है तो कोई लाभ नहीं दे पाऊंगा आपको। यदि आपका मुझ पर प्रेम है, श्रद्धा है तो कुछ प्राप्त कर पाएंगे। विश्वास तो करना पड़ेगा। ऐसी कौन सी चीज है जीवन में कि आपने कहा और हुआ। ये तो आपके जीवन के भोग हैं और आपके जीवन में केवल तनाव है आपके जीवन में झूठ है आपके जीवन में छल हैं, आपने जीवन के इतने साल, छल और कपट मे व्यतीत किए और आप चाहते हैं कि गुरु जी सब ठीक कर दें तो ऐसा गुरु जी नहीं कर सकते। दो मिनट में भी ठीक हो सकता है यदि आप पूर्ण रूप से समर्पित हों।

आप मेरे घर में आएं तो मैं चाहू आप पर विश्वास करूं

या न करूं आप मेरे ड्राइंग रूप में बैठेंगे तो मैं नौकर को कहूंगा भई ध्यान रखना कोई चीज उठाकर न ले जाए। अनजान हैं तो मैं आपको अंदर आने ही नहीं दूंगा। आपके प्रति मेरा विश्वास ही नहीं क्योंकि आप अनजान हैं।

मगर एक पूर्ण अनजान लड़की, १६ साल की लड़की जिसने अभी जीवन देखा ही नहीं उससे हम शादी करते हैं। मै अगर करोड़पति हूं और उस लड़की को देखा नहीं जीवन में तो शादी की, चार फेरे किए और ज्योंहि घर में लाता हूं सारे घर की चाबियां उसे दे देता हूं पति अपनी तिजोरी की चाबी देता है कि यह तिजोरी की चाबी है यह ले इसमें सोना, चांदी है, रुपये हैं। इस लड़की पर एकदम से कितना विश्वास हो जाता है। यह विश्वास हो जाता है कि यह लड़की मुझे धोखा नहीं देगी। यह मुझसे जुड़ी रहेगी। यह एक अनजान व्यक्ति से किस प्रकार एकदम पांच मिनट में विश्वास कायम हो सकता है और विश्वास होगा तो फल मिल सकता है यदि आपका विश्वास गणपति पर या लक्ष्मी पर नहीं है तो आप ५ हजार साल भी लक्ष्मी की साधना करते रहें आपको कुछ नहीं मिल सकता। इसलिए विश्वास अपने आप में आवश्यक है। तो विश्वास कैसे बने। विश्वास तो करना ही पड़ेगा।

देवताओं ने आपको जन्म दिया है शरीर दिया है, भारतवर्ष में दिया है, शरीर में एक जवानी है जो कुछ दिया है कम से कम उसके प्रति तो कृतज्ञ बने। हम हर समय कोसते रहते हैं, देवताओं का और अपने आपको, तो उससे जीवन में पूर्णता नहीं मिल सकती। अगर मैं अपने जीवन में श्रद्धा के माध्यम से सब कुछ प्राप्त कर सकता हूँ तो मैं आपको भी उपदेश दे सकता हूँ। अगर मैं १६ साल हिमालय में रह सकता हूँ तो आपको भी बता सकता हूँ कि यह मंत्र सही है। मैं कोई बिना पढ़ा-लिखा मनुष्य नहीं हूँ। मैंने भी पढ़ाई, लिखाई की है। एम.ए किया है, पीएचड़ी की है युनिवर्सिटी में प्रोफेसर रहा हूँ, फिर भी पूरा जीवन हिमालय में व्यतीत किया है और तुमसे ज्यादा दुगनी उम्र लिया हूं अधिक अनुभव लिया हूं और इसीलिए तुमसे कह रहा हूं कि मंत्रों में ताकत है, क्षमता है और उनके माध्यम से, मैं एक अकिंचन ब्राह्मण अगर समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर सकता हूं तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं। मैंने अपना ही उदाहरण लिया।

यह एक बीज था छोटा सा बीज। एक बीज की कोई हिम्मत नहीं होती। इतना सा अगर बीज है हम मुट्ठी बंद करें तो मुट्ठी मैं बंद हो जाएगा। मगर वह बीज जब जमीन में गाड़ते हैं और उसे खाद-पानी देते हैं तो चार-पांच साल में विशाल पेड़ बन जाता हे बड़ का पेड़ बन जाता है और उसके नीचे ५ सौ व्यक्ति बैठ सकते हैं। उस बीज में इतनी ताकत थी कि एक पेड़ बन जाए।

मैं भी एक बीज था, जमीन में गड़ा, खाद- पानी मिला , तकलीफ आई मगर मैं अपनी क्षमता के साथ उस पथ पर जुड़ा रहा। आज मैं वह वृक्ष बना और मेरे सैकड़ों-हजारों साधु-संन्यासी शिष्य हैं पूरे भारतवर्ष में, क्योंकि मैं एक बीज से पेड़ बना तो आप भी बन सकते हैं।

मैं अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि अगर एक व्यक्ति इस रास्ते पर चलकर सफलता प्राप्त कर सकता है तो तुम भी कर सकते हो। मगर मुझे विश्वास था उस खाद पर, पानी पर, जमीन पर कि ये खाद पानी हवा मुझे पेड़ बनाएंगे। अगर मैंने संन्यासी जीवन लिया है तो उसमें पूर्ण

सफलता प्राप्त की है। मैं हिला ही नहीं, विचलित नहीं हुआ, डगमगाया नहीं।

मैं भी नौकरी में था, प्रोफेसर था, अच्छी तनख्वाह ले रहा था उस समय भी १०००० मिल जाते थे। आज से पच्चीस-तीस साल पहले दस हजार की बहुत कीमत होती थी। मगर मैंने ठोकर मारी उसको कि यह जिंदगी नहीं हो सकती, ऐसे प्रोफेसर तो पूरे भारत में कई लाख होंगे। इससे जिंदगी पार नहीं हो सकती। मुझे कुछ हट कर करना पड़ेगा या तो मिट जाऊंगा या कर जाऊंगा। यदि मैं ऐसा कर सकता हूँ तो तुम्हें सलाह देने का हक रखता हूं। यदि मैं नहीं बनता मैं यों ही बैठा रहता तो तुम्हें कहने का हक नहीं रख सकता था। मैंने इस रास्ते पर चलकर ये हक प्राप्त किया है। यदि मैं सिद्धियों के माध्यम से असंभव को संभव कर सकता हूँ तो तुम्हें सलाह दे सकता हूँ कि तुम भी कर सकते हो।

मेरा विश्वास है आपका विश्वास नहीं है, मेरी गुरु के प्रति असीम श्रद्धा है यदि गुरु मुझे कह दे कि सब छोड़ कर चले जाओ तो मैं पत्नी को मिलूंगा ही नहीं सीधा यहीं से रवाना हो जाऊंगा क्योंकि मेरी अपने गुरु में पूर्ण आस्था है।

मैंने जिस समय संन्यास लिया, उस समय शादी हुए बस ५ महीने हुए थे। पांच महीने में मैं छोड़कर चला गया पत्नी की क्या हालत हुई होगी आप कल्पना कर सकते हो। मगर मैंने कहा ऐसे तो जिंदगी नहीं चलेगी। ठोकर तो लगानी पड़ेगी। या तो उस पार जाऊंगा या कुछ प्राप्त कर लूंगा।

आज पंडित, पुरोहित और ब्राह्मण पोथी में पढ़कर उपदेश देते हैं। मैंने जो कुछ जीवन में सीखा है वह उपदेश दे रहा हूँ। मैं आँखों देखी बात कर रहा हूँ, पोथियों की देखी बात नहीं कर रहा हूँ पोथियों की देखी बात नहीं कर रहा हूँ। पोथियों में सही लिखा या गलत लिखा है वह एक अलग बात है, हो सकता है उनमें गलत भी लिखा हो, हो सकता है सही भी लिखा हो । मगर मैं देख लेना चाहता था, छानकर कि यह सब क्या है।

मैं केवल सत्य तुम्हारे सामने रखना चाहता हूँ क्योंकि तुम मेरे शिष्य हो और मैं तुम्हें शिष्यबना रहा हूँ और दीक्षा दे रहा हूँ और दीक्षा देने के बाद भी मेरा अधिकार समाप्त नहीं हो जाता कि दीक्षा दी और आप अपने घर मैं अपने घर में। तुम्हारी डयूटी है कि तुम मुझसे जुड़ोगे।

तुम्हारी शिकायत आती है कि गुरु जी मैं जोधपुर आया, पांच दिन आया, आप मुझसे मिले ही नहीं। कोई जरूरी नहीं पांच दिन में मिल जाऊं आपको ऐसा कोई ठेका नहीं ले रखा है। मैं आपको अभी भी कह रहा हूँ। ऐसा नहीं है कि आप आए और मैं दरवाजा खोल कर सब छोड़ कर तुमसे गले मिल लूं। यह जरूरी नहीं, यह जरूरी है कि आपसे पहले जो आए उससे मिलूं, मुझे भी अपने घर का काम-काज देखना पड़ेगा, घर में मेहमान आएंगे उनको भी देखना पड़ेगा।

आपके प्रति अश्रद्धा है ऐसा नहीं है, आपके प्रति प्रेम में कमी नहीं है मगर आप यह चाहें कि गुरुजी सब छोड़-छाड़ कर पांच घंटे आपकी आरती उतारते रहें यह संभव नहीं हो सकता। आप शिष्य हैं, आप शिष्य धर्म पालन करेंगे। मैं गुरु हूं तो आपके लिए मेरे दरवाजे खुले रहें २४ घंटे ऐसा नहीं, मेरे हृदय के दरवाजे हमेशा खुले हैं।

मगर आप आलोचना करने लग जाएं कि गुरुजी पांच घंटे मिलेही नहीं तो कोई जरूरी नहीं है मिलूं।

आप कहें कि गुरुजी के पास गया, पांच रुपये भेंट किये परन्तु मेरी लड़की की शादी हुई ही नहीं। अब पांच रुपये

हनुमान जी को चढ़ा दें, हनुमान जी मेरी लाटरी निकाल दें हनुमान जी नहीं निकाल सकते तुम्हारी लाटरी। यों लाटरी लगती तो ये बिरला और २५ फैक्टरी खोल लेते।

हनुमान जी इसलिए नहीं बैठे कि तुमने पांच रुपये का सिंदूर चढ़ाया और तुम्हारी पांच लाख की लाटरी निकल गई, तुम्हारी लड़की की शादी हो गई यह तुम्हारी गलतफहमी है कि हनुमानजी बैठे-बैठे यह करते रहेंगे। ऐसा संभव नहीं होता। तुम आए, तुमने गुरुजी के पांव दबाए और कहा गुरुजी मेरी लड़की की शादी नहीं हो रही है।

अब मैं तो यही कहूंगा हो जाएगी चिंता मत कर।

अब चार दिन बाद मिले कि गुरुजी आपने कहा था। अभी तक नहीं हुई।

तुम आओगे, बताओगे, मैं समस्या का समाधान करूंगा, उसका रास्ता निकालूंगा। फिर कुछ नहीं होगा तो मेरी जिम्मेवारी हैं आलोचना करना तो बहुत आसान है।

मगर इसके बाद अनुभव करना होगा कि मैंने दिया है। प्रश्न पैसे का नहीं है। तुम्हारी तरफ से मुझे प्रेम मिलना चाहिए, श्रद्धा मिलनी चाहिए अटैचमेंट मिलना चाहिए, समर्पण मिलना चाहिए और सबसे बड़ी बात आपमें धैर्य होना चाहिए। आपमें धैर्य है ही नहीं और फिर तुम आलोचना करो। आलोचना करने से जीवन में पूर्णता नहीं प्राप्त हो सकती। आलोचना तो कोई भी किसी की भी कर सकता है। मैं तुम्हारी आलोचना कर सकता हूँ कि तुम्हारी मूंछ अच्छी नहीं है, तुम्हारे बाल अच्छे नहीं हैं। बस आलोचना हो गई, ये ही आपके गुण भी हो सकते हैं परन्तु जिसने आलोचना करनी है वह आलोचना ही करेगा।

हम क्यों हनुमान जी की प्रशंसा करते हैं रामजी की स्तुति क्यों करते हैं, हमें उनसे कुछ प्राप्त करना है तो उनके प्रति झुकना पड़ेगा। गुरु के प्रति तुम्हें नमन होना पड़ेगा, समर्पित होना पड़ेगा।

इससे कुछ नहीं होगा। कि जहाँ मैं ठहरा हूँ, वहां तुम दस मिनट खड़े होकर आ जाओ और कहो मैं आधा घंटा रहा, गुरुजी मिले ही नहीं। अंदर भी लोग होंगे, उनसे भी मुझे मिलना होगा और काम भी करना होगा। मगर ऐसा नहीं है कि तुम्हें मैं भूल गया या तुमसे सम्पर्क नहीं रख पा रहा हूँ।

मैं तुम्हारी आलोचना का जवाब दे रहा हूँ और इस बात की मुझे परवाह है ही नहीं। जीवन में मैं तलवार की धार पर चला हूँ और आगे भी चलूंगा। न मैं कभी झुका हूँ। और न कभी झुक सकता हूँ। क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारे गुरुजी बिल्कुल लुंज-पुंज बेकार से, ढीले-ढाले हो और हरेक के सामने झुके। क्यों झुके ? यदि मैंने व्यर्थ में कोई काम किया है, व्यर्थ में कोई चापलूसी की है, व्यर्थ में कोई पैसा लिया है तो मैं झुकूंगा। मैं अगर तेज धार पर रहता हूँ तो तुम्हें भी यही सलाह देता हूँ कि शिष्य होकर अपनी मर्यादा में तेज धार में रहो। संसार में तुम्हारा कोई कुछ बिगाड़ ही नहीं सकता। तुम्हें डर ही नहीं किसी का।

मै तुम्हें दीक्षा देता हूँ तो इसका अर्थ यह नहीं कि तुम्हारा मेरा संबंध समाप्त हो गया। अगर तुम मेरे शिष्य हो तो तुम्हें मजबूती के साथ खड़ा होना पड़ेगा समाज में। कायरता से और आलोचना से जिंदगी नहीं जी जाती। तुम्हारा कोई कुछ बिगाड़ सकता ही नहीं है बिगाड़ेगा तो तुम्हारे साथ में खड़ा हूँ। कहीं कोई तकलीफ होगी तो मैं जिम्मेदार हूँ। आप एक बार मुझे परख करके देखें, टेस्ट तो करके देखें। आप आएं यहां मेरे पास और टेस्ट तो करें। आप मुझसे मिलिए तो सही । मैंआपसे नहीं
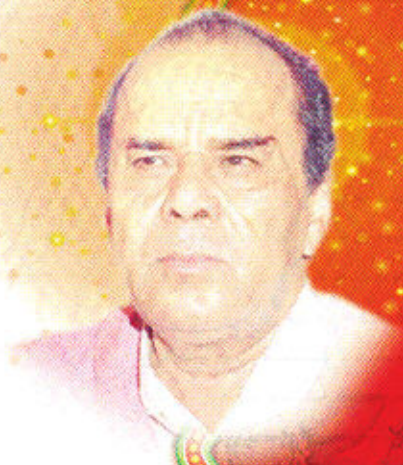
मिलूं, आपका काम नहीं करूं तो मेरी जिम्मेदारी है।

मगर तुम्हें विश्वास बनाना पड़ेगा, श्रद्धा रखनी पड़ेगी। शादी होने के बाद दस बार पत्नी से लड़ाई होगी मगर विश्वास बना रहेगा, विश्वास टूट नहीं सकता। विश्वास टूटने से काम नहीं चल सकता। इसलिए देवताओं के प्रति एक बार विश्वास पैदा करे, एक बार मंत्र जप करें और आप मंत्र करेंगे तो सफलता मिलेगी। मैंने अगर आपको मंत्र दिया लक्ष्मी का और आप घर गए और मंत्र जप किया ५ दिन और कहने लगे कि सोने की वर्षा तो हुई ही नहीं, यह मंत्र तो झुठा है, गुरुजी ने कहा था पर हुई नहीं वर्षा, गुरुजी बेकार हैं।

ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा हो सकता है परन्तु श्रद्धा चाहिए, विश्वास चाहिए, धैर्य चाहिए। विश्वामित्र इतना तेजस्वी व्यक्ति था, उसके बावजूद भी उसके घर में लक्ष्मी थी ही नहीं, दरिद्री था, तुम से ज्यादा दरिद्री,। दसके बाद भी उसने कहा कि मेरे मंत्रों में अगर ताकत है तो लक्ष्मी को अपने घर में लाकर खड़ा करूंगा ही। हर हालत में खड़ा करूंगा। ऐसा हो ही नही सकता कि मै मंत्र जप करूं और लक्ष्मी नहीं आए। एक अटूट विश्वास था। अपने आप पर विश्वास था अब पहली क्लास का व्यक्ति एम. ए की किताब नहीं पढ़ सकता । मैं अगर किताब दे दूं एम.ए की, कीट्स की, मिल्टन की या शेक्सपीयर की और तुम्हें कहूं कि पढ़ो तो तुम्हें कुछ समझ में नहीं आएगा।

पहले आप पहली क्लास पढ़ेंगे, फिर दूसरी पढ़ेंगे, फिर मैट्रिक करेंगे, बी.ए करेंगे तो फिर किताब समझ में आएगी। अब साधना में तुम पहली क्लास में हो और वह साधना एम.ए लेवल की है उसके लिए १६ साल मेहनत करनी पड़ेगी तब समझोगे।

पहली क्लास का बच्चा ए, बी, सी, डी तो पढ़ लेगा किन्तु मिल्टन की किताब तो नहीं पढ़ी जाएगी। अगर १६ साल मेहनत करने से साधना सिद्ध होती है तो एक दिन में कहाँ से हो जाएगी। तुम कहोगे लक्ष्मी ने आकर घुंघरू बजाए ही नहीं पाँच दिन हो गए लक्ष्मी आई ही नहीं, गुरुजी ने कहा कि आएगी, पता नहीं क्या हुआ ? और फिर तुम कहोगे गुरुजी झूठे और मंत्र झूठा, लक्ष्मी झूठी, तीनों झूठे हो गए और तुम सत्य हो गए। एक बार आवाज दोगे तो पत्नी भी नहीं आएगी तो लक्ष्मी कहां से आएगी। मेरे कहने का तात्पर्य है कि धैर्य चाहिए। एक बार साधना करो, नहीं सफलता मिलेगी तो दूसरी बार करो, पांच बार करो। कभी तो सफलता मिलेगी ही, क्योंकि मंत्र सही है। इस मंत्र के माध्यम से जब मैंने सफलता पाई है और शिष्यों ने सफलता पाई है तो तुम्हें भी सफलता मिलेगी ही।

पर एक विश्वास कायम रखना पड़ेगा और जीवन में इन मंत्रों से वह सब कुछ प्राप्त होता ही है जो कुछ मैं कहता हूं कि लक्ष्मी साधना के माध्यम से धन मिलेगा, कर्जा कटेगा, ऐसा होता ही है, बस तुममें धैर्य कम है। तुम चाहते हो एकदम रेडिमेड फूड, कि आया, खाया और रवाना हो गये। ऐसा नहीं है। तुम बाजार का रेडिमेड फूड खाओ और पत्नी खाना बनाकर खिलाए उसमें डिफरेंस होगा। दीक्षा का तात्पर्य है मैं तुम्हें तैयार कर रहा हूँ उस रास्ते के लिए। मैं तेजस्विता दे रहा हूँ, अब तुम साधना कर सकते हो। तुम सफलता पाओगे, धैर्य के साथ करने पर विश्वास के साथ करने पर और तुममें धैर्य है, मैं यह भी नहीं कह रहा कि तुममें धैर्य की कमी है, तुम्हारे आस-पास के लोग गड़बड़ हैं। वे तुम्हें गलत गाइड करते हैं। तुम तो सही हो पर वे कहते हैं- अरे तुम गए थे, क्या हुआ?

तुम कहोगे-लक्ष्मी का मंत्र लाया। तुम करोगे लक्ष्मी मंत्र पांच दिन और लक्ष्मी आएगी नहीं तो वो कहेंगे-ले अब क्या हुआ ? हम तो पहले ही कह रहे थे सब झूठ है और तुम्हारा माइंड खराब हो जाएगा। तुम्हारा विश्वास खत्म हो जाएगा। किसी के घर का सत्यानाश करना हो तो एक मूल मंत्र बता देता हूँ, किसी के घर जाइए और कहिए-कल भाभी जी कहां जा रही थी, चुपचाप एक गली में घुसी थीं, फिर आधे घंटे में एक घर से निकली थी। चलो जाने दो, जाने दो कुछ नहीं।

अब उस पति के माइंड में घूमता रहेगा। वह पूछेगा पत्नी से कहा गई थी और वह कहेगी,'कहीं नहीं गई थी'। बस वो कितना ही समझाए पति के दिमाग से कीड़ा लिकलेगा नहीं। वो कहीं भी जाएगी, वह पीछे-पीछे जाएगा। बस पूरा जीवन उनका तबाह हो जाएगा। बस किसी ने कह दिया इस मंत्र से क्या होगा और तुम्हारा माइंड खराब हो गया। अब चार दिन तक तुम्हारा माइंड खराब रहेगा कि मंत्र बेकार है, गुरु जी बेकार हैं। तुम खराब नहीं हो आस-पास के लोग खराब हैं क्योंकि वे न तो खुद कुछ करते हैं ओर न तुमको करने देंगे। उनका काम ही यही है आलोचना करना चाहे तुम्हारे चाचा हों या ताऊ हों या संबंधी हों। जो जिन्दगी भर कुएं में रहे वे तुम्हें मानसरोवर के आनन्द में देखना नहीं चाहते।

तुम्हारे अपने अन्दर ताकत है तो तुम सफलता पाओगे। मेरे साथ भी यही घटना घटी। मैंने संन्यास लिया तो मुझे सब ने कहा, क्यों जा रहा है, क्या फायदा ? सब ने सलाह दी-यहीं रुको क्यों दस हजार की नौकरी को ठोकर मार रहे हो, तुम्हारे जैसा मूर्ख दुनिया में नहीं होगा।

मैंने कहा कोई बात नहीं, मूर्ख हूँ, तो मूर्ख सही, हूं तो सही। या तो समुद्र में डूब कर मर जाएंगे, लेकिन कूद कर तो देखेंगे। पर पांव तुम्हारा मजबूत रहेगा तो तुम सफलता पाआगे। तुम्हारे पांव ही कमजोर हैं, तुम औरों की बातों पर विश्वास करके चलोगे तो तुम्हारी साधना बरबाद हो ही जाएगी। आप कमजोर हैं तो आप इस रास्ते पर चलिए ही मत, यह आपका रास्ता है ही नहीं, आप अपनी पैंट पहनिए और नौकरी जाइए, चुपचाप आंख नीची करके घर आइए, पत्नी थैला लेकर कहे कि सब्जी लेकर आइए, चुपचाप सब्जी लाकर घर में रखिए, पत्नी हल्ला करे तो चुपचाप रहिए और रात को सो जाइए। यह रास्ता तुम्हारा सीधा है, इसमें खतरा कम है।

और में जो रास्ता बता रहा हूँ उसमें खतरे बहुत हैं। यह बहुत तेज तलवार की धार की बात है, हिम्मत की बात है और उच्चता, श्रेष्ठता, सफलता की बात है। तुम्हारे जैसे लोग और नहीं होंगे। तुम अद्वितीय बनोगे। तुम अपना जीवन मुझे सौंपों, मैं तुम्हें अद्वितीय बना दूंगा, ऐसा पृथ्वी पर कोई नहीं होगा। विश्वामित्र ने ऐसा कहा दशरथ को , पर साथ ही यह भी कह दिया कि जरूरी है राम लक्ष्मण मुझे ही गुरु मानें, मेरा कहना मानें। तुम्हें मिलने भी नहीं आएं, न तुम मिलने आआगे और दशरथ ने कहा- मैं इन्हें मिलने नहीं आऊंगा और न कोई घर का इन्हें मिलने आएगा। ये मेरे घर वापस नहीं आएंगे जब तक आप इन्हें पूर्ण संस्कारित नहीं कर देते। मगर आप इन्हें अद्वितीय बनाएं और मैं इन्हें मिलने नहीं आऊंगा चाहे बहुत प्रिय राम हैं और बहुत प्रिय लक्ष्मण हैं।

और ऐसा ही दशरथ ने किया। मैं भी वही बात तुम्हें कह रहा हूँ कि परिवार की चिंता तुम मत करो औरों पर विश्वास मत करो, जो मैं कह रहा हूँ उस बात पर विश्वास करो जब तक

मैं तुम्हें अद्वितीय न बना दूं। और मैं तुम्हें अद्वितीय बना दूंगा यह तुम्हारे मेरे बीच वचनबद्धता हैं गारंटी के साथ बनाऊंगा यह मेरा विश्वास है।

आप कल्पना करिए राजा दशरथ के बुढ़ापे में संतान हुई और वह केवल दस साल का लड़का राम उसे जंगल में भेज दिया, जहाँ राक्षस बैठे थे, जहाँ तकलीफ थी, राजा के महलों में रहने वाला एक राजकुमार जंगल में खाक छाने और विश्वामित्र जैसे क्रोधी व्यक्ति के साथ में। दशरथ को विश्वास था कि यहां रहने पर तो केवल एक राजकुमार बनकर रह जाएगा, वहां जाएगा तो भगवान बन जाएगा।

भगवान तुम भी बन सकते हों, भगवान कोई पेट में से पैदा नहीं होते, अपने कार्यों से भगवान बनते हैं। पैदा तो सब एक से ही होते हैं चाहे आप हों या राम हों या लक्ष्मण हों या मैं हूं, चाहे कृष्ण हों। उसके बाद उन्होंने कितनी रिस्क ली है कितनी जिन्दगी में तकलीफ उठाई है, कितने खतरे उठाए हैं उससे वे भगवान बनते हैं। अद्वितीय आप भी बन सकते हैं, मगर पैसों के माध्यम से नहीं, पैसों के माध्यम से भगवान बनते तो आज बिड़ला और टाटा भगवान हैं ही। ऐसे भगवान नहीं बन सकते। भगवान बनने का रास्ता है तुम्हारी नैतिकता, तुम्हारी चैतन्यता, तुम्हारे मंत्र, तुम्हारा ज्ञान, तुम्हारी चेतना और देवताओं को अपनी साथ लेने की क्षमता। जीवन के दो हेतु हैं, दो तरीके हैं और दोनों के माध्यम से जीवन की पार किया जा सकता है। चाहे आप हों या मैं हूँ, चाहे साधु हों या संन्यासी हों।

कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो घिसी-पिटी जिन्दगी जी के पूरा जीवन व्यर्थ कर देते हैं ऐसे ९० प्रतिशत लोग हैं। उनमें हिम्मत, जोश होता ही नहीं और न चैलेंज का भाव होता है और जो चैलेंज नहीं ले सकता वह जीवन में सफल नहीं हो सकता, जीवन में सफलता न मिले या कम मिले, हो सकता है हम समाप्त हो जाएं किन्तु चैलेंज का भाव होता ही नहीं तो ये बहुत बड़े जहाज नहीं बनते, समुद्र को तैर करके पार करने की भावना नहीं होती, चैलेंज नहीं होता तो राम एक वानरों की सेना लेकर रावण पर विजय प्राप्त नहीं कर पाते। चैलेंज का भाव नहीं होता तो हनुमान जी ४०० योजना की छलांग लगाकर लंका में नहीं पहुंच पाते। चैलेंज का भाव नहीं होता जो जीवन में जितनी प्रगति होती है वह होती ही नहीं।

ऐसा ही जीवन जीना है, जैसा आप जी रहे हैं तो ऐसे जीवन में कोई नवीनता ही नहीं है। बस जी रहे हैं, पिछला साल भी आपका ऐसा ही बीता था यह साल भी ऐसा ही बीतेगा। १५-१६ साल बाद आप समाप्त हो जाएंगे और आप अपने बच्चों को कोई ऐसी प्रेरणा नहीं दे पाएंगे कि वे गर्व से कह सकें कि मेरे पिता चैलेंज के साथ जीए और पशुओं का भी जीवन ऐसा ही होता है। उनके जीवन में भी कोई चैलेंज होता ही नहीं, कोई नवीन बात होती ही नहीं। रिस्क लेने की क्षमता होती नहीं। जंगल में जाते हैं, घास खाते हैं, उन्हें खूंटे से बांध देते हैं और दूध दुह लेते हैं। वे बच्चा पैदा कर लेते हैं और आप भी बच्चा पैदा कर लेते हैं, आप भी सांस लेते हैं और एक दिन वो मर जाते हैं और आप भी मर जाते हैं। इसके अलावा नवीनता कोई नहीं होती। इस श्लोक में यही बताया गया है कि अगर आपके जीवन में चैलेंज नहीं है, ऐसा ही घिसा-पिटा जीवन है तो आप अपने बच्चों को कोई खास बात देकर नहीं जाएंगे। आप जिस भी क्षेत्र में जाएं उच्च कोटि के बनें साधक बनें तो ऐसे साधक बनें कि पूरा भारत आपको याद करे,ज्योतिष के क्षेत्र में हों तो आप आप नम्बर वन ज्योतिषी हों, जो कुछ करें उच्च हो और ऐसा होने में रिस्क बहुत है और जो खतरों से जूझ नहीं सकता वह मनुष्य

नहीं हो सकता, वह पशु है। हमारे जीवन का सारा आधार एक भोग है, एक मोक्ष है। एक रास्ता मोक्ष की ओर जाता है-ये साधु-संन्यासी, योगी तपस्या करते हैं, साधना करते हैं। अब इनमें से कितने सही साधु होते हैं, मैं नहीं कह सकता। भगवे कपड़े पहनने से कोई साधु नहीं होता, लंबी जटा बढ़ाने से कोई साधु नहीं होता। साधु तो वह होता है जिसमें आत्मबल हो, जूझने की शक्ति हो। जो देवताओं को अपनी मुट्ठी में रखने की क्षमता रखता हो।

साधयति सः साधु।

जो अपने शरीर को, मन को साध लेता है वह साधु है जो खुद ही हाथ जोड़कर के कहे-तुम मुझे दस रुपये दे दो, तुम्हारा कल्याण हो जाएगा, वह साधु नहीं हो सकता। उन लोगों में है ही नहीं आत्मबल। आत्मबल एक अलग चीज है जो लाखों लोगों की भीड़ में खड़े होकर चैलेंज ले सकता है। अगर मंत्र क्षेत्र में हो तो कह सकता है कि संसार में कोई मेरे सामने आकर खड़ा हो, मैं चुनौती स्वीकार करता है। ऐसी हिम्मत, ऐसी क्षमता ऐसी आंख में चिंगारी होनी चाहिए। उसकी बोली में क्षमता होनी चाहिए। ऐसा व्यक्ति सही अर्थों में साधु भी हो सकता है और मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है।

मोक्ष प्राप्त करना इतना आसान नहीं है और मोक्ष प्राप्त करने के लिए जंगल में जाने की जरूरत नहीं है, हिमालय में जाने की जरूरत नहीं है। जो सभी बंधनों से मुक्त हो वह मोक्ष है और आपके जीवन में कई बंधन हैं। लड़की की शादी करनी है, बीमारी से छुटकारा पाना है। घर में कलह है-ये सब बंधन हैं, उन बंधनों से मुक्त होना ही मोक्ष कहलाता हैं मोक्ष का मतलब यह नहीं कि मरने के बाद जन्म ले ही नहीं। हम तो कहते हैं, वापस जन्म लें, वापस लोगों की सेवा करें, चैलेंज स्वीकार करे और अद्वितीय बनें। हम क्यों कहें कि हम वापस जीवन नहीं चाहते, हम हजार बार जीवन में चैलेंज लेना चाहते हैं, और जीवन में सफल होना चाहते हैं। मोक्ष का अर्थ यह नहीं कि पुनर्जन्म हो ही नहीं। मोक्ष का अर्थ है हम जीवन में सारे बन्धनों से मुक्त हो जाएं और ऐसा व्यक्ति गृहस्थ में भी रहते हुए साधु हो सकता है, भगवे कपड़े पहने हुए भी गृहस्थ हो सकता है। साधु हो और उसकी आंख ठीक नहीं हो, गंदगी हो आंख में, उसमें लालच की वृत्ति हो तो वह गृहस्थ से भी गया बीता व्यक्ति है। कम से कम यह तो है कि हम गृहस्थ हैं, हमारी आंख गंदी हो सकती है, हम कुदृष्टि से देख सकते हैं। मगर वे साधु है, अगर वे ऐसे लालची होंगे तो साधुत्व ही समाप्त हो जाएगा । इसीलिए साधुओं के प्रति हमारे जीवन में आस्था कम हो गई है। इसीलिए उनके प्रति सम्मान कम हो गया है।

तो एक रास्ता है मोक्ष का और दूसरा रास्ता है भोग का। भोग का मतलब है कि हम गृहस्थ बने, हमारी पत्नी हो, पुत्र हों, बंधु हों, बांधव हों, यश हो, सम्मान हो, पद हो प्रतिष्ठा हो, और हम अपने आप मेंअद्वितीय बनें। यदि ऐसा नहीं कर सकते तो फिर घिसा-पिटा जीवन जीने से मतलब ही नहीं हैं।

आपके मन में कभी चेतना पैदा नहीं होती कि कुछ अद्वितीय करूं। इसलिए पैदा नहीं होती कि आपके जीवन में उत्साह समाप्त हो गया है, तुम्हारे जीवन में कोई गुरु रहा नही जो तुम्हें कह सके कि यह सब गलत है। जीवन जीने के लिए तो एक चुनौती का भाव होना चाहिए। एक आकाश में उड़ने क्षमता होनी चाहिए। एक तोता है, पिंजरे में बंद है। चांदी

की श्लाकाएं बनी हुई हैं और बड़ा सुखी है, उसकी तकलीफ है ही नहीं, खतरा है ही नहीं। उसको अनार के दाने खाने को दे रहा है मालिक, बोल मिट्ठू राम-राम, वह कहता है राम-राम। उसको बाहर निकालते हैं, नहलाते हैं, पंख पोंछते हैं और वापस पिंजरे में बंद कर देते हैं और एक तोता है जो पचास-साठ किलोमीटर उड़ता है, उसे अनार के दाने खाने को नही मिलते, उसके पैरों में घुंघरू नही बंधे, मगर वह जो उसे आजादी है, वह उस तोते को नहीं मिल सकती जो चांदी के पिंजरे में बंद है। वह आनन्द उस पिंजरे में बंद तोते को नहीं मिल सकता और तुम भी वैसे ही पिंजरे में बंद तोते हो। तुम्हारा मां-बाप, भाई-बहन ने तुम्हें पिंजरे का एक तोता बना दिया है और उसमें आप बहुत खुश हैं। आपकों हरी मिर्च और अनार के दाने खाने को मिल रहे हैं और कभी आप उस तोते को पिंजरे से बाहर निकालिए। वह तुरन्त उस पिंजरे में वापस घुस जाएगा। वह बाहर खतरा महसूस करता है कि मर जाऊंगा। कोई बिल्ली खा जाएगी।

और तुम भी एक दो मिनट निकल कर गुरुजी के पास आते हो और फिर वापस घर में घुस जाते हो। गुरु जी ने जो कहा उसमें खतरा है। मंत्र जप सब गड़बड़ है। वापस अपने पिंजरे में घुसे-पत्नी भी खुश आप भी खुश। पत्नी को चिंता है कि कहीं चला जाएगा, गुरुजी के पीछे साधु बन जाएगा, कोई भरोसा नहीं है। पत्नी कहती है, तुम्हें क्या तकलीफ हैं। चाचा भी कहता है, मामा भी कहता है माँ भी कहती है और आप वापस उस जीवन में घुस जाते हैं जो पूरी जिन्दगी गुलामी है। तुमने कभी आकाश को नापने की हिम्मत नही की, इसलिए तुम वह आनन्द नहीं उठा सकते। उसके लिए तो तुम्हें चैलेंज उठाना पड़ेगा जीवन में। तुमने मानसरोवर में डुबकी लगाई नहीं तो तुम्हें क्या पता लगेगा कि मानसरोवर की गहराई क्या है, उसका आनन्द क्या है ? मैं ऐसा नहीं कह रहा कि तुम गृहस्थ से अलग हट जाओ। गृहस्थ में रहो मगर संन्यासी की तरह रहो। गृहस्थ में रह रहे हो तो इस भाव से कि मै संसार में आया हूँ और सब अपना खेल खेल रहे हैं। मैं देख रहा हूँ और मुझे तटस्थ रहना है।

हम सिनेमा हाल में जाते हैं और फिल्म में कोई मां होती है, उसका जवान लड़का मर जाता है। वह मां जोर-जोर से रोती है और हॉल में बैठी औरतें भी रोने लग जाती हैं। पूरा हाल सिसकारियों से भर जाता है। अब उन्हें याद ही नहीं कि पांच रुपये का टिकट लेकर आए हैं और यह नाटक चल रहा है।

वह तो केवल ३ घंटे का खेल है और तुम्हारा जीवन भी केवल ६० साल का खेल है। कोई नाच रहा है, कोई खेल रहा है, कोई हंस रहा है, कोई रो रहा है। पत्नी चीख रही है, चिल्ला रही है। वह केवल नाटक है, अगर तुम केवल दर्शक रूप में बैठोगे तो तुम्हें दुःख नहीं होगा। तुम खुद फंस जाओगे उसमें तो तुम्हें तृष्णाएं आएंगी। तुम्हें दुख होगा और चिन्ताएं होगी।

मेरे गृहस्थ शिष्य हैं तो मुझे उन्हें बताना ही होगा कि कैसे जीवन व्यतीत करना है। मैं उन्हें संन्यासी नहीं बना सकता। संन्यासी बनने के लिए और साधना करने के लिए कोई हिमालय में जाने की जरूरत नहीं है। हम गृहस्थ में रहते हुए भी उन साधनाओं को कर सकते है और भाग्य का अर्थ है- धन, ऐश्वर्य, पूर्णता और उसका आधार है लक्ष्मी। बिना लक्ष्मी के गृहस्थ नहीं चल सकता। यदि तुम्हारे घर में आटा नहीं है तो तुम ध्यान लगाकर नहीं बैठ सकते। उसके लिए भी जरूरी है तुम पहले ऐश्वर्यवान बनो। इतना धन हो कि तुम्हें याचना करने की जरूरत न पड़े। इतना धन हो

कि सारी समस्याओं से मोक्ष प्राप्त कर लें। जब ऐसी स्थिति बनेगी तो तुम ध्यान भी कर सकोगे, साधना भी कर सकोगे। मगर लक्ष्मी पहला आधार है और उसके बिना आपके जीवन में पूर्णता आ ही नहीं सकती।

और जीवन में अद्वितीय बनने के लिए केवल छः महीने बहुत हैं। पचास साल जरूरी नहीं है। अगर छः महीने पूरी क्षमता के साथ साधना करें। तो हम पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं, सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अपने जीवन मेंदेवताओं को देख सकते हैं, परन्तु उसके लिए एक चैलेंज, एक क्षमता आपमें आनी चाहिए। प्रत्येक गांव में गुरु पहुंचे यह चैलेंज उठाना चाहिए जिससे आप लाभ उठा सके औरों को भी लाभ हो सके।

आपके मन में लोगों ने एक भय पैदा कर दिया है कि साधना करोगे तो बरबाद हो जाओगे, साधु बन जाओगे, साधना में सफलता मिलेगी नहीं और तुम्हारे मन में जो भय है तो पाँच सौ गुरु भी आएं तो वे इस भय को नहीं मिटा सकते। किसी पत्रकार ने मुझसे पूछा कि क्या पूर्व जन्म होता ? मैंने कहा-होता है, आपका पिछला जीवन मुझे याद है, बिना पिछले जन्म के संबंध के आप मुझे मिल ही नहीं सकते थें। यह संभव ही नहीं था। पिछले जीवन के संबंध ही इस जीवन में बनते हैं। मैं पिछले जीवन में भी आपका गुरु था और इसीलिए कहता हूँ कि साधना का रास्ता ही आपका रास्ता है और चैलेंज के साथ साधना करोगे तो लक्ष्मी तो एक मामूली बात है सम्पूर्ण देवता आपके सामने खड़े हो सकते हैं। जब राम और कृष्ण और बुद्ध के सामने खड़े हो सकते हैं तो आपके सामने भी खड़े हो सकते हैं।

शंकराचार्य ने कहा-अहं ब्रह्मास्मि।

मैं खुद ब्रह्म हूँ।

और मैं कहता हूँ तुम खुद ब्रह्म हो । मगर तब, जब तुम्हें अपना पूरा ज्ञान हो। अगर हम जीवन में चैंलेंज लेकर आगे बढ़ते हैं तो निश्चय ही हम सफलता प्राप्त करते हैं और सैकड़ों उदाहरण मेरे सामने हैं कि उन शिष्यों ने एक चैलेंज लिया और वे सफल हुए। मेरे हृदय में तो हजारों नाम हैं जिन्होंने धारणा को लेकर कार्य किया और सफलता प्राप्त की । आप किस प्रकार का जीवन जीना चाहते हैं वह तो आप पर निर्भर है। मैं तो आपको सिर्फ समझा सकता हूँ मैं आपको एहसास करा सकता हूँ कि जीवन का आनन्द क्या है? और साधना द्वारा हम उस स्थान पर पहुंच सकते हैं जहां विरह होता ही नहीं। हम आँख बंद कर चिंतन करते हैं तो गुरू आँखों के सामने साक्षात् हो जाते हैं। साधना के माध्यम से संतोष प्राप्त किया जा सकता है, साधना के माध्यम से हम प्रभु के चरणों में पहुंच सकते हैं। आपके जीवन में ऐसा आनन्द हो, ऐसा संतोष हो, आपके जीवन में पूर्णता हो, आप भी ध्यान लगाने की प्रक्रिया में संलग्न हो सके, अपने इष्ट के दर्शन कर सकें और अपने आपको पूर्णरुपेण गुरू चरणों में समर्पित करते हुए उस ज्ञान को प्राप्त कर सकें जो हमारे पूर्वजों की धरोहर थी ऐसा ही मैं आप सबको हृदय से आशीर्वाद देता हूँ।

-पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी)

महालक्ष्मी यंत्र एवं कमलगट्टा माला

स्थापन विधि

किसी भी बुधवार को यह यंत्र पीला वस्त्र बिछाकर उस पर चावल की ढेरी बनायें फिर उस पर यंत्र स्थापित करें, कुंकुम, फूल, धूप, दीप से पूजन करें, फिर कमलगट्टा माला से 1 माला निम्न मंत्र का जप करें। ऐसा लगातार तीन दिन करें फिर पूजन स्थान में स्थापित कर दें एवं चावल अपने घर में रखे चावलों में मिला दें। तीन दिनों के बाद माला को जल में प्रवाहित कर दें।

मंत्र

ॐ श्रीं श्रीं महालक्ष्मीं आगच्छ आगच्छ धनं देहि देहि ॐ

जीवन में सौभाग्य जाग्रत करने का निश्चित उपाय, घर एवं व्यापार स्थल पर स्थापित करने योग्य सभी प्रकार से उन्नति में सहायक लक्ष्मी का स्थापित्व करने हेतु ...

दीपावली के स्थिर लग्न में महालक्ष्मी के विशेष मंत्रों से पूज्य गुरुदेव व्दारा मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठित, प्रामाणिक महालक्ष्मी यंत्र जो आपका पूर्ण रूप से भाग्योदय करने में सक्षम है . . .

जब हमारा भाग्य जाग्रत होता है तभी गुरु कृपा से ऐसा यंत्र हमारे घर में स्थापित हो पाता है। आज गुरुदेव ने कृपा करके यह यंत्र हमें उपहार स्वरूप प्रदान किया है जो साधक के घर को धन धान्य समृद्धि से परिपूर्ण कर देता है जीवन के अभावों को मिटा कर उन्नति की तरफ अग्रसर कर देता है। घर में अवश्य स्थापित करें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

या किसी भी बुधवार

सौभाग्य लक्ष्मी प्रयोग

बहुत प्रयास करने के बाद भी यदि घर में आई हुई लक्ष्मी स्थिर न रहती हो,

यदि कमाई से अधिक खर्च बढ़ता जाए तो इस स्थिति में इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए

क्योंकि कई बार ऐसी दैवी आपदाआती है कि उन बाधाओं को समाप्त करना आवश्यक होता है, तभी सुख और शांति की स्थिति बनती है, पारिवारिक सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होती है

इसलिए श्रीपंचमी 8.12.21 को यह प्रयोग को सम्पन्न करें

बुधवार प्रातः 7.30 बजे के बाद स्नानादि से शुद्ध होकर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं। धूप, दीप जला लें। उसके बाद सामने चौकी पर एक चावल की ढेरी बनाकर एक सौभाग्य लक्ष्मी यंत्र को स्थापित करें। इसके बाद चार कमल बीज को उसके दाएं-बाएं स्थापित करे कुंकुम, अक्षत और धूप, दीप से इनका पूजन करें फिर लक्ष्मी माला के सुमेरू पर कुंकुम से पूजन करके अपने मस्तक पर उस कुंकुम को लगाएं। उस माला को घेरी बनाकर (गोल करके) यंत्र के सामने रख दें। और आँख बंद करके श्रीं बीज का 5 मिनट जप करें और साधना में सफलता के लिए कामना करें, उसके बाद से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप लक्ष्मी माला से करें-

।। ॐ श्रीं श्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं नमः।।

साधना समाप्ति के बाद सभी सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें। मंत्र जप में प्रयुक्त माला को रख लें, प्रतिदिन एक माला मंत्र जप 40 दिन तक करते रहें फिर माला को भी जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री-450/-

भगवान् बुद्ध ने कहा था
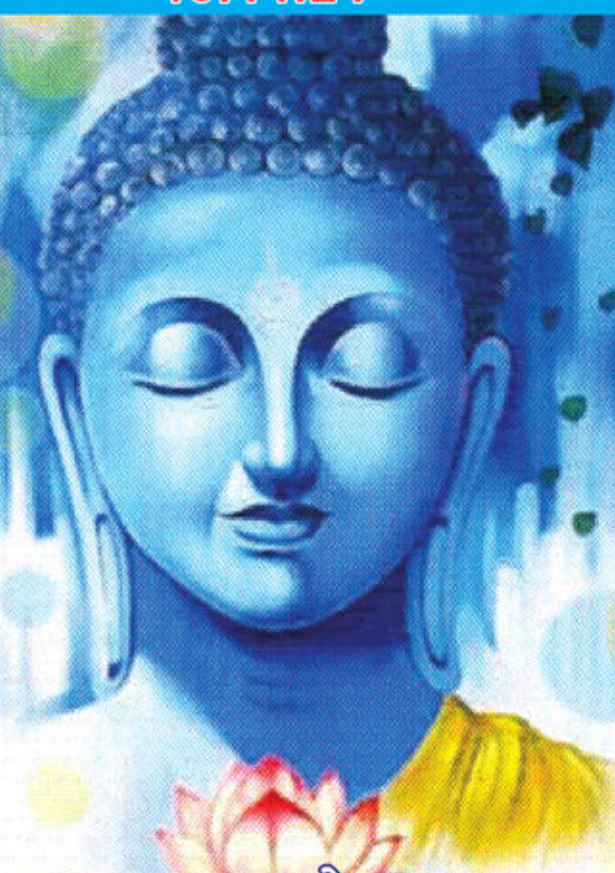
'अप्प दीपो भवः'

अर्थात् स्वयं अपने ही दीपक को जलाओ। इस हृदय के दीपक को, ज्ञान के दीपक को जलाना ही जीवन की दीपावली है, इस अंत:दीपक को सद्गुरु ही प्रज्वलित कर सकते हैं गुरु साधना के इस नवीन पक्ष द्वारा जिसे योगियों और संन्यासियों की भाषा में

आत्मदीप प्रज्वलन

साधना

मनुष्य शब्द मन से बना है, मन को धारण करने वाला अर्थात् मनुष्य

परन्तु प्रत्येक मनुष्य में दो मनुष्य छिपे होते हैं –

एक मनुष्य जिसका नाम होता है, समाज में स्थान होता है, जिसकी चल-अचल सम्पत्ति होती है, भवन होता है, वाहन होता है, जिसके पुत्र-पुत्री, बंधु-बांधव होते हैं, जिसके कारोबार होते हैं, जो किसी का भाई होता है और किसी का पति होता है, और यह होता है – बाहर का मनुष्य। इस मनुष्य के साथ ही एक और मनुष्य भी जुड़ा होता है और वह होता है – अंदर का मनुष्य।

इस भीतर के आदमी को या तो वह स्वयं जानता है या फिर उसे ईश्वर जानता है। और यदि कोई तीसरा जान सकता है तो वह सद्गुरु जान सकता है, वह सद्गुरु जिसके प्राण उस भीतर के आदमी से जुड़े हों।

बाहर के मनुष्य को तो सबने खूब जाना समझा, परंतु अंदर का आदमी हमेशा उपेक्षित होता रहा। मनुष्य के मस्तिष्क को मनोवैज्ञानिकों ने दो भागों में विभक्त माना है – दाहिना भाग एवं बायां भाग, इस बाएं भाग का संबंध व्यक्ति की तर्क शक्ति, विवेचनात्मक शक्ति, चतुराई, बुद्धिमत्ता, कुटिलता, काम तृप्ति, लिप्सा, संचय, अहं भावना आदि से होता है। या दूसरे शब्दों में कहा जाए तो मस्तिष्क का बायां भाग व्यक्ति के भौतिक पक्ष से संबंधित होता है। जो दायां भाग होता है, वह हृदय पक्ष, भाव पक्ष या अध्यात्म पक्ष होता है, उसका संबंध होता है भावना से, प्रेम से, करुणा से, सौन्दर्य से, शांति से, संगीत से, आनन्द से, भक्ति से, वैराग्य से, विसर्जन से, ईश्वरानुराग से। जब दोनों पक्षों में असंतुलन हो जाता है, तब कष्ट, तनाव और व्याधियां व्याप्त होती हैं।

हुआ यह कि हम दीपावली तो मनाते आए, बाहरी आदमी को तो पुष्ट करते रहे, भौतिक जीवन की उन्नति के लिए हर प्रकार की चेष्टा तो करते रहे – चाहे वह साधनाओं द्वारा हो या लौकिक प्रयास हों, और इन प्रयासों में सफल भी होते रहे, जीवन चलता रहा परंतु फिर भी जिस सुख की, जिस तृप्ति की मनुष्य खोज कर रहा था वह उसे मिल नहीं सका। मिल इसलिए नहीं सका क्योंकि बाहर का मनुष्य बहुत अधिक बलशाली हो गया और अंदर का मनुष्य बिल्कुल क्षीण हो गया। बाहर से उसको समाज में स्थान तो मिला, धन तो मिला, सुख-ऐश्वर्य के साधन तो मिले, सम्मान तो मिला परंतु ये सब क्षणिक ही रहे, इन सबसे भी वह आनन्दित न हो सका। कारण यही था, कि अंदर के आदमी की उपेक्षा। अन्दर के आदमी का बाहर के आदमी से सामंजस्य जो नहीं रह गया था। संन्यासियों का फक्कड़पन, उनकी मस्ती के पीछे उनके अंदर के मनुष्य का विकास ही छिपा होता है, कुछ न होते हुए भी वे पूरी धरती को अपना ही साम्राज्य मानते हैं।

परंतु इस भीतर के आदमी की उपेक्षा क्यों होती आई है, अन्दर प्रवेश करने से व्यक्ति क्यों डरता है?

जब बालक छोटा होता है, तो अंधेरे से उसे भय लगता है, अंधेरे कमरे में जाने की कल्पना भी उसे भयभीत करती है, अंधकार से भय होना मनुष्य की मूल प्रकृति में निहित है, वह अंधकार में रहना पसंद नहीं करता। सामान्य तौर पर मनुष्य के भीतर भी अंधकार ही होता है और अंधकार होता है अज्ञान का, यह अंधकार होता है संशय का, अविश्वास का, यह अंधकार होता है क्रोध का, काम का, अहं का। और जब अंदर अंधकार ही होता है, तो व्यक्ति अपनी मूल प्रकृति के कारण भीतर झांकने से घबराता है, वह भीतर की अपेक्षा बाहर ही देखना पसंद करता है। अंदर के मनुष्य का दम उसी अंधकार में घुटता रहता है।

अंदर कुछ भी दिखाई नहीं देता।

और प्रयास करने पर यदि व्यक्ति को कुछ दिखाई भी दे जाता है, तो वह होता है मात्र बाहर का ही प्रतिबिम्ब, वही समस्याएं, उन्हीं मित्रों-शत्रुओं, रिश्तेदारों, परिचितों के बिम्ब और उनसे जुड़े क्षण! वही दृश्य पुनः पुनः उभर कर

जब तक अंदर का अंधकार समाप्त नहीं होगा, तब तक व्यक्ति कितना भी प्रयास कर ले, खोज ले उसे शांति प्राप्त नहीं हो सकती, आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता।
बाहर कितना भी प्रकाश हो, आकर्षण हो, सुख-सुविधाओं के साधन हों पर वही चिराग तले अंधेरा वाली बात।

अंदर भी आ जाते हैं, और वही समस्याएं अंदर झांकने पर भी उसे सामने खड़ी मिलती हैं। उसकी वही इच्छाएं और वासनाएं अंदर भी रूप धारण कर उसे दिखाई देती हैं और व्यक्ति घबराकर आँख खोल देता है। भीतर से अच्छा तो उसे बाहर ही लगता है, क्योंकि अंदर सच्चाई ही दिखती है, और उस सच्चाई में छिपा होता है, उसका असंतोष, उसकी विवशता, उसकी पीड़ा।

अंदर झांकने पर जहां उसे शांति की आशा थी, परन्तु मिल जाता है, उसे वही सब कुछ जिससे भाग कर वह अंत:मुख होने का प्रयास कर रहा था। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि भीतर निर्मल प्रकाश नहीं है, चन्द्रमा की धवल किरणों के समान कोई शांतिदायक प्रकाश नहीं है, परन्तु यह प्रकाश हो सकता है, और यह प्रकाश गुरु साधना के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। नियमित रूप से गुरु मंत्र जप जहां प्राथमिक रूप से आवश्यक और नियमित रूप से गुरु साधना मानी गई है, जो कि प्रत्येक शिष्य और साधक के लिए अनिवार्य है, वहीं गुरु साधनाओं के विशेष आयामों को सम्पन्न करना भी साधक के लिए विशेष रूप से कल्याणकारी होता है। आत्म दीप प्रज्वलन साधना गुरु साधना का ही एक प्रकार है।

व्यक्ति बाहर के अंधकार से उतना भयभीत नहीं होता, जितना कि वह इस भीतर के अंधकार से होता है। तभी तो वह अकेले रहना नहीं चाहता, अकेला होता है तो घबड़ाने लगता है, क्योंकि तब उसका सामना उसके भीतर के मनुष्य से होता है, जो अंधकार में घुट रहा होता है। वह अपने ही अंधकार से घबड़ा जाता है परन्तु ऋषि तो कह रहे हैं, कि मनुष्य के भीतर ही सहस्र कोटि सूर्यों का प्रकाश विद्यमान है, जिसके प्रकाश से आलोकित होकर व्यक्ति आत्मलीन हो जाता है, उसके ज्ञान नेत्र खुल जाते हैं, परन्तु यदि भीतर इतने अधिक दिव्य प्रकाश की संभावना है, तो उसे कैसे प्राप्त किया जाए?

जब तक अंदर का अंधकार समाप्त नहीं होगा, तब तक व्यक्ति कितना भी प्रयास कर ले, खोज ले उसे शांति प्राप्त नहीं हो सकती, आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। बाहर कितना भी प्रकाश हो, आकर्षण हो, सुख-सुविधाओं के साधन हों पर वही चिराग तले अंधेरा वाली बात। चिराग के चारों ओर प्रकाश होता है परंतु उसके आधार में, ठीक नीचे ही अंधकार होता है, वह अंधकार तो तभी समाप्त हो सकता है, जब अंदर का दीपक प्रज्वलित हो जाए। जब व्यक्ति के अंदर ही दीपक जल उठेगा, तो अंदर तो प्रकाश होगा ही बाहर भी उसका प्रकाश पहुंचेगा। इस दीपक को सद्गुरु ही जला सकते हैं शिष्य को इस साधना के माध्यम से प्रकाशवान बनाकर।

आत्म दीप प्रज्वलन साधना इसी साधना का नाम है, जिसमें सद्गुरु स्वयं एक विशाल दीप बनकर साधक के ज्ञान नेत्रों में अवस्थित हो जाते हैं। इसी साधना से साधक के ज्ञान नेत्र खुलते है तथा उसे अपने भीतर के दिव्य प्रकाश का साक्षात्कार होता है। योगियों की भाषा में भीतर के इस अंत: तिमिर का विच्छेदन करने वाले आत्मदीप को प्रज्वलित करना ही दीपावली या दीपोत्सव कहा गया है।

कार्तिक मास की पूर्णिमा की तिथि को पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी ने अपने संन्यास जीवन में पदार्पण किया था। कार्तिक पूर्णिमा का दिवस संन्यासियों के मध्य 'संन्यास दिवस' के रूप में विशेष रूप से प्रचलित है। कार्तिक अमावस्या अर्थात् दीपावली के बाद पड़ने वाली कार्तिक पूर्णिमा ही वस्तुत: संन्यासियों के लिए दीपावली का पर्व होता है, क्योंकि इस पर्व पर अंधकार शेष नहीं रह जाता, प्रकाश ही प्रकाश होता है - और पूर्णिमा का अर्थ भी यही होता है, जहां अधंकार न हो। दीप प्रज्वलन की यह साधना अमावस्या को सम्पन्न हो भी नहीं सकती, इसे तो पूर्णिमा के दिन ही किया जा सकता है। परन्तु इसमें कोई तेल का दीपक लगाकर रखना नहीं होता है। यह तो अंदर के दीपक के प्रज्वलन का पर्व है, भीतर के ज्ञान दीपक को प्रकाशित करने का क्षण है। योगीजन तो इसी को दीपावली कहते हैं।

साधना विधान

यह 11 दिवसीय साधना है, जिसे कार्तिक मास की पूर्णिमा अर्थात् 19.11.2021 अथवा किसी भी मास की पूर्णिमा को ही प्रारंभ किया जा सकता है। यह रात्रिकालीन साधना है, तथा इसे खुले आकाश के नीचे सम्पन्न करना चाहिए अथवा ऐसे कक्ष में बैठ कर सम्पन्न करना चाहिए जहां चन्द्रमा की रोशनी आ रही हो। इससे साधना में सफलता की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

स्नान आदि कर श्वेत धोती एवं गुरु मंत्र पीताम्बर धारण कर लें। अष्टगंध या चन्दन का अपनी अनामिका से ललाट पर तिलक करें, तत्पश्चात कम्बल के आसन पर सफेद वस्त्र बिछा कर चन्द्रमा की दिशा अर्थात् पश्चिम दिशा की ओर मुख कर बैठें। सामने किसी पात्र में कुंकुम से 'गुं' बीज मंत्र का अंकन कर उस पर आत्म दीप प्रज्ज्वलन यंत्र को स्थापित करें। यंत्र के आगे धूप, अगरबत्ती तथा पांच दीपक जलाएं। ये पांच दीपक पांच ज्ञानेन्द्रियों के प्रतीक हैं, जिनके प्रकाश को प्रस्फुटित कर अज्ञान रूपी अंधकार को समाप्त करने के लिए यह साधना की जा रही है।

संकल्प

दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें -

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: श्रीमद्भगवतो नारायणस्य आज्ञया प्रवर्तमानस्य संवत्सरस्य ब्रह्मणो हि द्वितीयपरार्धे श्वेत वाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशान्तरगते अष्टाविंशति तमे कलियुगे अमुक वासरे (दिन बोलें) अमुक गोत्रीय: (गोत्र बोलें) अमुक शर्माऽहं (अपना नाम बोलें) अस्मिन् पुण्य समये गुरु कृपा प्राप्ति निमित्तं सकल मनोकामना पूर्ति निमित्तं आत्म दीप प्रज्ज्वलन प्रयोगं करिष्ये। (जल को भूमि पर छोड़ दें)

ऋष्यादिन्यास (निम्न मंत्र बोलकर निर्दिष्ट अंगों का स्पर्श करें)

ॐ गं निखिलेश्वरानन्द ऋषये नम:। (सिर)

ॐ गां अनुष्टुप् छन्दसे नम:। (मुख)

ॐ गुं सच्चिदानन्द देवतायै नम:। (हृदय)

ॐ गूं बीजाय नम:। (गुदा स्थान)

ॐ गें शक्तये नम:। (दोनों पैर)

ॐ गैं कीलकाय नम:। (नाभि)

ॐ गौं विनियोगाय नम:। (सभी अंग)

यंत्र के मध्य में गुरु गुटिका को स्थापित करें। गुरु के द्वारा ही भीतर का प्रकाश प्रस्फुटित हो सकता है। इसलिए दोनों हाथ जोड़कर गुरु ध्यान करें -

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं, द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यं।
एकं नित्यं विमल मचलं सर्वधीसाक्षिभूतं, भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरुं तं नमामि।।

गुरु गुटिका पर कुंकुम, अक्षत, पुष्प अर्पित करें। फिर निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र व गुटिका पर अक्षत चढ़ाएं -

ॐ नमस्ते गुरुदेवाय नम:। ॐ शिवात्मने नम:। ॐ त्रैलोक्य वन्द्याय नम:। ॐ दिव्य माल्य विभूषणाय नम:। ॐ दिव्य मूर्तये नम:। ॐ अजितायै नम:। ॐ घोरघोराय नम:। ॐ कामराजाय नम:। ॐ दीर्घकामाय नम:। ॐ महापुण्याय नम:। ॐ अनन्ताय नम:।

फिर तैजस माला से निम्न मंत्र 11 माला जप करें -

मंत्र - ।। ॐ ऐं यं लं रं जाग्रय जाग्रय ॐ फट् ।।

Om Ayeim Yam Lam Ram Jaagray Jaagray Om Phat

जप करते समय पांचों दीपक जलते रहने चाहिए। 11 दिन की इस साधना के बाद समस्त सामग्री को अगली पूर्णिमा तक पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें तथा नित्य, धूप, दीप दिखाते रहें। अगली पूर्णिमा पर पुन: इसी मंत्र की मात्र एक माला जप करें, फिर बाद में जब समय मिले जाकर समस्त सामग्री को किसी नदी अथवा सरोवर में विसर्जित कर दें। इस साधना द्वारा जो उपलब्धि होती है, उसी को योगीजनों की भाषा में कहते हैं - आतम घट अब हुआ प्रकासा। यह साधना आध्यात्मिक पिपासुओं के लिए कल्प वृक्ष ही है।

साधना सामग्री पैकेट - 600/-

• काल भैरव अष्टमी (27.11.21)

• या किसी भी शनिवार को

विजय प्रदाता भैरव प्रयोग

जब कार्य में निरन्तर बाधाएं आ रही हों,

साथ ही साथ शत्रु आप पर जरूरत से ज्यादा हावी हो रहे हों,

अर्थात् आप कार्य को जिस रूप से सम्पन्न करना चाहते हैं, उस रूप में सम्पन्न नहीं कर पा रहे हो, अथवा छोटी छोटी बातों पर आपके शत्रु बन जाते हों, तो उन शत्रुओं से सम्बन्धित जो बाधा, मानसिक क्लेश प्राप्त होता है,

उसके निवारण हेतु काल भैरव अष्टमी (27.11.21) की रात्रि को यह प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

यह भैरव का एक विशेष प्रयोग है,

जो कि विशेष तन्त्र ग्रन्थों में ही दिया गया है, इस हेतु आप कुछ विशेष सामग्री की व्यवस्था पहले से ही अवश्य कर लें, क्योंकि साधना में बैठने के पश्चात् उठ नहीं सकते हैं।
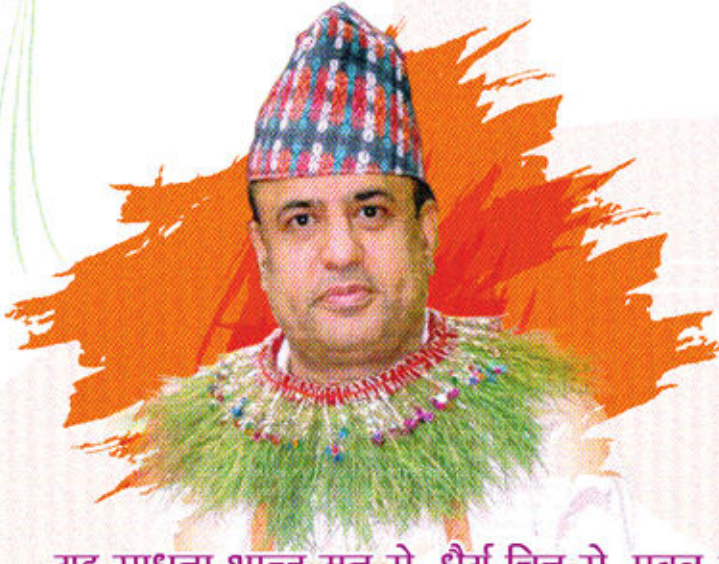
इस साधना में

'चार भैरव चक्र', 'विजय माला', आठ मिट्टी के दीपक, सिन्दूर, काजल, चावल, पुष्प, मौली, काला धागा, काला वस्त्र, धूप, दीप, अगरबत्ती, चार सुपारी, सरसों, 'अष्टगन्ध' के अतिरिक्त अन्य सामान्य पूजा सामग्री आवश्यक है।

यह साधना शान्त मन से, धैर्य चित्त से, प्रबल आत्मविश्वास के साथ सम्पन्न करनी चाहिए, देवता भी उसी साधक पर प्रसन्न होते हैं, जो कि अपने आप में पूर्ण विश्वास रखते हैं।

सर्वप्रथम स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने लकड़ी के तख्ते पर काला वस्त्र बिछा कर बीचों-बीच 'भैरव यंत्र' स्थापित करें और भैरव का आह्वान करें, इस पर सिन्दूर, चावल, पुष्प, अष्टगन्ध आदि चढ़ाये फिर चारों कोनों हेतु चार खाली दीपकों में सरसों एवं एक सुपारी रख कर दूसरे दीपक से उसको बन्द करके काले डोरा उस पर लपेट कर बांध दें एवं चारों कोनों पर स्थापित कर दें, इनके पास ही बाहर प्रत्येक मिट्टी के दीपक के पास भैरव चक्र स्थापित करें, अब सारी तैयारी हो जाने के पश्चात दीपक जलाएं, एक बार दीपक जलाने के पश्चात इस साधना में स्थान से उठना वर्जित है।

सर्वप्रथम गुरु ध्यान कर गणेश पूजा करें, इसके पश्चात् भैरव पूजा कर अपनी बाधाओं के शमन एवं नाश हेतु प्रार्थना करें, यदि भैरव का चित्र प्राप्त हो सके, तो उसे भी अवश्य स्थापित करें एवं बांया घुटना जमीन पर टिकायें तथा दांया पैर जमीन पर रखते हुए सीधे बैठें और इस वज्र मुद्रा से तथा विजय माला से नीचे दिये गये बीज मन्त्र की पांच मालाएं जप करें, इस पूरे समय में दीपक जलते रहने चाहिए।

बीज मन्त्र

।। ॐ श्रं ह्रीं क्लीं शत्रुहन्तायै भैरवाय फट् ।।

अन्तिम माला के जप के समय अपने पास एक बर्तन में सरसों ले कर प्रत्येक मन्त्र के जप के समय प्रत्येक दिशा में निरन्तर सरसों फेंकते रहें, इससे सभी दिशाओं में भैरव जाग्रत होते हैं और किसी भी दिशा में स्थित शत्रु तथा कार्य बाधा नाश होती है जैसा कि ऊपर लिखा है, यह साधना रात्रि १० बजे के बाद ही सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना के समय साधक उसी स्थान पर सो जाय, और दीपक को रात भर अवश्य जलता रहने दें, और प्रातः जल्दी उठकर चारों मिट्टी के दीपक जो कि बन्द हैं तथा उनमें सरसों है तथा भैरव चक्र किसी चौराहे पर ले जाकर रख दें, रखने के पश्चात पुनः मुड़ कर उस तरफ न देखें।

यह साधना सिद्धि हो जाने के पश्चात साधक के कार्य में बाधाएं एकदम दूर होनी प्रारम्भ हो जाती है तथा शत्रुओं की बुद्धि, बल क्षीण होने लगती है।

साधना सामग्री–510/-

मृत्यु शाश्वत है, सत्य है

तथा यह मानव जीवन क्षणभंगुर है,

यह वाक्य प्रत्येक पुराण शास्त्र में लिखा हुआ है।

यह बात प्रत्येक व्यक्ति जानता है और अनुभव करता है, लेकिन फिर भी व्यक्ति के हृदय में आकांक्षा होती है, कि वह दीर्घजीवी हो तथा उसका जीवन सुखमय, शांतिमय तथा ऐश्वर्यमय व्यतीत हो।

• क्या यह आकांक्षा निरर्थक है ? •

इसका उत्तर वे व्यक्ति नहीं दे सकते जो कायर हैं, जो अक्षम हैं और जो कर्तव्यों का निर्वाह भली प्रकार से नहीं कर सकते हैं।

शास्त्रों में उपरोक्त वाक्य उद्धृत होने के पश्चात् भी व्यक्ति के कर्तव्यों को प्रथम महत्व दिया है, उनमें यह नहीं बताया है, कि व्यक्ति अपने कर्तव्यों से च्युत होकर किसी कोने में मुंह छुपा कर बैठे। शास्त्रों में निर्लिप्तता का भाव अवश्य दिया है, लेकिन कायरता जैसी बात नहीं है, अपितु उनमें मानव के कर्तव्यों कि भली प्रकार से विवेचना है। यह व्यक्ति का दायित्व है, कि वह अपने गृहस्थ की सुरक्षा करे, वह अपने परिवार के सदस्यों की सुरक्षा करे, उनके प्रति अपने कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करे।

गीता जैसे पवित्र ग्रंथ में भी कृष्ण ने अर्जुन को कर्तव्य के पालन का ही उदाहरण दिया है -'मृत्यु तो होनी है लेकिन अगर तुम ने धनुष नहीं उठाया, तो तुम पूर्ण रूप से कायर बन जाओगे। मृतवत् जीवन व्यतीत करोगे।' यद्यपि कृष्ण किसी के दुश्मन नहीं थे, वे कौरवों तथा पाण्डवों दोनों के सम्बन्धी थे, ऐसा भी नहीं था, कि उन्होंने अर्जुन को युद्ध में मृत्यु भय दिखाया, अपितु उसकी कायरता देखकर उसे पुनः जोश, हिम्मत देकर उसके कर्तव्यों का उसे बोध कराया और इसी प्रकार ऋषियों ने जिस साधनाओं का सृजन किया उनमें मृत्यु की सत्यता को स्वीकार करते हुए कर्तव्यों के पालन को सर्वप्रथम स्थान दिया है। प्रत्येक साधना सम्पन्न कर व्यक्ति में और अधिक कर्तव्य के प्रति सजगता आती है तथा वह अधिक दृढ़तापूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वाह करता है। ऋषियों ने सिर्फ संन्यास हेतु साधनाएं एवं मंत्रों का निर्माण नहीं किया, अपितु गृहस्थ जीवन की आवश्यकताओं से सम्बन्धित साधनाओं का भी निर्माण किया है। मंत्रों में अनेक ऐसी शक्ति स्थापित की, जिसे व्यक्ति प्राप्त कर अपने समक्ष काल को भी झुका सकता है।

हमारे देवताओं ने भी साधना के माध्यम से सम्पन्नता एवं दीर्घायुष्य तथा अमरता प्राप्त की।

लेकिन आज व्यक्ति को पुनः भगवद् गीता की आवश्यकता पड़ गयी है।
उसमें एक भीरुपन आ गया है, वह अपने कर्तव्यों को विस्मृत कर बैठा है।

वह अपने परिवार को सुरक्षित तथा सम्पन्नतायुक्त बनाना चाहता है, लेकिन अपने अन्दर के भय के कारण अपनी इच्छाओं को पूर्णता प्रदान नहीं कर पाता है। वह वृक्ष पतित, एक पत्ते की भांति है, काल उसे जिस ओर बहा ले जाता है, वह उस दिशा में चल देता है, उसका अपने जीवन में कोई नियंत्रण नहीं है, कि वह जो चाहे वह करे या उसके अनुकूल ही परिस्थितियां घटित हों।

एक भरा-पूरा परिवार है, सम्पन्न है, तभी अचानक काल का चक्र घूमा और क्षण भर में उस परिवार की सम्पन्नता व आनन्द सब समाप्त हो जाता है। कब, किस क्षण काल, परिवार के किस सदस्य को ग्रस ले, कुछ निश्चित नही है, अचानक कोई सदस्य बीमार पड़ा और कुछ समय पश्चात् रोग इतना बढ़ गया, कि उसकी मृत्यु हो गई। पूरा परिवार जिस सदस्य पर निर्भर रहता है, उसका अचानक एक्सीडेंट हो जाना पूरे परिवार को व्यथित कर देता है। उसका समाप्त होना ही अकाल मृत्यु है – जब घर का सदस्य बिना किसी उपयुक्त कारण के अल्पायु में ही मृत्यु का ग्रास बन जाता है।

यह सब घटित हो जाता है और व्यक्ति असहाय देखता रहता है, वह कुछ नहीं कर पाता और स्वयं को भाग्य के भरोसे छोड़ देता है। व्यक्ति पूर्ण आनन्द, सम्पन्नता युक्त, वैभव युक्त, दीर्घायु जीवन व्यतीत करना भूल चुका है। उसके जीवन में तनाव, रोग, दरिद्रता तथा हर क्षण एक भय रहने लगा है। अतः घर के मुखिया का कर्तव्य होता है, कि वह अपने परिवार को सुरक्षा प्रदान करे।

यदि हमें प्रभु ने जीवन प्रदान किया है, तो हम उसका पूर्णतः उपयोग करें। सिर्फ जीवन को व्यतीत करना श्रेष्ठता नहीं है, अपितु श्रेष्ठता तो यह है, कि अपने परिवार के कर्तव्यों का पूर्ण रूप से निर्वाह करें। परिवार के सदस्यों की सुरक्षा, दीर्घायुष्य, सम्पन्ता आदि कर्तव्यों का भली प्रकार से निर्वाह कर सके। व्यक्ति को जीवन में यह सब पूर्णता से दिलाने में सक्षम है, विश्वामित्र प्रणीत अकाल मृत्यु निवारण तथा सम्पन्नता प्रदान करने हेतु यह अद्वितीय 'काल कीलन प्रयोग'

इस प्रयोग को सम्पन्न करने हेतु **'काल भैरवाष्टमी'** का अवसर श्रेष्ठतम बताया गया है। उन्होंने इस प्रयोग के विषय में कहा है–**'इसके समक्ष तो यमराज भी विवश खड़ा रह जाता है। दरिद्रता टिक ही नहीं सकती। सम्पन्नता को आना ही पड़ता है, समस्त आपदाओं का निराकरण होता ही है।'** यह सर्वोत्तम प्रयोग है तथा आज के युग में विशेष रूप से सिद्धिप्रद भी है।

पूरा परिवार जिस सदस्य पर निर्भर रहता है, उसका अचानक एक्सीडेंट हो जाना पूरे परिवार को व्यथित कर देता है। यदि घर का सदस्य बिना किसी उपयुक्त कारण के ही अल्पायु में ही मृत्यु का ग्रास बन जाता है, तो...

प्रयोग विधान

- इस प्रयोग हेतु आवश्यक सामग्री **'कालकीलन यंत्र'** तथा **'कालत्व माला'** है।
- यह साधना 27.11.21 काल भैरवाष्टमी के अवसर पर या फिर किसी भी शनिवार से आरम्भ की जा सकती है।
- साधक श्वेत वस्त्र धारण कर साधना सम्पन्न करें।
- श्वेत वस्त्र लकड़ी के बाजोट पर बिछाकर कुंकुम से स्वस्तिक बनायें, उस पर यंत्र को स्थापित करें।
- यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से करें।
- यंत्र के चारों ओर अपने परिवार के सदस्यों का नाम कुंकुम से लिखें।
- घी का दीपक प्रज्वलित करें।
- **कालत्व माला** से निम्न मंत्र की 101 माला जप करे–

मंत्र

।। ॐ क्लीं ह्लीं कालं कीलनाय ह्लीं क्लीं ॐ फट्।।

- मंत्र जप समाप्ति के पश्चात् रात्रि को घर के बाहर दीपक जलाकर रख दें।
- अगले दिन यंत्र तथा माला जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री-450/-

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण

19.11.21 कार्तिक पूर्णिमा

उपरोक्त खण्डग्रास चन्द्रग्रहण 19 नवम्बर 2021 दिन शुक्रवार के सायंकाल चन्द्रोदय के समय भारत के पूर्वी राज्यों, अरुणाचल प्रदेश तथा आसाम राज्य के केवल कुछ पूर्वी क्षेत्रों में ही बहुत ही कम समय के लिए दिखाई देगा। शेष भारतवर्ष में यह ग्रहण बिल्कुल भी दृश्य नहीं होगा। जहाँ यह दिखाई देगा वहां उदय होते ही कुछ मिनटों में ग्रहण समाप्त हो जायेगा।

भारतीय समय अनुसार इस ग्रस्तोदय खण्डग्रास चंद्रग्रहण का स्पर्श तथा मोक्ष इस प्रकार होगा

ग्रहण प्रारम्भ : 12.48 दोपहर

मध्य : 02.33

समाप्त : 04.17 शाम

भारत के उपरोक्त वर्णित क्षेत्र में ग्रास सिर्फ एक स्थान पर अधिक से अधिक 8 मिनट का होगा।

विकारों पर विजय

असंकल्पाज्जयेत् कामं क्रोधं कामविवर्जनात्। अर्थानर्थेक्षया लोभं भयं तत्त्वावमर्शनात्।।
आन्वीक्षिक्या शोकमोहौ दम्भं महदुपासया। योगान्तरायान् मौनेन हिंसां कायाद्यनीहया।।
कृपया भूतजं दुःखं दैवं जह्यात् समाधिना। आत्मजं योगवीर्येण निद्रां सत्त्वनिषेवया।।
रजस्तमश्च सत्त्वेन सत्त्वं चोपशमेन च। एतत् सर्वं गुरौ भक्त्या पुरुषो ह्यञ्जसा जयेत्।।

'संकल्पों के त्याग से काम पर और कामना के त्याग से क्रोध पर, जिसे लोग अर्थ कहते हैं, उसे अनर्थ समझकर लोभ पर और तत्त्व के विचार से भय पर विजय प्राप्त करे।

वेदान्त-चिन्तन-अध्यात्म विद्या से शोक एवं मोह पर, महापुरुषों की उपासना से दम्भ पर, मौन के द्वारा योग के विघ्नों पर और शरीर, प्राण आदि को चेष्टारहित करके हिंसा पर विजय प्राप्त करे।

दया के द्वारा आधिभौतिक दुःख पर, समाधि के द्वारा आधिदैविक दुःख पर, योगशक्ति से आध्यात्मिक दुःख पर एवं सात्त्विक आहार, स्थान, सङ्ग आदि के द्वारा निद्रा पर विजय प्राप्त करे।

सत्त्वगुण के द्वारा रजोगुण और तमोगुण पर तथा उपरति के द्वारा सत्त्वगुण पर विजय प्राप्त करे।

श्रीगुरु की भक्ति के द्वारा पुरुष इन सभी दोषों पर सहज ही विजय प्राप्त कर सकता है।'

आनन्द प्राप्त करना ही मनुष्य का प्रथम और अन्तिम ध्येय है, मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य भी यही है तथा प्रत्येक मानव जीवन में इसी राजपथ पर चलना चाहता है।

फिर अन्तिम लक्ष्य के रूप में आनन्द किस तरह मिल सकता है, इसके लिए यह जान लेना आवश्यक है, कि इस आनन्द का स्वरूप क्या है और बिना इसको जाने आप किस तरह इसकी प्राप्ति की कोशिश कर रहे हैं ?

जीवन सरिता का जल जब तक स्रोत बन कर बह रहा है, आनन्द की प्राप्ति की कोशिश जारी है। पर हर तरफ से बहते झरनों की प्रवाहमान गति की तरह आनन्द भी निरन्तर खिसकता जाता है।

यह मुट्ठी से बालू की तरह फिसलता जाता है, पर फिर भी जो गति प्राणमान जगत में है, वो इसकी प्राप्ति की निरन्तर कोशिशों में है।

आनन्द स्रोत की खोज

आनन्द की सत्ता और समस्तता इसी में निहित है, ठीक उसी तरह जैसे चुम्बक अपनी तरफ आकर्षित करता है। इस दौड़ का, इस कोशिश का अन्य प्राणियों पर कितना असर है, यह तो देखा ही जा सकता है। परन्तु मानव जो विश्व की सर्वोत्कृष्ट कृति है, वह भी निरन्तर इसी की प्राप्ति हेतु संघर्षरत व बैचेन हो रहा है।

यह दौड़ जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती है, पर इसका अस्तित्व व स्वरूप कितने लोग जानते हैं। इस कोशिश को आप इस रूप में भी देख सकते हैं – ''जब शिशु जन्मता है, तब हर्षोल्लास किया जाता है, उत्सव मनाया जाता है''–यह आनन्द प्राप्ति की ही पुरज़ोर कोशिश है, जो सृष्टि के शुरू से आज तक विभिन्न स्वरूप बदल कर चली आ रही है।

अब माता–पिता आनन्दित हैं भविष्य की रंगीन कल्पनाओं को लेकर, कि यह होगा, वह होगा जैसे शब्दों को लेकर और वक्त की करवट के साथ शिशु युवक या युवती में परिवर्तित होता है, फिर धनागम के स्रोत खोजे जाते हैं, ताकि भविष्य में विवाह हो और विवाह में भी यही कल्पना की जाती है, कि शायद इससे आनन्द प्राप्त हो जाए.... परन्तु आनन्द मृगतृष्णा के जल की तरह निरन्तर दूर खिसकता जाता है।

फिर जीवन के अन्तिम पड़ाव में यह सोचते हैं, कि शायद संन्यास से आनन्द का दिव्य लोक, दिव्य सुख मिल जाए।

फिर जीवन श्मशान में भी जा पहुंचता है... पर वह आनन्द जीवन में 100 वर्षों की अथक कोशिशों से भी मिल पाया क्या ? अतृप्ति को उसने अपने दिव्य रस से सिंचित किया क्या, नहीं ना !

–ऐसा इसलिये, क्योंकि कहीं न कहीं भटकन जरूर है, पहले जिसे खोजना है, जिसे प्राप्त करना है, उसे पहचान तो लो, तभी तो उसे प्राप्त कर पाओगे।

इसके लिए जब सभी व्यग्र हैं, इस चुम्बकत्व की तरफ सभी खिंचे जाते हैं, फिर इसका स्रोत आखिर क्यों नहीं मिलता ?

–कारण... कारण भी है, कि सब भूल कर रहे हैं, वे डण्डा मारकर जल को काटने के चक्कर में हैं, कि इसमें से अपना हिस्सा तोड़ लें, पर ऐसा तो हो ही नहीं सकता।

उसे तो बहते ही रहना है, उसके तो टुकड़े हो ही नहीं सकते। वह सम्पूर्ण और समग्र ही रहेगा।

उसकी समस्तता सम्पूर्णता में ही है, इसीलिये तो वह आनन्द है, जिसका तात्पर्य यही है, जहां जिसके आने पर सब कुछ प्रभावहीन हो जाये, केवल वही एक सर्वस्वता पर छा जाये।

–यही इसका स्वरूप भी है।

जब नाव, नदी और यात्री में भेद न रहे। सब एक दूसरे में खो जायें, लेकिन इसके साथ इसका स्थायित्व, इसकी दिव्यता भी है, एक बार आने पर यह खुशबू बन कर महकता रहता है। जो खुद को ही नहीं दूसरों को भी सुवासित कर देता है।

इसी प्रकार जीवन की उपयोगिता इसी में है, कि आनन्द भण्डार को प्राप्त हो जायें, ताकि उस आनन्द में खो सकें।

आज मानव के लिए आनन्द प्राप्ति का एकमात्र उपाय संचय है – कुछ जोड़ लेने की आदत, न कि खो देने की भूल, वे बड़े भ्रम में हैं, जो समझते हैं, कि आनन्द वासना में है, परन्तु यह तो विनाश मात्र है – समस्त शारीरिक व मानसिक क्षमताओं का।

आनन्द तो सचमुच संयम में है – देखिये ! आज तक जो भी संयमी हुए हैं, वो जीवनभर कितने प्रसन्न व आनन्दवदन रहे हैं।

उन्होंने जो भी संकल्प किया, वही पूर्ण हुआ–देखिये भीष्म को जिन्होंने अपने जीवन में प्रत्येक संकल्प को पूर्ण किया। पर इसमें एक बात और है, ब्रह्मचर्य एकांगी न हो, यह सम्पूर्ण हो, यानि भौतिक ब्रह्मचर्य (शरीर की धातुओं का रक्षणादि) तथा अध्यात्मिक ब्रह्मचर्य (ब्रह्मचर्य – ब्रह्म में विचरना)

जब शरीर पुष्ट होगा, जो कि समस्त साधनाओं का आधार है, तभी पुष्ट शरीर से ब्रह्म में विचरण किया जा सकेगा तथा उस परमात्मा को योग से प्राप्त किया जा सकेगा, क्योंकि परमात्मा व जीवात्मा का संयोग ही आनन्द है।

जब योग साधना से आत्मा व परमात्मा का मेल होता है, तभी आनन्द प्राप्त होता है।

इसका स्वरूप व इससे आनन्द प्राप्ति का उपाय **'कठोपनिषद'** में कितने सुन्दर शब्दों में बताया गया है, देखिये कठोपनिषद की पांचवी वल्ली का मंत्र 12 व 13–

**एकोवशी सर्वभूतान्तरात्मा,
एकं रूपं बहुधा यः करोति।
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरा,
स्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्।।**

अर्थात् 'सारे संसार को वश में करने वाला एक ही है, सब प्राणियों की अन्तरात्मा वही है। एक रूप कोअनेक बचाने वाला वही है। आत्मा के भीतर उसका वास है। वह आत्माथ है, आत्मा में बैठे हुए उस प्रभु को, ब्रह्म को जो धीर लोग देख लेते हैं, उन्हें निरन्तर सुख प्राप्त होता है, दूसरों

आनन्द सचमुच वही है, जिसके मिलने पर कोई संकल्प अधूरा न रहे

को नहीं।'

नित्योऽनित्यानां बहूनां यो विदधाति कामान।
तमात्मस्थं येऽनु पश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम।।

'नित्यो - अर्थात् एकमात्र वही नित्य है, चेतनों' में वही चेतन है, अनेकों में वही एक है, एक होता हुआ भी जो सबकी कामना पूर्ण करता है, उसका वास आत्मा के अन्दर है। उसे जो धीर पुरुष देख पाते हैं, उन्हें निरन्तर आनन्द प्राप्त होता है, दूसरों को नहीं।'

यह तो उपनिषद का वचन है, पर भौतिक जगत में भी भूतकाल और वर्तमान तक के कालों में जिन्होंने भी आध्यात्मिक और भौतिक ब्रह्मचर्य का पालन किया, वे ही आगे चलकर महामानव, महापुरुष कहलाये। इसके उदाहरण प्राचीन इतिहास रामायण, महाभारत से लेकर अब तक के इतिहास में मौजूद हैं। कुछ इतिहास के पृष्ठ और देखिये, वीरवर हनुमान, जो ब्रह्मचर्य के प्रताप से अकेले ही लंका जा पहुंचे और लंका में फूट की ऐसी आग लगाई, जिससे लंका का विनाश ही हो गया। आज के युग में भी बाल ब्रह्मचारी वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी ब्रह्मचर्य के बल से समाज और राष्ट्र का शोधन किया।

आनन्द सचमुच वही है, जिसके मिलने पर कोई संकल्प अधूरा न रहे। विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति इसके माध्यम से ही होती है, यही आनन्द की चरम सीमा है, जहाँ रास्ते की परेशानियां चूर-चूर हो जायें।

यह रास्ता इतना कठिन नहीं है, क्योंकि इस रास्ते पर चलाने और आनन्द प्राप्त कराने वह तो निरन्तर प्रयत्नशील है। जिसके सम्बन्ध में 'वेद' भगवान ने कहा है-

सुनीतिभिर्नयसि त्रायसे जनं
यस्तुभ्य दाशात्रतमहोअश्नवत।
ब्रह्मद्विषस्तपनो मन्युमीरसि बृहस्पते
महितत्ते महित्वतम।।

ऋग्वेद 2 (मण्डल) 123 (सूक्त) 14 (मंत्र)

अर्थात् 'हे परमात्मा ! आप भक्तों, मनुष्यों को ठीक रास्ते, ठीक नीति पर ले जाते हैं और उनकी रक्षा करते हैं। जो भक्त अपने आपको आपके प्रति समर्पण करता है, उस भक्त को पाप छू नहीं पाता। ब्रह्मदेवियों को भी तू अपनी मृत्यु से ठीक करता है, यह तेरी बड़ी भारी महिमा है।'

अब अगर यह दिव्य आनन्द प्राप्त करना है, तो उपाय विधि एक यही है, जो गायत्री कहती है-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्स वितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात।।

(यजुर्वेद अध्याय 36 म. 3) (ऋग्वेद मण्डल 3 सूक्त 62 मंत्र 20) (सामवेद उ. 6/310) तीनों वेदों में आये गायत्री मंत्र का यह विवरण है।

अर्थ-

ॐ	-	रक्षक, प्राणाधार
भूः	-	प्राणों के प्राण
भुवः	-	दुख विनाशक
स्वः	-	सुख स्वरूप
तत	-	उस
सवितुः	-	संसार के उत्पादक
वरेण्यम	-	वरण करने योग्य
भर्गः	-	पाप नाशक तेज को
देवस्य	-	दिव्य स्वरूप
धीमहि	-	धारण करें
धियः	-	बुद्धियों को
यो	-	जो (धारण किया हुआ तेज)
नः	-	हमारी
प्रचोदयात	-	शुभ कर्मों में प्रेरित करे।

जो इस प्रकार करता है, उसको यही बताना शेष है, कि आनन्द तो अनन्त है, इसे प्राप्त करते जाओ, कभी भण्डार खत्म न होगा और तृप्ति की प्राप्ति करो।

एक शेर कह कर बात समाप्त कर रहा हूँ, इसमें गहन भाव है-

ये माना तेरे हुस्न का जलवा,
जमीं से आसमां तक है।
मगर है देखना मुझको,
नजर मेरी कहां तक है।।

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी-देवताओं की साधना करने के साथ गुरु साधना को ही जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिए।

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं विहसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

- केवल प्रवचन सुनने या दीक्षा लेने या शिविर में भाग लेने से कोई शिष्य नहीं हो जाता। शिष्यता का अर्थ है गुरु के शब्दों को अपने हृदय पर अंकित करना तथा गुरु द्वारा दिखाए मार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ते रहना।
- शिष्य उसे कहते है जिसका अपना कोई अस्तित्व ही न हो। वह तो गुरु का ही प्रतिबिम्ब होता है तथा गुरु की ही चेतना का एक अंश होता है जो कि समाज में रहकर गुरु की दिव्यता एवं तेजस्विता का प्रसार करता है।
- हालांकि शिष्य का अपना शरीर होता है अपना निजी जीवन होता है परंतु जब उसका मन विसर्जित हो जाता है तथा केवल गुरु के भावों से ओत-प्रोत होता है इसलिए वह वास्तव में तो पूर्णतः गुरुमय ही होता है, समुद्र में समाई एक बूंद के समान।
- प्रेम ही वह डोर है जिसके द्वारा शिष्य गुरु से जुड़ा रहता है। प्रेम तो ऐसा शब्द हैं जिसके आगे भक्ति श्रद्धा समर्पण सब तुच्छ से शब्द लगते हैं क्योंकि प्रेम है तभी इन सबका प्रादुर्भाव संभव है।
- शिष्य वह है जो कि निजी स्वार्थों से ऊपर उठा होता है क्योंकि उसे पूर्ण विश्वास होता है कि सद्गुरु स्वयं उसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे।
- शिष्यता तो वास्तव में जीवन का सौन्दर्य है। एक ठूंठ से जीवन में वसंत का आगमन सा है। शिष्यता जब जन्म लेती है तो व्यक्ति का जीवन ही रूपांतरित हो जाता है तथा वह पूर्णता की ओर अग्रसर हो जाता है।

जो शिष्य अपने अहम, छल, कपट आदि को छोड़कर भौतिक श्रेष्ठताओं को भुलाकर गुरुचरणों में झुक जाता है वही सफल होता है।

गुरु वाणी

- ज्ञान पौथियों से प्राप्त नहीं हो सकता, वेद पुराण तथा शास्त्रों को पढ़ने से भी नहीं हो सकता। वह तो गुरु रूपी सागर में गोता लगाकर शिष्य उन ज्ञान के मोतियों को प्राप्त कर सकता है। और उसके लिए आवश्यक है कि शिष्य अपना सब कुछ न्यौछावर करता हुआ पूर्ण रूप से गुरु में लीन हो जाए।

- सब न्यौछावर करने का अर्थ कोई गुरु को धन, मकान, संपत्ति प्रदान करना नहीं है। न्यौछावर का अर्थ है अपने विचार, अपनी बुद्धि अपने तर्क को हटाकर के गुरु के प्रति श्रद्धावान हो जाना।

- गुरु कोई शरीर नहीं, किसी व्यक्ति का नाम नहीं। जो भीतर चेतना का पुंज है, जो ज्ञान का स्रोत है, जो दिव्यता का पुंज है वह गुरु है और उस पुंज से जुड़ने की क्रिया को शिष्यता कहा गया है, समर्पण कहा गया है।

- उस ज्ञान के पुंज तक पहुंचने का एक मात्र तरीका है समर्पण तथा दूसरा तरीका है सेवा। सेवा और समर्पण के द्वारा ही शिष्य गुरु तत्व को स्पर्श कर सकता है और उसे आत्मसात कर सकता है।

- गुरु सेवा का अर्थ कोई गुरु के पैर दबाना या उनके कपड़े धोना या लगोट धोना ही नहीं। गुरु सेवा का अर्थ है कि उस ज्ञान के पुंज को सुरक्षित रखने में गुरु का सहयोगी बनना जिस ज्ञान को प्रचारित करने के लिए गुरु ने इस पृथ्वी पर जन्म लिया है।

- गुरु सेवा से बड़ी संसार में कोई साधना नहीं। इसके आगे तो सभी मंत्र, सब साधनाएं, सब भक्ति, सब क्रियाएं व्यर्थ हैं। गुरु सेवा के द्वारा शिष्य क्षण मात्र में वह सब प्राप्त कर लेता है जो कि हजारों वर्ष क्या कई जन्मों की तपस्या के बाद भी संभव नहीं।

शनैश्चरी अमावस्या 4.12.21

कृत्या साधना

जो शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार करती है

आज मैं आपके सामने एक ऐसी साधना विधि रखना चाहता हूँ, जो अत्यन्त तीक्ष्ण, दुर्धर्ष, शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार करने वाली, ब्रह्मास्त्र से भी ज्यादा तीव्र, पूरे ब्रह्माण्ड को मुट्‌ठी में बांध कर रखने वाली और गेंद की तरह उछालने वाली अद्‌भुत तथा तेजस्वी साधना है, जिसे 'कृत्या साधना' कहते हैं।

इस साधना के बारे में सिर्फ मैं ही नहीं, अपितु सभी ऋषियों ने इस बात को स्वीकार किया है, कि इससे ज्यादा तीक्ष्ण, इससे ज्यादा प्रहार करने वाली, शत्रुओं का मान-मर्दन करने वाली, समग्र विजयदात्री और अपने व्यक्तित्व को सर्वोच्च स्थिति तक पहुंचाने वाली कोई अन्य साधना नहीं है, महाविद्या साधनाएं भी इसके सामने अत्यन्त बौनी हैं, क्योंकि कृत्या साधना के मुकाबले की कोई साधना ही नहीं है।

यह एक तीक्ष्ण साधना है, अतः इसकी साधना विधि भी थोड़ी सी कठिन है, पर कठिन का तात्पर्य यह नहीं है, कि कोई व्यक्ति इसकी साधना कर ही नहीं सके, क्योंकि यदि ऐसा होता, तो मैं इन कागजों पर इस साधना विधि को नहीं देता।

मैं चाहता हूं, कि साधक अब आगे बढ़ करके ऐसी तीक्ष्ण साधनाओं को अपनाये, जो अपने आपमें अद्वितीय हों और जिनको सम्पन्न करने पर आँखों से ऐसी ज्वाला निकले, कि सामने खड़ा शत्रु भस्म हो जाये, मुख में ऐसी वाक् शक्ति पैदा हो जाय, कि सामने वाला नतमस्तक हो जाए, व्यक्तित्व में इतना निखार आ जाय, कि सामने वाला अपने आपको बौना अनुभव करने लगे और एक ऐसी रक्षक शक्ति उसके पास हो, जो चौबीसों घण्टे, प्रतिक्षण उसकी और उसके परिवार की रक्षा कर सके।

इसलिए यह साधना अपने आपमें विलक्षण होते हुए भी अत्यन्त सरल साधना है और पूर्णतः मांत्रोक्त साधना है, कोई तंत्र विद्या नहीं है, कोई तांत्रिक साधना नहीं है। इसमें ऐसी कोई बात नहीं है, कि इससे गृहस्थ व्यक्ति पर कोई विपरीत प्रभाव पड़ सके।

कई लोग इस साधना को कठिन और भयावह समझते हैं, कि सामान्य व्यक्ति को यह साधना नहीं करनी चाहिए, परन्तु ऐसी बात नहीं है, जब आपके सामने मार्गदर्शक के रूप में चैतन्य एवं शक्ति सम्पन्न गुरु विद्यमान हैं, तो फिर भय किस बात का !

यह साधना तो कोई भी स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकता है, यद्यपि इसके नियम थोड़े से कठोर हो सकते हैं, परन्तु मनुष्य जब हिमालय पर चढ़ सकता है, समुद्र को लांघ सकता है, तो वह सब कुछ कर सकता है और यदि उसको यह दैवीय बल प्राप्त हो जाय, तो उसका मुकाबला फिर पूरा विश्व भी मिल कर नहीं कर सकता। परन्तु हिमालय पर चढ़ने के लिए अपने आप को तैयार तो करना ही पड़ता है।

यह अत्यन्त गोपनीय साधना है, मात्र गुरु मुख से, गुरु परम्परा से प्राप्त की जाती रही है। पात्रता के अभाव में गुरुओं ने इसे गुप्त रखा है, इसीलिए बहुत कम ग्रंथों में इसकी साधना विधि का उल्लेख है।

मगर पूज्य गुरुदेव को अपनेशिष्यों पर विश्वास है, गर्व है, क्योंकि वे चैतन्यता पूर्ण है, प्रज्ञा पुरुष है, अपने आपमें दुर्धर्ष है, वे जो भी आज्ञा देते हैं, उसे आप हर हालत में पूरा कर लेते हैं और पूर्णता के साथ आगे बढ़ने में सक्षम हैं।

इसीलिए मैं इस साधना को आगे के पन्नों पर रख रहा हूँ, जिससे कि आने वाली पीढ़ियाँ इस कृत्या साधना से लाभ उठा सकें, वर्तमान पीढ़ी अपने गुरु के चरणों में बैठ कर इस साधना को सिद्ध कर सके और विश्व को बता सके, कि अद्वितीयता क्या होती है, बता सके, कि कोई ऐसी शक्ति भी है, जो उसके पास प्रतिक्षण रह कर उसकी रक्षा कर सकती है, एक ऐसी भी शक्ति है, जो पूरे ब्रह्माण्ड को भेद सकती है, एक ऐसी भी शक्ति है, जो अपने आपमें किसी व्यक्तित्व को बहुत ऊँचाई पर उठा सकती है, एक ऐसी भी शक्ति है, जिसके बल पर वह ब्रह्माण्ड में **'युग पुरुष'** कहला सकता है।

इसीलिए इस साधना को कोई भी व्यक्ति, कोई भी स्त्री, कोई भी पुरुष सम्पन्न कर सकता है और करना चाहिए क्योंकि यदि जल में कूदेंगे ही नहीं, तो तैरना आयेगा ही नहीं, यदि डरे हुए रहेंगे तो जीवन में निर्भयता आ ही नहीं सकती, यदि यमराज से आँख मिलाने की ताकत नहीं आयेगी, तो मौत से हमेशा घबराते रहेंगे, यदि आपमें ताकत और क्षमता, पौरुषता और जोश, जवानी और साहस, प्राणों में स्पन्दन और चेतना नहीं आयेगी तो आप पुरुष बन ही नहीं सकते।

इसलिए हिम्मत करके इस साधना को सम्पन्न करना ही चाहिए और इसलिए करना चाहिए कि आप बता सके इस देश को और विश्व को, कि मैं क्या हूँ और आज भी हमारी साधनाएं श्रेष्ठ हैं, अद्वितीय हैं।

इन साधनाओं के माध्यम से, इस दैविक बल के माध्यम से, इस शक्ति के माध्यम से विश्व विजेता बना जा सकता है और किसी भी क्षेत्र में सर्वोच्च शिखर पर पहुँच कर अपना नाम जगमगाया जा सकता है।

आने वाले युग में आपका नाम स्वर्णाक्षरों में, सोने की कलम से लिखा जाए, आपके ललाट पर दिप्-दिप् करती हुई तेजस्विता बनी रह सके, आपकी आँखों में चमक, तेज, प्रभाव और पूर्णता छाई रह सके और आप वह सब कुछ कर सके, जो आपकी इच्छा, भावना, श्रेष्ठता और दिव्यता है और इसके लिए आपको कुछ परिश्रम तो करना ही पड़ेगा तभी तो आपका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जा सकेगा।

.....और यदि अब भी नहीं किया, तो फिर जीवन में कभी कर भी नहीं सकेंगे, इसलिए 04.12.21 (या किसी भी माह की अमावस्या को) जो कि इस साधना को करने के लिए अद्वितीय है, इस साधना को सम्पन्न करना ही चाहिए। इस साधना को सम्पन्न करने के बाद सभी प्रकार के भय स्वतः समाप्त हो जाते हैं, किसी के द्वारा किया गया कोई भी प्रयोग उस पर प्रभावी नहीं हो सकता, साधक

यह साधना अपने आपमें तेजस्विता प्रदायक साधना है और तेजस्विता को प्राप्त करने के बाद भय रहता ही नहीं, जहां तेजस्विता है, वहां भय रहता ही नहीं सकता..... क्योंकि जहां भय रहता है, वहां बड़प्पन नहीं आ सकता, वहां पूर्णता नहीं आ सकती, वहां श्रेष्ठता नहीं आ सकती, वहां दिव्यता नहीं आ सकती।

के व्यक्तित्व में विविधता तथा वैचित्रय ही इस साधना की विशेषता है।

यह साधना अपने आपमें तेजस्विता प्रदायक साधना है और तेजस्विता को प्राप्त करने के बाद भय रहता ही नहीं, जहां तेजस्विता है, वहां भय रह ही नहीं सकता, क्योंकि जहां भय रहता है, वहां बड़प्पन नहीं आ सकता, वहां पूर्णता नहीं आ सकती, वहां श्रेष्ठता नहीं आ सकती, वहां दिव्यता नहीं आ सकती।

इसलिए आप निर्भय होकर इस साधना को सम्पन्न करें, क्योंकि यह साधना आपके लिए है और पहली बार सौ वर्षों के इतिहास में हिन्दी में इतनी सरल विधि में इन कागजों में, इन पन्नों में इस कृत्या प्रयोग को लिखा जा रहा है। यह परम पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा है, कि उन्होंने मुझे इस साधना को सम्पन्न करवाया, यह उनकी असीम कृपा है, कि इस साधना को मैंने अनुभव किया और यह मेरा सौभाग्य है, कि उन्होंने मुझे आज्ञा दी, कि मैं इस साधना को लिख कर पत्रिका परिवार को दूँ और इस साधना को जन-जन तक प्रत्येक गुरुभाई तक पहुँचाऊँ। इसीलिए इस साधना को आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं-

साधनात्मक नियम

इस साधना के बारह नियम हैं, जिनका पालन करना साधक के लिए आवश्यक है-

- इस साधना को सम्पन्न करने से पूर्व **'कृत्या दीक्षा'** लेनी अत्यन्त आवश्यक है, चाहे आप इसे फोटो के माध्यम से लें या व्यक्तिगत रूप से लें, आप गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त अवश्य करें।
- इस साधना के प्रारम्भ में और अन्त में गुरु पूजन आवश्यक है। इस साधना में बाजोट पर काला वस्त्र बिछाकर उस पर जहां एक ओर **'कृत्या यंत्र'** स्थापित होगा, वहीं दूसरी तरफ **'गुरु यंत्र'** भी स्थापित होगा, जिससे कि गुरु आपके जीवन की रक्षा कर सके, साधना में सफलता दे सकें और किसी भी प्रकार का भय, डर, चिन्ता, तकलीफ, तनाव और मन में किसी प्रकार की दुविधा नहीं रहे।
- यह साधना 21 दिन की है और 21 दिन तक आप नित्य रात्रि को 11 बजे से 3 बजे के बीच इस साधना को सम्पन्न करेंगे, यही समय इसके लिए उपयुक्त है।
- इस साधना में केवल **'कृत्या माला'** का ही प्रयोग किया जाता है, अन्य किसी दूसरी माला से इस साधना को सम्पन्न नहीं किया जा सकता।
- इस साधना को सम्पन्न करते समय भूमि पर सोयें अर्थात् जहां पर आप यह साधना सम्पन्न करें, वहीं पर रात्रि को लेट जायें।
- साधना काल में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें, स्त्री गमन, स्त्री चिन्तन सर्वथा वर्जित है।
- आपके साधना कक्ष में दूसरा कोई व्यक्ति प्रवेश नहीं करे और यदि एक ही कमरा है, तो साधना स्थान के चारों तरफ पर्दा टांग कर कक्ष का रूप दे दें, जिससे कि आपकी पत्नी, आपका पुत्र या पुत्री या अन्य कोई भी उसमें प्रवेश नहीं कर सके।
- **साधना काल में किसी प्रकार का कोई भय, डर, तनाव या विषमता पैदा नहीं होती, कोई राक्षस, भूत, पिशाच या चुड़ैल आदि आपके सामने नहीं आती, जो आपको डराये या धमकाये, लेकिन इस बात का ध्यान रखे, कि जो कच्चे मन वाले हैं, जो डरपोक हैं, जो वृद्ध हैं, जिनका हृदय कमजोर है या कभी हार्ट अटैक हो चुका है, वे इस साधना को सम्पन्न नहीं करे। यह साधना एक तीक्ष्ण साधना है, अतः शरीर में तेजस्विता पैदा होने से शरीर गर्म रहता है। अतः जब आपका शरीर तथा मन स्वस्थ हो, तब आप इस साधना को सम्पन्न करें। यों तो इस संसार में कोई भी वृद्ध होता ही नहीं, यह तो शरीर की स्थिति है, जो मन में समा जाती है और धीरे-धीरे मन का यह भ्रम इतना घनीभूत हो जाता है, कि वास्तव में हमारा हृदय कमजोर हो जाता है।**
- इस साधना में 'काला आसन' बिछायें, 'काली धोती' पहनें तथा 'गुरु पीताम्बर' धारण करें। दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठें और सामने तेल का दीपक लगायें, तेल कोई भी हो सकता है।
- साधना काल में आप यात्रा सम्पन्न न करें, एक ही स्थान पर इस साधना को सम्पन्न करें।
- साधना काल में आप असत्य नहीं बोलें और यथा सम्भव अपने आप में संयत और शांत रहें। यदि साधना में कोई अनुभव हो रहा हो, तो उसे गुप्त रखें, किसी को भी बतावें नहीं, सुनायें नहीं, न ही पत्नी को, पुत्र को या किसी को भी।
- साधना काल में एक समय भोजन करें, पर उसमें भी किसी प्रकार से मासांहार का उपयोग नहीं करें, शराब-सिगरेट नहीं पियें और अपने आपमें स्वच्छ मन, स्वच्छ शरीर और पूर्ण श्रद्धा और भावना के साथ इस साधना को सम्पन्न करें।

इन नियमों का पालन आवश्यक है ही, मगर साथ ही साथ यह बात भी है, कि यदि आपमें श्रद्धा है, समर्पण है, गुरु के प्रति आदर है, सम्मान है, भावना है और साधना के प्रति चेतना है, तभी आप इस साधना को सम्पन्न करें अन्यथा यदि आप अश्रद्धावान हैं, तो आप इस साधना को सम्पन्न नहीं करें।

इस साधना को कोई भी स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकता है, मगर यह बात निश्चित है, कि इस साधना की वजह से आपके शरीर को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंच सकता, यदि आपके मन में भय है, तो यह अलग बात है, बीमार हैं, तो यह बात अलग है, डॉक्टर आपको इतनी रात्रि तक जगने की सलाह नहीं दे रहा हो, तो आपको यह साधना नहीं करनी चाहिए और यदि आपको अपने ऊपर विश्वास नहीं हो, तो भी इस साधना को सम्पन्न नहीं करना चाहिए।

यह साधना एक तीक्ष्ण साधना होते हुए भी अपने आपमें अत्यन्त सरल साधना है और यह जरूरी नहीं है, कि पहली बार में ही यह साधना सिद्ध हो जाय, आपको दूसरी, तीसरी, चौथी, आठवीं बार भी इस साधना की पुनरावृत्ति करनी पड़ सकती है, क्योंकि कृत्या जैसी अद्वितीय सिद्धि एक बार में मिल जाए, तो सौभाग्य है, यदि नहीं मिले, तो घबराने की जरूरत नहीं है, पुनः इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए।

साधना विधान

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व स्नान आदि से निवृत्त हो लें, फिर काली धोती पहन कर गुरु पीताम्बर ओढ़ें, शरीर पर कोई भी सिला वस्त्र नहीं होना चाहिए। काला आसन बिछाकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठें, सामने चौकी रखें,

उस पर काला वस्त्र बिछा लें। एक लोटे में जल भर कर सामने रखें, धूप-दीप जला लें। सामने रखे लोटे के जल में थोड़ा सा अक्षत (चावल) तथा पुष्प डालें, फिर लोटे के ऊपर दाहिना हाथ रख कर निम्न मंत्र को पढ़ें-

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीत्।।

फिर लोटे के उस जल को पंचपात्र में डालकर अपने ऊपर जल छिड़कें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

फिर बायें हाथ में जल लेकर दायें हाथ से ढक कर इस मंत्र को पढ़ें-

ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

हाथ में लिए जल को सभी दिशाओं में छिड़क दें।

दायें हाथ में जल लेकर संकल्प करें-

अमुक गोत्रोत्पन्नः (अपना गोत्र बोलें) अमुक शर्माऽहं (नाम बोलें) अस्मिन शुभ मुहूर्ते गुरुकृपा यथा मिलितोपचारैः कृत्या साधनां करिष्ये।।

जल भूमि पर छोड़ दें।

अब सामने स्थापित गुरु चित्र एवं गुरु यंत्र का पूजन करें।

दोनों हाथ जोड़ें-

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तः वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।
तस्य प्रकृतिमानस्य यः परः परमेश्वरः।।

इसके बाद यंत्र को शुद्ध जल से धोकर पोंछ लें, कुंकुम का तिलक करें व अक्षत, पुष्प चढ़ायें। पुनः मानसिक रूप से साधना में सफलता प्राप्ति के लिए गुरुदेव से प्रार्थना कर 5 माला गुरु मंत्र का जप करें।

फिर कृत्या यंत्र को किसी पात्र में लेकर स्नान करावें, फिर एक तांबे या स्टील की प्लेट लेकर उस पर कुंकुम से **'कृं'** लिख कर उसमें यंत्र को स्थापित करें, यंत्र पर तिलक करें तथा अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करें। इसके बाद कृत्या यंत्र के चारों तरफ चारों दिशाओं में तेल के चार दीपक जला कर रखें, ये चारों दीपक पूरे जप काल तक जलते रहने चाहिए।

फिर कृत्या माला से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें-

मंत्र

।। ॐ क्लीं क्लीं कृत्या सिद्धिं शत्रून् मोहय उच्चाटय मारय आज्ञां पालय पालय फट्।।

प्रतिदिन जप समाप्ति के बाद पुनः 5 माला गुरु मंत्र जप करें।

अन्तिम दिन जप समाप्ति के बाद यदि साधना पूर्ण सिद्ध होती है तो कृत्या अत्यन्त सौम्य रूप में सामने आती है और वचन देती है-'मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगी और आपका कितना भी कठिन कार्य हो, मैं उस कार्य को पूरा करूंगी।''-ऐसा वचन प्राप्त होने पर ही यह साधना सिद्ध समझी जाती है।

साधना सिद्ध होने के बाद माला और यंत्र को किसी जनशून्य स्थान में ले जाकर गाड़ दें अथवा नदी या तालाब के जल में प्रवाहित कर दें एवं अपने गुरुदेव से मिलकर आशीर्वाद प्राप्त करें।

मुझे विश्वास है, कि आपमें से प्रत्येक साधक इस साधना में भाग लेगा ही, क्योंकि यह साधना साधक को अद्वितीय बना देती है। यदि आप इसका लाभ उठायेंगे, तो यह आपका सौभाग्य होगा और मुझे विश्वास है, कि आप इसका लाभ उठायेंगे ही।

साधना सामग्री- 660

सिद्धाश्रम पंचांग

• पदमावती सिद्धि दिवस

• 10.12.21

सविधि श्री पद्मावती प्रयोग

जब कुबेर ने भगवान शिव की हजारों वर्ष तक तपस्या की और जब भगावन शिव प्रत्यक्ष प्रकट हुए तो कुबेर ने उनके सामने अपनी इच्छा प्रकट की, कि मैं जीवन में इतना अधिक धन, द्रव्य, भोग और ऐश्वर्य प्राप्त करना चाहता हूँ जितना संसार में किसी के पास न हो।

तब भगवान शिव ने कुबेर को अपना शिष्य बनाकर उसे श्री पदमावती सिद्धि प्रयोग समझाया जो कि सर्वथा रहस्यमय और गोपनीय था। इस साधना को सम्पन्न कर कुबेर देवताओं के कोषाधिपति बन सके।

'विश्व सार तंत्र के अनुसार' ऐसा प्रयोग न जीवन में बन सका है और न भविष्य में बन सकेगा, यदि सारे तंत्रों का निचोड़ निकाला जाय तो भी यह तंत्र प्रयोग सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय कहा जा सकता है।

पदमावती सिद्धि दिवस के अवसर पर मैं विश्व सार तंत्र में वर्णित उस दुर्लभ प्रयोग को पाठकों के लिये प्रस्तुत कर रहा हूँ जो कि सर्वथा गोपनीय तो रहा ही है,

पर जिसे भगवान शिव ने स्वयं कुबेर को बताया था।

वास्तव में ही पदमावती धन-धान्य, ऐश्वर्य एवं अतुल सम्पदा की देवी है,

इसीलिए शास्त्रों में पदमावती साधना को अत्यन्त श्रेष्ठतम महत्त्व दिया है।

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार प्रत्येक वर्ष मार्ग शीर्ष शुक्ल 7 तदनुसार 10.12.21 को 'पदमावती सिद्धि दिवस' है

जिस दिन प्रत्येक साधक, साधना कर अपने जीवन में पूर्णता और सफलता प्राप्त कर सकता है

तांत्रोक्त प्रयोग

इस बार पत्रिका के इन पन्नों पर मैं पदमावती के उस दुर्लभ तांत्रोक्त प्रयोग को स्पष्ट कर रहा हूँ जो कि निश्चय ही अब तक गोपनीय रहा है। तांत्रोक्त प्रयोग की यह विशेषता होती है कि उसमें मंत्र जप तो होता ही है, पर क्रिया पद्धति मुख्य रूप से महत्त्व रखती है, तंत्र में केवल मंत्र जप ही पर्याप्त नहीं होता, अपितु उसमें जिन साधनाओं और उपकरणों की आवश्यकता होती है, उनका प्रयोग भी आवश्यक माना जाता है।

यह पदमावती प्रयोग भी तांत्रोक्त पद्धति है, यदि मैं सत्य कहूँ तो वास्तव में ही इसके समान आर्थिक उन्नति प्रदान करने वाला अन्य कोई प्रयोग इस संसार में नहीं है जिस प्रयोग से दरिद्र कुबेर अतुलनीय सम्पदा के स्वामी हो सके, जिस प्रयोग से वशिष्ठ ने इतनी क्षमता प्राप्त कर ली, कि वह दशरथ जैसे प्रतापी राजा को कर्ज दे सके जिस प्रयोग से गुरु गोरखनाथ लाखों शिष्यों का नित्य भण्डारा करने में समर्थ हो सके, और जिस प्रयोग से स्वामी शंकराचार्य ने स्वर्ण वर्षा कर के बता दिया, वह प्रयोग किस प्रकार से कमजोर हो सकता है।

एक नहीं सैकड़ों तांत्रिकों ने पदमावती प्रयोग को जीवन का अद्वितीय खजाना कहा है, जिन-जिन योगियों ने, साधकों ने या व्यक्तियों ने यह साधना सम्पन्न की है, उन लोगों ने स्वीकार किया है कि यह साधना सिद्ध होते-होते आर्थिक उन्नति होने लगती है, कई गुना व्यापार बढ़ जाता है, रुके हुए पैसे प्राप्त होने लग जाते हैं, और अनायास ही भाग्योदय हो जाता है, ऐसा लगता है कि जैसे लक्ष्मी स्वयं घर में आ कर स्थापित हो गई हो।

भगवान शिव ने स्वयं पार्वती को इस प्रयोग का रहस्य बताते हुए कहा है, कि यह प्रयोग हमेशा गुप्त रखना चाहिए, इसके माध्यम से जिस प्रकार से धन का आगमन होता है। उससे व्यक्ति को भ्रमित न होकर, स्वयं के जीवन को तो सुखमय बनाना ही चाहिए, दान, पुण्य आदि करके भी समाज में यश और सम्मान प्राप्त करना चाहिए एवं अन्य दूसरों के हित के कार्य अवश्य करने चाहिए।

विश्व सार तंत्र के अनुसार

विश्व सार तंत्र में इस प्रयोग से संबंधित कुछ हिदायतें दी हैं, जिनका प्रयोग साधक को करना चाहिए, वे निम्न प्रकार से हैं

1. पदमावती प्रयोग, पदमावती दिवस के दिन अथवा किसी भी शनिवार या मंगलवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। यदि पदमावती दिवस के दिन इस प्रयोग को किया जाता है, तो एक ही दिन में प्रयोग सम्पन्न हो जाता है, पर यदि इस दिन के अलावा अन्य किसी मंगलवार या शनिवार से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जाता है तो पांच दिन तक यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।
2. यह प्रयोग घर के किसी अलग कमरे में करें, पर इस बात का ध्यान रखें कि जब तक प्रयोग सम्पन्न हो तब तक उस कमरे में अन्य कोई न जाए, अथवा यह प्रयोग एकांत स्थान में नदी के किनारे अथवा शून्य स्थान पर करें, जहाँ पर लोगों का आना-जाना नहीं के बराबर हो।
3. प्रयोग प्रारम्भ करने के एक दिन पहले घर में किसी कुंवारी कन्या जिसकी आयु ग्यारह वर्ष से बड़ी न हो, और जो अभी रजस्वला न हुई हो, उसे घर में बुला कर उसका संक्षिप्त पूजन करें, उसे भोजन करावें और यथोचित वस्त्र आदि भेंट स्वरूप दें।
4. यह प्रयोग या तो ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात् सुबह चार बजे के आस-पास से प्रारम्भ करें या रात्रि में यह प्रयोग सम्पन्न करें, जिस समय सर्वथा एकांत हो, और लोगों का शोरगुल न

हो।

5. यह प्रयोग सम्पन्न करने के बाद किसी ब्राह्मण को घर में बुला कर घी और गुड़ से बने हुए पुवे आदि का भोजन करावें अथवा मन्दिर में घी और गुड़ चढ़ा दें फिर भी इस विश्व सार तंत्र में बताया है, कि घर में ब्राह्मण को बुलाकर भोजन कराना ज्यादा श्रेष्ठ है।
6. यदि यह प्रयोग लगातार तीन दिन कर दें, तो उसे देवी पदमावती के साथ ही मां सरस्वती की कृपा भी प्राप्त होती है।
7. यदि इस प्रयोग को पूरे पांच दिन सम्पन्न किया जाय और अपने सामने गुरुदेव का चित्र स्थापित कर उन्हें साक्षात् शिव और उनकी पत्नी को साक्षात् पार्वती मान कर अभेद भाव से इस मन्त्र का जाप पांच दिन तक करें तो वह समस्त प्रकार की सम्पत्ति निश्चय ही प्राप्त करता है।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है, कि विश्व सार तंत्र के अनुसार साधक पदमावती सिद्धि दिवस को एक दिन तो प्रयोग करे ही, पर वह चाहे तो पदमावती दिवस से आगे तीन दिन या पाँच दिन तक भी प्रयोग कर सकता है।

इस प्रकार का प्रयोग करते समय, यदि साधक दिन को या रात्रि को कोई दूसरा प्रयोग भी कर रहा हो तो उसे भी सम्पन्न कर सकता है, इसमें कोई बाधा नहीं है।

8. इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर धन-धान्य की वृद्धि तो निरन्तर होती ही है, आर्थिक रूप से वह अत्यन्त समृद्ध तेजस्वी और सौभाग्यशाली भी बन जाता है, ऐसे साधक के पाप कट जाते हैं, उसका दुर्भाग्य समाप्त हो जाता है।
9. यदि पुष्य नक्षत्र में इस मंत्र को गोरोचन से लिख कर काँच में मंढ़वा कर दुकान में या घर में रख दें तो निरन्तर उन्नति होती रहती है।
10. यदि एक कागज पर पुष्य नक्षत्र के दिन यह मंत्र लिख कर उसे गेहूँ के आटे में मसल कर उसकी छोटी-छोटी गोलियाँ बना कर मछलियों को वे गोलियाँ खिला दी जाय तो वशीकरण सिद्ध हो जाता है, उसके चेहरे पर एक विशेष प्रकार की सम्मोहन शक्ति आ जाती है और वह सर्वत्र विजयी होता है।
11. यदि मंगलवार के दिन किसी कागज पर इस मन्त्र को लिख कर उसके नीचे शत्रु का नाम लिख कर जमीन में गाड़ दें या श्मशान में जा कर उस कागज को जला दें तो निश्चित रूप से शत्रु निस्तेज हो जाता है।
12. यदि पुष्य नक्षत्र के दिन भोजपत्र पर गोरोचन से मन्त्र को लिख कर उसे मसल कर उसे दूध से बने हुए प्रसाद में मिलाकर जिसको भी वह प्रसाद खिला दिया जाता है, वह निश्चित रूप में वश में हो जाता है।
13. यदि रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो, और गोरोचन से इस मंत्र को कागज पर लिख कर कार्यालय में अथवा फैक्टरी में वह मंढ़वा कर लटका दिया जाय तो कर्मचारियों की समस्या समाप्त हो जाती है, उस फैक्टरी में किसी प्रकार की बाधा या अड़चन उपस्थित नहीं होती।
14. यदि इस मन्त्र को पुष्य नक्षत्र के दिन भोज पत्र पर लिख कर अपने घर के भण्डार गृह में रखें, तो उसके घर में निरन्तर उन्नति होती रहती है।

पर इन सब के लिए आवश्यक है, कि साधक पहले इस पदमावती साधना को सिद्ध करे, तभी उसे उपरोक्त लाभ प्रतीत होते हैं।

पदमावती प्रयोग

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, पर रजस्वला स्त्री को उन दिनों में यह प्रयोग सम्पन्न नहीं करना चाहिए, इसी प्रकार पुरुष को साधना काल में भूमि शयन करना चाहिए ब्रह्मचर्य का पूरा पालन करना चाहिए।

पदमावती महायंत्र

विश्व सार तंत्र के अनुसार इस साधना का प्रमुख भाग पदमावती महायंत्र है, जो कि धातु निर्मित हो और विश्व सार तंत्र के अनुसार ही मंत्र सिद्ध हो और प्राण-प्रतिष्ठायुक्त हो।

विश्व सार तंत्र में इस महायंत्र को सिद्ध करने की गोपनीय विधि स्पष्ट की है, जो कि अत्यन्त जटिल, कठिन और श्रमसाध्य है, उसमें बताया गया है, कि इस महायन्त्र को 'वाग्भव' बीज से सम्पुटित कर 'लज्जा' बीज से युक्त कर 'रमा' बीज से कीलक कर 'काम' बीज से सिद्ध करना चाहिए, तभी यह मंत्र सिद्ध होता है और ऐसा ही महायंत्र साधक के लिए उपयोग होता है।

साधक को चाहिए कि वह इस प्रकार का अद्वितीय महायन्त्र सम्पन्न कर ले, या किसी योग्य पंडित से तैयार करवा ले अथवा समय रहते पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर इस प्रकार का महायंत्र प्राप्त कर ले, क्योंकि इस प्रकार के महायंत्र को सिद्ध करना कठिन है।

साधना प्रयोग

जब साधक विश्व सार तंत्र के अनुसार तांत्रोक्त पदमावती साधना सम्पन्न करना चाहें तो वह या तो प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात् चार बजे के आस-पास साधना प्रारम्भ करे या रात्रि को 9 बजे के बाद इस साधना को सम्पन्न करे।

साधक स्नान कर अपने पूजा स्थान में सफेद ऊनी आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने गुरुमाता और गुरुदेव दोनों का चित्र प्राप्त कर साधना स्थल पर स्थापित करे यह महत्त्वपूर्ण माना गया है, इन दोनों को भगवान शिव और साक्षात् पार्वती समझ कर मन ही मन बिना किसी संशय के अभेद भाव से उन्हें शिव-पार्वती मान कर उनकी पूर्ण पूजा करे, पूजा में चित्र को स्नान करावे, फिर उसे पोंछ कर केसर का तिलक करे, सामने अगरबत्ती लगावे, घी का दीपक प्रज्वलित करे और सुन्दर पुष्पों का हार चित्र को पहनावे इसके बाद गुरु मंत्र की एक माला मन्त्र जप करे और गुरु आरती पूर्ण भक्तिभाव से सम्पन्न करे, यह इस प्रयोग में आवश्यक है।

इसके बाद एक थाली में केसर से स्वस्तिक का चिह्न बनाकर उसमें इस दुर्लभ 'पदमावती महायंत्र' को स्थापित करें और उसे दूध, दही, घी, शहद और शक्कर से स्नान कराने के बाद पंचामृत से स्नान करावे और फिर शुद्ध जल से धोकर-पोंछकर किसी दूसरी थाली में केसर से स्वस्तिक बनाकर उसमें इस यंत्र को स्थापित करें।

तत्पश्चात् यंत्र की संक्षिप्त पूजा करें, केसर का तिलक लगावे अक्षत, अबीर, गुलाल तथा पुष्प समर्पित करे, सामने दूध का बना हुआ नैवेद्य चढ़ावे और शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित करें।

इसके बाद इस पदमावती महायंत्र के ऊपर की ओर 'वागभव यंत्र' को स्थापित करे, यंत्र के बांई ओर 'लज्जा यंत्र' स्थापित करें, यन्त्र के दाहिनी ओर 'लक्ष्मी यंत्र' स्थापित करें और यंत्र के नीचे की ओर 'काम यंत्र' स्थापित करें। इस प्रकार इस यन्त्र के चारों तरफ ये चार यंत्र स्थापित करने आवश्यक माने गये हैं, इनमें चारों ही यंत्र अपने आप में मन्त्र सिद्ध होने चाहिए, साथ ही साथ ये प्राण प्रतिष्ठा युक्त होने चाहिये जिससे साधक को तुरन्त अनुकूलता प्राप्त हो सके।

विनियोग

इसके बाद हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं अमुक का पुत्र (पिता का नाम), अमुक गोत्र (अपना गोत्र बोलें) सद्गुरुदेव के सूक्ष्म सानिध्य में आज पदमावती सिद्धि दिवस पर पदमावती साधना को सिद्ध करना चाहता हूँ और ऐसा कहते हुए जल किसी पात्र में छोड़ दें।

इसके बाद पुन: हाथ में जल ले कर विनियोग करें–

ॐ अस्याश्चतुरक्षरी-विष्णु-वल्लभाया: मंत्रस्य श्री भगवान् शिव ऋषि: अनुष्टुप् छन्द: वाग्भवी शक्ति: देवता, वारभवं (ऐं) बीजं, लज्जा (ह्रीं) शक्ति:, रामा (श्री:) कीलक, काम-बीजात्वकं (क्लीं) क्वच, मम सु-पाण्डित्य-कवित्व-सर्व-सिद्धि-समृद्धये मंत्र जपे विनियोग।

विनियोग के बाद कमल गट्टे की माला से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें, इसमें कमल गट्टे की माला का ही प्रयोग होता है, जो कि मंत्र सिद्ध होनी चाहिए।

पदमावती मूल मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब साधक विश्राम करे, यदि साधक चाहे तो इसके बाद पदमावती स्तोत्र का पाठ कर सकता है, यद्यपि इस साधना में यह अनिवार्य नहीं है, फिर भी इस स्तोत्र की भी तांत्रिक क्षेत्र में अत्यन्त महत्ता है।

मैं केवल साधकों की जानकारी के लिए ही इस स्तोत्र को आगे की पंक्तियों में दे रहा हूँ, यद्यपि मंत्र जाप सम्पन्न करने पर उस दिन की साधना पूर्ण मानी जाती है।

साधना सामग्री- 900/-

पद्मावती स्तोत्र

ऐंकारी मस्तके पातु वाग्भवी सर्व-सिद्धिदा।
ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षु-युग्मे च शांकरी।।1।।
जिह्वायां मुख-वृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्मपि।
ओष्ठाधरौ दन्त-पंक्ती तालु-मूले हन पुनः।।2।।
पातु मां विष्णु-वनिता लक्ष्मीः श्री विष्णु-रूपिणी।
कर्ण-युग्मे भुज द्वन्द्वे स्तन द्वन्द्वे च पार्वती।।3।।
हृदये मणि-बधे च ग्रीवायां पार्श्वयोर्द्वयोः।
पृष्ठ-देशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा।।4।।
उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जंघा-द्वये पुनः।
जानु-चक्रे पद-द्वन्द्वे घटिके गुलि-मूलके।।5।।
स्वधा तु प्राण शक्त्या वा सीमन्ते मस्तके तथा।
सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः।।6।।
पुष्टिः पातु महा माया उत्कृष्टि सर्वदा वतु।
ऋषि पातु सदा देवी सर्वत्र-शम्भु-वल्लभा।।7।।
वाग्भवी सर्वदा पातु, पातु मां हर-गेहिनी।
रमा पातु महा-देवी, पातु माया स्वराट् स्वयं।।8।।
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मी विष्णु-माया सुरेश्वरी।
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम।।9।।
शिव-दूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा।
भैरवी पातु सर्वत्र मेरुण्डा सर्वदा वतु।।10।।
त्वरिता पातु मां नित्यमुग्र-तारा सदा वतु।
पातु मां कालिका नित्यं काल-रात्रिः सदा वतु।।11।।
नव-दुर्गाः सदा पान्तु कामाख्या सर्वदा वतु।
योगिन्यः सर्वदा पान्तु मुद्राः पान्तु सदा मम।।12।।
मातरः पान्तु देव्यश्च चक्रस्था योगिनी-गणा।
सर्वत्र सर्व-कार्येषु सर्व-कर्मसु सर्वदा।।13।।
पातु मां देव-देवी च लक्ष्मीः सर्व समृद्धि दा।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्व-सिद्धये।।14।।

सद्गुरु की कृपा

एक व्यक्ति हमेशा ईश्वर के नाम का जप किया करता था। उसके गुरु ने उसे ऐसा ही करने की आज्ञा दी थी अतः वह अनवरत जप करता रहता। धीरे-धीरे वह काफी बुजुर्ग हो गया इसलिए एक ही स्थान पर पड़ा रहता। परन्तु अपनी गुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर मंत्र जप करता रहता। जब भी उसे शौच, स्नान आदि को जाना होता वह अपने बेटों को आवाज लगाता।

समय बीतता गया धीरे-धीरे कुछ दिनों बाद एक ऐसा समय आया कि बेटे कई बार आवाज लगाने के बाद आते या देर से आते, देर रात तो नहीं भी आते। ऐसा होने पर वह कभी-कभी गंदे बिस्तर पर ही रात बिता देता।

अब और ज्यादा बुढ़ापा होने के कारण उसे कम दिखाई देने लगा था। इन सब के बावजूद वह अपने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुये हमेशा मंत्र जप करता रहता। एक दिन रात को निवृत्त होने के लिए जैसे ही उसने आवाज लगाई तुरन्त एक लड़का आया और बड़े ही कोमल स्पर्श के साथ उन्हें निवृत्त करवाकर वापिस बिस्तर पर लेटा गया, अब तो जैसे यह रोज का नियम हो गया।

एक रात उन बुजुर्ग को शक हो गया कि पहले तो बेटों को कई बार आवाज लगानी पड़ती थी, लेकिन अब आवाज लगाते ही यह दूसरे ही क्षण आकर बड़े ही प्रेम से निवृत्त करवा देता है। कौन है यह ? एक रात उन बुजुर्ग ने उस लड़के का हाथ पकड़ लिया और पूछा कि सच बताओ तुम कौन हो ? मेरे बेटे तो ऐसे नहीं हैं। और तभी अंधेरे कमरे में अलौकिक प्रकाश हुआ और लड़के रूपी ईश्वर ने अपना वास्तविक रूप दिखाया।

वह बुजुर्ग रोते हुए बोला, हे प्रभु आप स्वयं मझे रात्रि में निवृत्त कराने का कार्य कर रहे हैं। यदि आप मुझसे इतने प्रसन्न हैं तो मुझे मुक्ति ही दे दो ना। भगवान बोले, तुमने अपने गुरु की आज्ञा का पालन अक्षरसः पूरे जीवनभर किया, तुम मेरे सच्चे साधक हो, हर समय मेरा नाम जप करते रहें। कभी इस पर कुछ भी विचार नहीं किया जो तुम भुगत रहे हो वो तुम्हारा प्रारब्ध है और तुम्हारी सच्ची साधना के कारण इस प्रारब्ध को मैं स्वयं करवा रहा हूँ।

उन बुजुर्ग ने कहा कि, प्रभु क्या मेरे प्रारब्ध आपकी कृपा से भी बड़े हैं, क्या आपकी कृपा मेरे प्रारब्ध को काट नहीं सकती ?

भगवान कहते हैं कि मेरी कृपा सर्वोपरि है लेकिन फिर अगले जन्म में आपको शेष प्रारब्ध भुगतने फिर से आना पड़ेगा, यही कर्म का विधान है इसलिए तुम्हारे सारे प्रारब्ध मैं स्वयं अपने हाथों से कटवा कर इस जन्म-मरण से आपकी मुक्ति देना चाहता हूँ।

मन्द प्रारब्ध मेरे नाम जप से, **तीव्र** प्रारब्ध किसी सच्चे गुरु के संग से, श्रद्धा से नाम जप से कट जाते हैं परन्तु **तीव्रतम** प्रारब्ध भुगतने ही पड़ते हैं। लेकिन जो हर समय पूर्ण समर्पण, श्रद्धा एवं विश्वास से मेरा नाम जपते हैं, उनके प्रारब्ध मैं स्वयं कटवाता हूँ और उस भक्त या साधक को उस तीव्रता का अहसास नहीं होने देता।

सद्गुरुदेव ने इसी बात को कहा था कि तुम्हारे कर्मों के प्रारब्ध वश दुख, परेशानियां तो आयेंगी परन्तु गुरु उन सबको अपने सानिध्य से कटवा देता है और तुम्हें बड़ी से बड़ी परेशानियों का अहसास भी नहीं होने देता, यही सद्गुरुदेव की कृपा होती है।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष - सप्ताह का प्रारम्भ सुखप्रद रहेगा। कार्य करने में उत्साह रहेगा। किसी भी कार्य में सफलता मिलेगी। कोई महत्वपूर्ण समाचार मिलेगा। अविवाहितों का विवाह सम्भव है। वाद-विवाद से दूर रहें अनावश्यक खर्च न करें। दूसरों के लिए सहायता करेंगे। संतान पर थोड़ा नजर रखें। कोई अपना धोखा दे सकता है। लालच से बचें। माह के मध्य में वाहन चालन में सावधानी रखें। दाम्पत्य जीवन में कलह हो सकती है। किसी अपने का स्वास्थ्य खराब हो सकता हैं नये वाहन एवं भवन की खरीददारी हो सकती है। जीवनसाथी और संतान का सहयोग मिलेगा। मुसीबत में किसी की भलाई करके संतोष मिलेगा। आखिरी सप्ताह में कोई बड़ी जिम्मेदारी आ सकती है। मित्रों का सहयोग मिलेगा। आप **गृहस्थ सुख दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 3, 10, 11, 19, 20, 21, 29, 30

वृष -सप्ताह का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। काम-धंधे में मंदी रहेगी। परिवार की ओर से भी उत्साहजनक वातावरण नहीं मिलेगा। परिस्थितियों में सुधार होगा। आप सफलता हासिल कर सकेंगे। दूसरे सप्ताह में शत्रु पक्ष हावी रहेगा, आप पर कोई आकस्मिक परेशानी आ सकती है। नशीले पदार्थ का सेवन करने से बचें। जमीन का सौदा हो सकता है। अविवाहितों का विवाह होगा। नौकरीपेशा लोगों की पदोन्नति का समय है, माह का मध्य शुभ है, आपकी कोई मनोकामना पूर्ण हो सकती है। इस समय वाहन सावधानी से चलायें, नया वाहन इस समय न खरीदें। व्यापारिक यात्रा लाभप्रद होगी। विद्यार्थियों की पढ़ाई में रुचि रहेगी। आपकी किसी कमजोरी को दूसरों के समक्ष उजागर न करें। दूसरों की भलाई सावधानीपूर्वक करें। आप **शत्रु बाधा निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23, 24।

मिथुन - सप्ताह का प्रारम्भ अनकूल नहीं रहेगा। मन अशांत रहेगा। आलस्यपूर्ण जीवन रहेगा। अपनी सुझबूझ से समस्यायें सुलझा सकेंगे। किसी अन्य के वाद-विवाद में न उलझें। कोई कार्य पूरा होते-होते रुक जायेगा। कोई छुपी बात खुल सकती है। व्यापारिक यात्रा लाभकारी होगी, कोई कान्ट्रैक्ट भी मिल सकता है। अटके कार्य मित्रों के सहयोग से पूर्ण होंगे। आकस्मिक धन लाभ हो सकता है। काम में बाधाएं दूर होंगी, तीसरे सप्ताह में सरकारी कार्यों में रुकावट सम्भव है। आलस्य से दूर रहें, शत्रु परेशान करेंगे। आर्थिक स्थिति के कारण अशांत रहेंगे। स्वयं पर भरोसा रखें। दूसरों से अपनी बात मनवा सकेंगे। पुराने ऋणों की वसूली होगी। आखिरी तारीखों में अड़चनें आयेंगी, स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। संतानपक्ष पर ध्यान रखें। हिम्मत से काम लें। **सौभाग्य पंचमी साधना** सम्पन्न करें।

शुभ तिथियाँ - 6, 7, 14, 15, 16, 24, 25, 26

कर्क - माह का प्रारम्भ सन्तोषप्रद रहेगा। जीवनसाथी से मनमुटाव दूर होकर प्यार का माहौल बनेगा। घरेलू समस्यायें परेशान करेगी। इस समय जमीन के लेन-देन से बचें। नई वस्तु की खरीदारी हो सकती है। किसी पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है। परेशानियां होगी परन्तु आप मंजिल पाने में समर्थ हैं। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में लगा रहेगा। आलस्य से दूर रहें, हर किसी पर विश्वास न करें। कारोबार में नुकसान की संभावना है। उतार-चढ़ाव का समय है। माह के मध्य के बाद किसी अपने की तबियत खराब होने से अप्रसन्नता रहेगी। जीवनसाथी से माधुर्यपूर्ण व्यवहार रहेगा। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में मन लगायेगा। व्यापार में कोई विघ्न आ सकता है। आखिरी दिनों में मिश्रित फलदायक वातावरण रहेगा। घर में कोई मंगल कार्य हो सकता है। आप **गणपति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 8, 9, 17, 18, 19, 27, 28

सिंह - सप्ताह का प्रारम्भ अच्छा है। प्रॉपर्टी के कार्य में लाभ होगा। सोचे गये कार्यों में सफलता मिलेगी। भाइयों में सहमति बनेगी। महत्वपूर्ण कागजात पर सोच-समझकर हस्ताक्षर करें। शत्रु टांग अड़ायेंगे। कोर्ट केस में अनुकूलता मिलेगी। कर्मचारी वर्ग की पदोन्नति का अवसर है। माह के मध्य में महत्वपूर्ण कार्यों को किसी अन्य के भरोसे न छोड़ें। परिवार में खटपट हो सकती है। नये व्यक्ति से सम्पर्क बनेगा। तीसरा सप्ताह पक्ष में न होने से परेशानियां आ सकती है किसी अन्य पर अत्यधिक विश्वास न करें। उलझनें सुलझाने में जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। प्यार में सफलता मिलेगी। कुछ विवाद सुलझेंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। मेहनत से आप समय को अपने पक्ष में कर सकेंगे। आप **गणपति दीक्षा** ग्रहण करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 3, 10, 11, 19, 20, 21, 29, 30

कन्या - माह का प्रारम्भ प्रतिकूल है। कोई परेशानी अचानक आ सकती है। अपनों से सावधान रहें। अपनी कमजोरी किसी के सामने उजागर न करें। गलत सोहबत के मित्रों से दूर रहें। विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। उच्चाधिकारियों से सहयोग मिलेगा। अदालतों के चक्कर काटने से छुटकारा मिलेगा। परिवार में परस्पर प्यार का

वातावरण रहेगा। इस समय जमीन आदि का सौदा न करें। कारोबार में बढ़ोतरी होगी। दूसरों को मुसीबत में सहयोग करेंगे। आलस्य एवं चिड़चिड़ेपन से दूर रहें। परिवार के सहयोग से प्लानिंग करेंगे। आप **भैरव दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23, 24

तुला - सप्ताह का प्रारम्भ शुभ नहीं है, कोई परेशानी आ सकती है। कार्यों में रुकावट आ सकती है। शत्रु पक्ष में सावधान रहे। कार्यों में लापरवाही न बरतें। भाईयों में प्रेम रहेगा। धार्मिक यात्रा हो सकती है। रुके हुए रुपये प्राप्त होंगे। जीवनासथी से प्रेम का व्यवहार रहेगा। आय के स्रोत बढ़ेंगे। विद्यार्थी वर्ग नये ज्ञान की प्राप्ति में रुचि दिखायेगा। अचानक किसी विवाद में उलझेंगे किसी और की गलती अपने ऊपर आ सकती है। नौकरी पेशा लोगों के लिए समय अच्छा है। तीसरे सप्ताह में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। हर किसी पर अधिक विश्वास न करें। परिवार में मतभेद हो सकता है। वाणी की मिठास के कारण सम्मान मिलेगा। कोई धोखा दे सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें चिड़चिड़ापन दाम्पत्य में तनाव की स्थिति लायेगा। क्रोध पर नियंत्रण रखें। **पूर्ण गृहस्थ सुख दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 6, 7, 14, 15, 16, 24, 25, 26

वृश्चिक - माह का प्रारम्भ श्रेष्ठ है। सभी का सहयोग रहेगा, कारोबार में उन्नति रहेगी। विरोधी शांत रहेंगे। यह समय संयम एवं प्रेम से व्यतीत होगा। कोई भी गलती को न दोहरायें। व्यापारिक योजनायें, भविष्य में लाभ देगी। प्यार में सफलता मिलेगी। शत्रु पक्ष को माकूल जवाब देंगे। इस समय किये गये कार्यों में सफलता मिलेगी। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। माह के मध्य में स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आर्थिक स्थिति भी डगमगा सकती है कोई भी निर्णय सोच-विचार कर कर लें। तीसरे सप्ताह में निर्णय श्रेष्ठ एवं लाभकारी होंगे। किसी अन्य के वाद-विवाद से दूर रहें। वाणी पर संयम रखें। रुपये पैसे की तंगी रहेगी। आखिरी के सप्ताह में संभल कर कार्य करें। अविवाहितों का विवाद का समय है। परिवार में प्रेम रहेगा। आप **सौभाग्यप्राप्ति साधना** सम्पन्न करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 8, 9, 17, 18, 19, 27, 28

धनु - प्रारम्भ संतोषप्रद रहेगा। मनोरंजन में समय व्यतीत होगा। सगाई हो सकती है। नये मित्र बनेंगे दूसरों की मदद करेंगे। कोई परेशानी चेहरे पर उदासी लायेगी। विद्यार्थी वर्ग का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। शत्रुओं से सावधान रहें। अचानक बाहर जाने का प्रोग्राम बनेगा। चित्त प्रसन्न रहेगा। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। माह के मध्य में धोखा मिल सकता है। किसी को उधार न दें। व्यापार में नुकसान भी हो सकता हैं किसी की भलाई उल्टे हमें ही नुकसान पहुंचा सकती है। परिवार के सदस्यों का व्यवहार अच्छा रहेगा। नौकरीपेशा लोगों का ट्रांसफर मनचाही जगह सम्भव है। स्वास्थ्य पर ध्यान देवें। गलत तरीके से धन कमाने से बचें। नये वाहन की खरीददारी हो सकती है। आप **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 3, 10, 11, 19, 20, 21, 29, 30

मकर - माह का प्रारम्भ कष्टदायक हो सकता है। महत्वपूर्ण कागजात पर बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें। मित्र, परिजन भी साथ नहीं देंगे। परन्तु परिस्थितियों को सुलझा सकेंगे। घर में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। आलस्य की प्रकृति के कारण हानि हो सकती है। कड़ी मेहनत से आप जीत हासिल कर सकते हैं। शत्रु नीचा दिखा सकता है। तीसरे सप्ताह में आप शत्रु को जवाब दे सकेंगे। आय के स्रोत बढ़ेंगे। इस समय सोच-समझ कर निर्णय लें। परिवार से दूर रहना पड़ सकता है, परेशानियां घेरेंगी। उधारी वसूल नहीं हो पायेगी। संतान व्यापार संभालने में सफल होगी। सरकारी कर्मचारी का प्रमोशन हो सकता है। आखिरी दिनों में वाद-विवाद से बचें, आपकी कोई छिपी बात सामने आ सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आप **शत्रु बाधा निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23, 24

सर्वार्थ सिद्धि योग	- नवम्बर-20, 22, 25
अमृत सिद्धि योग	- नवम्बर-20, 22, 25,
रवि योग	- नवम्बर-10, 13, 14, 17, 26
गुरु पुष्य योग	- नवम्बर-25 (प्रात: 7.08 से शाम 6.48 तक)

कुम्भ - कोई आकस्मिक घटना घट सकती है। फालतू के कार्यों में उलझेंगे। यात्रा करने से बचें। परिवार में मतभेद हो सकते हैं। जमीन की खरीद में फायदा होगा, परीक्षा में सफलता के अवसर हैं। ज्ञानपूर्ण बातें हासिल होंगी। कोशिशें सफल होंगी। परिवार में अशांति का वातावरण होगा। स्वयं पर भरोसा रखते हुए, कदम बढ़ायें। जीत हासिल होगी। माह का मध्य विजय दिलायेगा। शत्रु परास्त होंगे। कुछ परिणाम आपके विरुद्ध भी हो सकते हैं। परिवार के झंझटों से शांति भंग होगी। शुभ और मांगलिक कार्य आप को प्रसन्नता देंगे। सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। फालतु के कार्यों में ध्यान न दें, विवादों से बचें। छोटी-छोटी समस्याओं का सामना तो करना ही पड़ेगा। बेबुनियाद इल्जाम भी आपके ऊपर आ सकते हैं, आर्थिक नुकसान भी हो सकता है। **बगलामुखी दीक्षा** ग्रहण करें।

शुभ तिथियाँ - 6, 7, 14, 15, 16, 24, 25, 26

मीन - माह के प्रारम्भ में वांछित परिणाम प्राप्त होंगे। यथोचित प्रतिफल मिलेंगे। आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। परिवार में सभी का सहयोग मिलेगा, किसी अंजान से टकराहट हो सकती है। आवेश में न आयें, अहंकार से बचें। आप किसी ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होंगे। व्यवसाय में वृद्धि होगी। कोर्ट-कचहरी से छुटकारा मिलेगा। धन का दुरुपयोग करने से बचें। अन्यथा मानसिक परेशानी झेलनी पड़ेगी। शत्रु को जवाब देने में सक्षम होंगे। यात्रा हो सकती है। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर हैं। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा, पेट की बीमारी पीड़ित रहेंगे। बिना वजह किसी वाद-विवाद में न पड़ें, वाणी पर संयम रखें। यात्रा में किसी से मुलाकात आपकी दिनचर्या बदल देगी। आय का स्रोत बढ़ेगा। आप **पूर्ण सफलता दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 8, 9, 17, 18, 19, 27, 28

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

01-11-21	सोमवार	रमा एकादशी
02-11-21	मंगलवार	धन त्रयोदशी
03-11-21	बुधवार	नरक चतुर्दशी/धन्वन्तरी जयंती
04-11-21	गुरुवार	दीपावली
05-11-21	शुक्रवार	गोवर्धन पूजा
06-11-21	शनिवार	यम द्वितीया
09-11-21	मंगलवार	सौभाग्य पंचमी
14-11-21	रविवार	हरि प्रबोधिनी एकादशी
19-11-21	शुक्रवार	कार्तिक पूर्णिमा/खण्डग्रास चन्द्रग्रहण
27-11-21	शनिवार	काल भैरव अष्टमी
30-11-21	मंगलवार	उत्पन्ना एकादशी

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (नवम्बर-7, 14, 21, 28)	दिन 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 04.30 तक रात 07.36 से 09.12 तक 11.36 से 02.00 तक
सोमवार (नवम्बर-1, 8, 15, 22, 29)	दिन 06.00 से 07.30 तक 09.00 से 10.48 तक 01.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
मंगलवार (नवम्बर-2, 9, 16, 23, 30)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
बुधवार (नवम्बर-3, 10, 17, 24)	दिन 06.48 से 11.36 तक रात 06.48 से 10.48 तक 02.00 से 04.24 तक
गुरूवार (नवम्बर-4, 11, 18, 25)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.48 से 12.24 तक 03.00 से 06.00 तक रात 10.00 से 12.24 तक
शुक्रवार (नवम्बर-5, 12, 19, 26)	दिन 09.12 से 10.30 तक 12.00 से 12.24 तक 02.00 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 01.12 से 02.00 तक
शनिवार (नवम्बर-6, 13, 20, 27)	दिन 10.48 से 02.00 तक 05.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नही, बाधाएं तो उपस्थित नही हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हे सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

नवम्बर -21

11. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं।
12. निम्न मंत्र का जप करते हुये सूर्य को जल दें- ।। ॐ ऐं आरोग्याय ऐं नमः ।।
13. आज सरसों का तेल कुछ दक्षिणा के साथ दान दें।
14. आज गायत्री मंत्र की 1 माला जप करके जाएं।
15. तुलसी के वृक्ष के पास घी का दीपक लगायें।
16. हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जाएं।
17. भगवान विष्णु की आरती सम्पन्न करें।
18. आज पक्षियों को दाना डालें।
19. आज कार्तिक पूर्णिमा है और चन्द्रग्रहण भी है, कोई भी साधना सम्पन्न करें।
20. आज शं शनैश्चराय नमः मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं।
21. सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर 16 माला गुरु मंत्र का जप करें।
22. भगवान शिव को सफेद पुष्प चढ़ायें।
23. आज गं गणपतये नमः मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
24. आज दूध से बने प्रसाद का किसी देवी मन्दिर में भोग लगायें।
25. प्रातः बाहर जाने से पूर्व केसर का तिलक अवश्य लगायें।
26. मंत्र जप पूजन के बाद ॐ ह्रीं ॐ का 101 बार जप करें।
27. आज काल भैरव अष्टमी है, साधना सम्पन्न करें।
28. भगवान सूर्य को अर्घ्य दें एवं तीन परिक्रमा करें।
29. शिव मन्दिर में अपनी मनोकामना के साथ पांच लौंग अर्पण करें।
30. मनोकामना गुटिका (न्यौ. 150/-) अपनी मनोकामना बोलते हुए, शिव मन्दिर में चढ़ायें।

दिसम्बर-21

1. प्रातःकाल सबसे पहले अपनी दोनों हथेलियों को देखकर निम्न मंत्र बोले-
   कराग्रे वसते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती
   कर मूले स्थितोब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम।।
2. आज गुरु पूजन में बेसन के लड्डुओं का भोग लगाकर बांट दें।
3. अपने इष्ट का ध्यान करके बाहर जाएं।
4. बगलामुखी गुटिका (न्यौ . 150/-) के सामने ह्लीं मंत्र का 108 बार मंत्र जप कर गुटिका धारण कर लें।
5. गायत्री मंत्र का 1 माला जप करें।
6. कपड़ा एवं अन्न दान करें।
7. हनुमान मन्दिर में बेसन के लड्डुओं का प्रसाद बांटें।
8. आज कोई भी लक्ष्मी साधना अवश्य करें।,
9. पीपल के वृक्ष में एक लोटा जल दें।
10. पत्रिका में प्रकाशित पद्मावती स्तोत्र का पाठ करके जाएं।

14.12.21

मोक्षदा एकादशी

पर सम्पन्न करें

साधना में सफलता मिलती ही न हो
तो फिर साधना में सफलता का

एक अचूक प्रयोग

धर्म-अर्थ-काम और
मोक्षप्राप्ति का

अमृत प्रयोग

जीवन के चार स्वरूप हैं, और इन चारों का पूर्ण समन्वय ही जीवन की पूर्णता है।

इसमें से किसी एक भाग के अधिक अथवा कम हो जाने से जीवन अत्यन्त नीरस एवं भार स्वरूप हो जाता है,

ये चार भाग-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है, इनमें से प्रत्येक, पूर्ण रूप से अत्यन्त महत्वपूर्ण है और जिस क्रम में इन्हें शास्त्रों में दिया गया है, उसी क्रम में इनका महत्व भी है, जीवन में स्पष्ट दिशा-निर्देश हेतु प्रत्येक का विवेचन आवश्यक है।

धर्म

धर्म का तात्पर्य केवल धार्मिक होना, दान-पुण्य करना, जीवों पर दया करना, अपना कार्य छोड़ कर दूसरे की सहायता करना, अत्यन्त सादा जीवन बिताना, गरीबी में ही प्रसन्न रहना, संतोषी होना ही नहीं है, धर्म का दूसरा नाम कर्तव्य भी है। इस जीवन में आपको अपने लिए तथा दूसरों के लिए क्या कर्तव्य करना है, अपने जीवन को किस तरह से ढालना है, आपको अपने जीवन में जो अवसर मिल रहे हैं, उनका किस प्रकार से, सही तरीके से उपयोग करते हुए अपने जीवन का निर्माण करना है, यही धर्म की परिभाषा है।

धर्म यह कभी नहीं कहता, कि आप शान्त बैठे रहें, जो कुछ जीवन में होना है, वह अपने आप हो जायेगा, दूसरे चाहे आपको पैरों तले रौंद कर आगे बढ़ जायें, आप अपनी ओर से कुछ न करें, शत्रु आपको चाहे कितनी ही पीड़ा देने का प्रयास क्यों न करें—आप शान्त रहें, ऐसी गलत बातें धर्म के किसी भी स्वरूप में नहीं हैं, धर्म तो वह कर्त्तव्य सिखाता है, कि आपको पुरुष अथवा स्त्री का जो जीवन मिला है, उस जीवन के प्रत्येक क्षण को सही ढंग से उपयोग में लाते हुए, ऐसे श्रेष्ठ जीवन का निर्माण करना है, जिससे कि आप अपने लिए कुछ कर सकें, दूसरों के लिए कुछ कर सकें।

धर्म की परिभाषा कीड़े-मकोड़े, रेंगने वाले सामान्य जीव-जन्तुओं पर लागू नहीं होती, क्योंकि वे प्राणी, बुद्धि एवं कर्त्तव्य से परे है, धर्म की परिभाषा समाज में रहने वाले व्यक्ति पर लागू होती है और जब आप कीड़े-मकोड़े अथवा सामान्य जीव-जन्तु नहीं है, तो अपने धर्म को पहचानें और उसी के अनुसार कार्य करें।

आपका धर्म यह कहता है, कि आप अपने जीवन में पूर्ण उन्नति की ओर अग्रसर हों, आपका धर्म यह कहता है, कि माता-पिता ने आपको जन्म देकर आपसे जिन आशाओं की कामना की है, उन आशाओं को पूरा करें, आपकी पत्नी ने आपसे जिस प्रकार के सुखों की इच्छा चाही है, वे सभी इच्छाएँ आप पूर्ण करने में समर्थ हो सकें, आपके बच्चे, जिनके प्रति आपका धर्म या कर्तव्य विशेष है, उन्हें श्रेष्ठ से श्रेष्ठ शिक्षा देना है, उन्हें जीवन में पूर्ण उन्नति के अवसर प्रदान कराएं, उन्हें योग्य बनाएं, धर्म यह कहता है, कि आप अपने रहने के लिए सुन्दर घर बनाएं, जिसमें निवास करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त हो सके, धर्म यह कहता है, कि आप हर समय अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहते हुए कार्य करते रहें, धर्म तो आपको सतत्-निरन्तर चलने की प्रेरणा देता है।

धर्म के सम्बन्ध में इतनी अधिक भ्रान्तियाँ अधकचरे-अज्ञानी व्यक्तियों द्वारा फैला दी गई हैं, कि सामान्य व्यक्ति एक छोटे से दायरे में रहकर उसके बारे में नहीं सोच पाता है और ऐसे धर्म से उसे वितृष्णा होने लगती है जो उसकी इच्छाओं को, उसकी भावनाओं को मारता है। जबकि धर्म आपके सोये हुये व्यक्तित्व को जगाता है, केवल जंगल में जाकर रहना, भजन-कीर्तन करना ही धर्म नहीं है, धर्म तो जीवन में पग-पग पर अपने कर्त्तव्य को ध्यान में रखते हुए, कार्य करते हुए, अपने जीवन को सुन्दर से सुन्दरतम रूप देने का ही नाम है।

अर्थ

यह शब्द ही अपने आप में ऐसा है, कि प्रत्येक व्यक्ति इसका नाम लेते ही, सुनते ही प्रसन्न हो जाता है, बिना अर्थ के श्रेष्ठ से श्रेष्ठ व्यक्ति को भी अपमान सहन करना पड़ जाता है, और अर्थ अर्थात् धन के कारण मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति श्रेष्ठ जन की श्रेणी में आ जाते हैं, अर्थ में ऐसा क्या है? अर्थ में वह बल है, जो कि सबको अपने वश में कर सकता है, अर्थ में वह बल है कि बड़े से बड़े शत्रु भी सेवक बन जाते हैं, कोई भी कार्य रुकता नहीं है, जिस प्रकार की भी सांसारिक वस्तु की कामना होती है, उसे प्राप्त कर सकते हैं, धन-जीवन के प्रत्येक भाग में अपना प्रभाव डालता है, अच्छा रहन-सहन हो, बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलानी हो, उत्तम भोजन करना हो, श्रेष्ठ वस्त्र पहिनना हो, इन सभी के लिए धन की आवश्यकता रहती है, सबसे बड़ी बात यह है, कि यदि आप अपने मन से दूसरों के लिए कुछ करना चाहते हैं, चाहे वह सहायता, सहयोग अथवा दान हो, उसके लिए भी धन की आवश्यकता तो पड़ती ही है।

धन आपका सेवक है, योग्य पुरुषों पर धन हावी नहीं हो सकता, उनका सेवक बन कर रहता है, लेकिन इसे अपने वश में करने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है, बिना धर्म के सहयोग के, धन प्राप्त नहीं हो सकता, धन का विस्तार कभी भी समाप्त नहीं होता, इसे जितना प्राप्त कर लें उतना ही कम रहता है, फिर भी जिस प्रकार का जीवन आप अपने लिए तथा दूसरों के लिए जीना चाहते हैं, उसके लिए धन तो आवश्यक ही है, और फिर जब जीवन का दूसरा नाम ही कर्त्तव्य तथा अर्थ है, तो उसके लिए कार्य क्यों न किया जाय?

धन की गति धर्म से नियन्त्रित करें, तो न ही धन समाप्त होता है, और न ही धन का दुरुपयोग होता है, धर्म और अर्थ अर्थात् कार्य और धन का परस्पर सहयोग होना आवश्यक है, किसी भी बिन्दु पर ये एक दूसरे को काटते नहीं हैं, अपितु श्रेष्ठ जीवन के लिए दोनों का परस्पर सहयोग आवश्यक है।

काम

काम का अर्थ है—आनन्द, काम का अर्थ है—सुख, काम का अर्थ है—इच्छाओं की पूर्ति, चाहे वे दैहिक हों अथवा मानसिक, काम एक अत्यन्त स्वाभाविक प्रक्रिया है, जो कि जीवन के विकास के लिए उतनी ही आवश्यक है, जितना कि भोजन करना, काम का सम्बन्ध शरीर से जितना है, उतना ही मन से भी है, मन में यदि शान्ति नहीं है, तो काम अधूरा ही है, काम तो एक ऐसा तीव्र ज्वार है, जिसे रोकने का प्रयत्न करने पर यह प्रचण्ड तूफान का रूप ले सकता है, आवश्यकता तो केवल इस बात की है, कि इसकी गति, इसकी दिशा को इस प्रकार से नियन्त्रित कर दिया जाय, कि इसकी तरंगे जीवन में क्षण-क्षण आनन्द देती रहें।

जिस व्यक्ति के जीवन में, 'काम' में पूर्णता नहीं है, उसके जीवन में एक अधूरापन ही है, इसीलिए इसे भी जीवन के चार प्रमुख सूत्रों में धर्म और अर्थ के समान ही स्थान दिया गया है, इसका यह तात्पर्य नहीं है कि आप अपने जीवन में काम को इतना अधिक भर दें, कि दूसरे सभी स्वरूप गौण हो जाएं, इसका अर्थ यह है कि आप अपने जीवन में काम को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए, अपने धर्म के साथ अर्थ प्राप्त करें और उसका उपयोग करें, जिस प्रकार खारे नमक के बिना उत्तम एवं श्रेष्ठ भोजन भी बेस्वाद लगता है और आनन्द-रहित हो जाता है, उसे जीने की इच्छा ही नहीं रहती।

काम में पूर्णता इस शरीर और इस मन के माध्यम से प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि ऐसा कुछ कार्य, साधना, निरन्तर किया जाय, जिससे जीवन का आनन्द निरन्तर बढ़ता ही रहे और जीवन के अन्य पहलुओं के साथ इस महत्वपूर्ण पहलू को भी ध्यान में रखा जाय, इसीलिए तो गृहस्थ जीवन को पूरी आयु तथा जीवन का सबसे महत्वपूर्ण भाग माना गया है, गृहस्थ हुए बिना गति सम्भव नहीं होती, गृहस्थ हुए बिना जीवन के सुख, दुःख का अनुभव भी नहीं होता, क्या कमियाँ हैं, क्या कर्तव्य हैं, इस चीज को प्राप्त करना है और इसे नकार देना—इसका ज्ञान-गृहस्थ जीवन में ही होता है।

काम, व्यक्तित्व का, आन्तरिक सुख का केन्द्र बिन्दु है, इस क्षेत्र में पूर्णता, व्यक्ति के आत्मविश्वास को उन्नत करती है और वह मन नियन्त्रण में रखते हुए, अन्य क्षेत्रों में भी पूर्णता पाने का प्रयास करता है।

जीवन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अपना-अपना स्थान है, इस प्रक्रिया को यदि किसी एक क्षेत्र की ओर ही मोड़ दिया जाय, तो वह जीवन एक अनियंत्रित-अधूरा जीवन ही कहा जायेगा, ऐसे व्यक्तित्व को न तो कोई याद रखता है, और न ही कोई महत्त्व है, अपने लिए पूर्णता प्राप्त करते हुए, दूसरों के लिए, समाज के लिए कुछ करना ही श्रेष्ठ जीवन है, जब आपके पास कुछ होगा, तभी तो आप दूसरों को कुछ दे सकते हैं।

मोक्ष

इस सम्बन्ध में शास्त्रों में बहुत कुछ लिखा है और सब जगह यही बताया है, कि व्यक्ति का जन्म ही इसलिए हुआ है, कि वह मोक्ष प्राप्त करे, जब जीवन का उद्देश्य प्रारम्भ से ही मोक्ष बता दिया गया है, तो फिर जीवन हुआ ही क्यों?

जीवन इसलिए हुआ है कि इस जीवन के प्रत्येक क्षण का आनन्द लेते हुए, प्रत्येक क्षण में अपने कर्तव्य को निभाते हुए, जब पूर्णता प्राप्त कर लेते हैं, तो वह मोक्ष स्वरूप ही है, जब तक जीवन में इच्छाएँ रहती हैं, तब तक वह मोक्ष अधूरा ही है, इसीलिए अपने जीवन में धर्म अर्थात् कर्तव्य, अर्थ अर्थात् धन, काम अर्थात् आनन्द इन सबके साथ संतुलित जीवन जीते हुये तृप्ति प्राप्त करना-यही मोक्ष है इसके अलावा सभी परिभाषाएँ भ्रमित करने वाली और झूठी हैं, मोक्ष तो जीवन में पूर्णता की वह स्टेज है, जो कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करने पर ही प्राप्त हो सकती है, इसलिए मोक्ष शब्द, पूर्णता का प्रतीक है और मोक्ष प्राप्ति-पूर्णता की प्राप्ति है।

मोक्षदा एकादशी

जैसा कि ऊपर प्रत्येक क्षेत्र की व्याख्या करते हुए, स्पष्ट किया गया है, उस हेतु व्यक्ति जीवन में साधना करें जो कि कर्तव्य का ही दूसरा स्वरूप है। इसे निरन्तर रूप से करते रहना है तभी कैसी स्थिति प्राप्त हो सकती है। साधना किसी भी बिन्दु पर आकर समाप्त नहीं होती है, यह तो एक निरन्तर की जाने वाली विशेष क्रिया है, जिसके द्वारा आप निरन्तर कुछ न कुछ प्राप्त करते ही रहते हैं, जिस दिन आपकी साधना रुक जायेगी, उस दिन प्राप्ति भी रुक जायेगी।

मोक्षदा एकादशी-जो कि इस वर्ष मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी दिनांक 14.12.21 मंगलवार को है, इसका विशेष महत्व है, मोक्ष-धर्म, अर्थ और काम का संगम है, अतः इस दिवस की साधना भी जीवन की इन तीन महत्वपूर्ण स्थितियों को प्राप्त करने की, उसमें पूर्णता लाने की साधना है।

मोक्षदा साधना तत्त्व

चित्त वृत्तियों को नियन्त्रण में रखते हुए, अत्यन्त सादा आहार लेकर इस दिन एक विशेष पूजन क्रम सम्पन्न करना चाहिए और प्रत्येक एकादशी को इसी प्रकार पूजन सम्पन्न किया जाय, तो जीवन सुन्दर, सुगन्धित, उद्यान-आनन्दवन बन जाता है।

इस दिन प्रातः जल्दी उठकर साधक स्नान कर, शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में गुरु ध्यान कर, गुरु पूजन कर, मानसिक रूप से गुरु आज्ञा प्राप्त कर अपने जीवन में अपनी उन्नति की कामना करते हुए, पूजन कार्य प्रारम्भ करें, उसके पश्चात् गणपति पूजन (उसे जो भी विधि आती हो-उस विधि से ध्यान करें) विधि-विधान सहित सम्पन्न करें।

विशेष पूजन-साधना क्रम

इस दिन प्रात: किसी शिव मन्दिर में जाकर शिव पूजन सम्पन्न करना चाहिए, यदि मन्दिर में जाना सम्भव नहीं हो, तो घर में ही शिव पूजन सम्पन्न कर शिवलिंग पर जल चढ़ाना चाहिए।

इसके पश्चात् अपने सामने चन्दन से 21 बिन्दी एक थाली में लगाएं, बीच में स्वस्तिक बना कर उस पर मिट्टी का दीपक जलाएं, इसके दोनों ओर एक-एक 'सिद्धिफल' रखें, 21 बिन्दियों पर '21 शंखबीज' रखें, पूजा स्थान का दरवाजा बन्द रखें, और फिर सफेद हकीक माला से निम्न मंत्र का 3 माला जप करें-

सिद्ध मंत्र

।। ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी अमृतस्त्रावे स्त्रावे सम्मानं सम्मानं लाभं देहि देहि स्वाहा।।

यह मंत्र अत्यन्त चमत्कारी एवं तीव्र प्रभाव वाला है, इसके कारण सिद्धि एवं सम्मान प्राप्त होता है तथा संकट के समय मानसिक संतुलन बना रहता है और विशेष हिम्मत आ जाती है।

जब भी किसी विशेष कार्य की ओर रवाना हों, तो उस स्थान पर पहुँच कर एक शंख बीज फेंक दें, उसके बाद पूरे आत्मविश्वास से कार्य की ओर अग्रसर हों, यह कार्य कोई अधिकारी से मिलने, व्यापार सम्बन्धी कार्य, इन्टरव्यू अथवा कोई भी महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है।

सिद्धिफल किसी नदी अथवा तालाब में, स्थापित करने से सात दिन के पश्चात् प्रवाहित कर दें।

जीवन के चारों धर्म-स्वरूपों का संतुलन बनाये रखते हुए, अभीष्ट सिद्धि की ओर अग्रसर होना ही योग्य साधक का गुण है और थोड़ी साधना से आप यह सब कर सकते हैं। आप प्रत्येक एकादशी को भी कम से कम 1 माला मंत्र जप अवश्य करते रहें।

साधना सामग्री- 450/-

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु

चौबीसा यंत्र मुद्रिका

।।यंत्र पहिर चौबीसा।। धन, सुख, भाग अनीसा।।

यदि कहीं आपका रुपया फंसा हुआ हो या निकल न रहा हो,
यदि व्यक्ति पर लगातार कर्जा रहता हो
यदि आपके व्यापार में आपकी उन्नति नहीं हो रही हो।

गुरु मत्स्येन्द्रनाथ गोरख संप्रदाय के आदि गुरु हैं और साबर साधनाओं की रचना करके उस काल के व्यक्तियों के लिए साधना के सरल सूत्र प्रदान किए। उनके प्रधान शिष्य गुरु गोरखनाथ ने गोरखपंथ बनाया जो कि साबर पंथ भी कहलाता है। साबर साधक शिव को आराध्य मानकर उनकी पूजा अर्चना कर साधना करते हैं। गुरु गोरख नाथ द्वारा दिये गये विभिन्न साधनात्मक सूत्र आज भी हर कसौटी पर खरे हैं।

गुरु गोरखनाथ ने स्पष्ट किया है कि उंगलियों में यदि कोई व्यक्ति यंत्र धारण करता है तो उस यंत्र का प्रभाव नाड़ियों के माध्यम से मनुष्य चौबीस घंटे ग्रहण करता रहता है, उसका मस्तिष्क उस विशेष कार्य पूर्ति हेतु अत्यन्त सक्रिय हो जाता है।

तो एक बार इस मुद्रिका को अवश्य धारण करें

आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपके फंसे हुये धन की वापसी के रास्ते खुल रहे हैं।
व्यापार में विशेष लाभ प्राप्त होगा, आप स्वयं अनुभव करेंगे कि यह अंगुठी कल्पवृक्ष के समान है।

इस अंगुठी की विशेषता है कि इसके धारण करने से आर्थिक दृष्टि से निरंतर उन्नति होती रहती है, चारों तरफ का वातावरण कुछ ऐसा बन जाता है कि उसके आर्थिक स्रोत चारों तरफ से खुल जाते हैं, अच्छे व्यक्तियों से परिचय और सम्पर्क बनता है और उनके माध्यम से जीवन में भोग एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होने लगती है

विधान

इस मुद्रिका को आप किसी भी बुधवार को गुरु पूजन कर धारण कर सकते हैं।
इस मुद्रिका को उंगली में धारण कर सकते हैं, व्यापार स्थल में रख सकते हैं,
अपने पूजा स्थान में रख सकते हैं, अपने घर में स्वर्णाभूषणों के साथ भी इसे आप रख सकते हैं।

चौबीसा यंत्र मुद्रिका - 150

हे ! भैरव - भीषण

'भयभीमादिभि: अवतीति भैरव:' अर्थात् भीमादि भीषण साधनों से रक्षा करने वाले भैरव हैं। दुर्गा सप्तसती के पाठ के प्रारम्भ और अन्त में भी भैरव की उपासना आवश्यक और महत्वपूर्ण मानी गयी है। ऐसा ही मंगल कारक देव श्री भैरव की स्तुति परक एक रचना—

यं यं यं यक्ष रूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं।
सं सं सं संहारमूर्ति शुभ मुकुट जटाशेखरम् चन्द्रबिम्बम्।।
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनख मुखं चौर्ध्वरोयं करालं।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्र पालम्।।1।।

रं रं रं रक्तवर्ण कटक कटितनुं तीक्ष्णदंष्ट्राविशालम्।
घं घं घं घोर घोष घ घ घ घ घर्घरा घोर नादम्।।
कं कं कं काल रूपं घगघग घगितं ज्वालितं कामदेहं।
दं दं दं दिव्यदेहं प्रणमतसततं भैरवं क्षेत्र पालम्।।2।।

लं लं लं लम्बदंतं लललललुलितं दीर्घ जिह्वकरालं।
धूं धूं धूं धूम्र वर्ण स्फुट विकृत मुखं मासुरं भीमरूपम्।।
रूं रूं रूं रूण्डमालं रुधिरमय मुखं ताम्रनेत्रं विशालम्।
नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्।।3।।

वं वं वं वायुवेगम प्रलय परिमितं ब्रह्मरूपं स्वरूपम्।
खं खं खं खड्ग हस्तं त्रिभुवननिलयं भास्करम् भीमरूपम्।
चं चं चं चालयन्तं चलचल चलितं चालितं भूत चक्रम।।
मं मं मं मायकायं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्।।4।।

खं खं खं खड्गभेदं विषममृतमयं काल कालांधकारम्।
क्षि क्षि क्षि क्षिप्रवेग दहदह दहन नेत्र संदीप्यमानम्।।
हुं हुं हुं हुंकार शब्दं प्रकटित गहनगर्जित भूमिकम्पं।
बं बं बं बाललीलं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्र पालम्।।5।।

"जीवन में रोग, पीड़ा, शत्रु बाधा की स्थिति में काल भैरव अष्टमी 27.11.21 को प्रात:काल दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जायें एवं इसके 11 पाठ सम्पन्न करें।"

महिलाओं के लिए ये योगासन आपकी काया को कंचन बना देंगे

आज के युग में जहाँ वातावरण अत्यधिक प्रदूषित हो गया, ऐसे में शरीर को सुन्दर एवं स्वस्थ बनाये रखना अत्यन्त कठिन हो गया है। पर अनुभव के आधार पर यह प्रमाणित हुआ है, कि चेहरे और शरीर की त्वचा को तरोताजा, स्वस्थ एवं चमकदार और शारीरिक स्वास्थ्य केवल योगासन ही रख सकते हैं।

इसीलिये हमारे तपस्वियों ने सर्वप्रथम अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए 'योग' का सहारा लिया। योग के माध्यम से तन और मन दोनों पर नियंत्रण रखा जा सकता है, तनावमुक्त बनाया जा सकता है। आज चिकित्सक भी इस तथ्य को स्वीकार कर चुके हैं कि योग द्वारा तनावमुक्त एवं निरोगी काया प्राप्त की जा सकती है और यौवन को निखारा जा सकता है।

मानव जीवन भौतिक सुख-सुविधाओं को पाने की भाग-दौड़ में बहुत ही अव्यवस्थित हो गया है। परिणामस्वरूप जीवन में तनाव है एवं शरीर पर भी बुरा असर पड़ता है। आज समाज में महिलाओं को घर एवं बाहर जाकर भी कार्य करने पड़ते हैं अत: आज के समय में योग का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। योग के माध्यम से आप न केवल शारीरिक रूप से स्वास्थ्य प्राप्त कर सकती हैं अपितु मानसिक स्वस्थता भी अनुभव कर सकती हैं।

योग की पुस्तकों में सैकड़ों योगासन दिये हुए हैं पर यह निर्णय सरल नहीं है कि हम किन आसनों को छोड़ें और किन आसनों का प्रयोग करें अत: इस बात को ध्यान में रखते हुए कुछ विशेष आसन दिये जा रहे हैं जो आप को शारीरिक स्वस्थता देने में अत्यन्त प्रभावशाली हैं।

सावधानियां

योगासन करते समय कुछ सावधानियां भी बरतनी चाहिए-1. भोजन करने के तुरन्त बाद योगासन नहीं करना चाहिए। 2. गर्भवती स्त्रियों को योगासन वर्जित है। 3. योगासन करते समय तंग और कसे हुए वस्त्र धारण नहीं किए हुए हों। 4. रजस्वला समय में एवं बीमारी की अवस्था में योगासन नहीं किये जाने चाहिये। 5. कुछ विशेष बीमारियों, उदाहरणार्थ-कैंसर, दमा, हृदयरोग आदि रोगियों को भी चिकित्सक की सलाह के बाद ही योगासन प्रारम्भ करने चाहिए।

नीचे जो योगासन दिये जा रहे हैं, वे सभी

स्त्रियोचित बीमारियों में समान रूप से लाभदायक हैं, यदि इनका प्रारम्भ आप कल से ही करें तो मात्र दस दिनों में आप इसके चमत्कारिक परिणाम अनुभव कर सकते हैं, ये योगासन ही नहीं, अपितु मानव जीवन को वरदान स्वरूप हैं।

1. चक्रासन

इस आसन को करने के लिए सर्वप्रथम जमीन पर पीठ के बल लेट जाएं। फिर हाथों के हथेलियों को जमीन पर कान के पास और पैर के तलवों को जमीन पर जमा लें। अब कमर का हिस्सा ऊपर की ओर उठाकर दोनों हाथों और दोनों पैरों के सहारे पूरे शरीर की धनुष कमान की शक्ल बना लें। हाथ और पांव के पंजे जितने पास आ सकें उतना अच्छा रहेगा। परन्तु किसी भी प्रकार से जल्दबाजी न करें, इस आसन को पूर्णता से करने में समय लगता है।

इस आसन के अभ्यास से कमर, पेट और पीठ के रोग दूर होते हैं। रीढ़ की हड्डी के दर्द में लाभ पहुँचता है। पेट की चर्बी कम होती है और मेरुदण्ड और फेफड़े की हड्डियों को लचकदार बनाता है। बालों के स्वास्थ्य एवं सुषुम्ना जागरण के लिए भी यह श्रेष्ठ आसन कहा गया है।

2. हलासन

पीठ के बल लेट जाइये और फिर दोनों पैरों को मिलाकर सिर के पीछे तक ले जाकर जमीन पर टिका दीजिये इतना ध्यान रहे कि घुटने मुड़ने न पावे तथा दोनों हाथ पीठ के समानान्तर जमीन पर टिके रहें। बढ़े हुए लीवर तिल्ली या डाइबिटीज के मरीजों के लिए तो यह आसन सर्वश्रेष्ठ एवं अद्वितीय है, यदि गर्भ से सम्बन्धित कोई तकलीफ हो तो निसन्तान युवा स्त्रियों को यह आसन नित्य करना चाहिए, इससे गर्भाशय सम्बन्धी सभी कमियाँ दूर हो जाती हैं।

3. भुजंगासन

पेट के बल लेट कर अपनी दोनों हथेलियों को दोनों बगल में छाती के समानान्तर रखिये, दोनों कुहनियां पीठ की बगल से सटी रहें, सिर जमीन पर हों, पंजे गिरे हुए हों और दोनों पैर सटे हुए हों, फिर धीरे-धीरे सांस लेते हुए सिर और छाती को हाथों पर बल देते हुए ऊपर उठाइये, प्रयत्न करिये कि जितना ज्यादा छाती और सिर पीछे की ओर झुके, उतना झुकाइये, पर कमर तथा पेट जमीन पर यथावत बना रहे, इस आसन में यथासम्भव श्वांस को रोकिये।

खांसी, दमा, ब्रोनकाइटिस तथा पाचन शक्ति को व्यवस्थित रखने के लिए यह आसन सर्वोत्तम है, आँखों के लिए यह लाजवाब टॉनिक है।
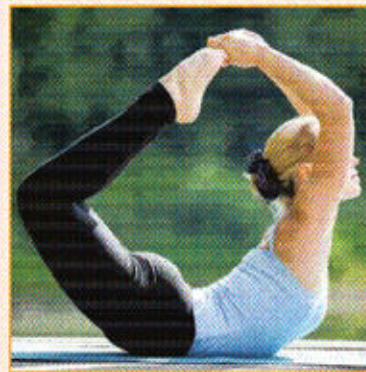
4. धनुरासन

पेट के बल लेट जाइये, दोनों घुटनों को मोड़कर पैरों को पीठ के समानान्तर ऊपर उठाइये तथा फिर अपने दोनों हाथ पीछे की ओर ले जाकर दोनों पैरों को टखने के पास मजबूती से पकड़ लीजिये, फिर दोनों जांघों, सिर व छाती को जमीन से ऊपर उठाइये, पैरों को आगे की ओर तथा हाथों को पीछे की ओर खींचने की कोशिश कीजिये इससे पूरे शरीर का आकार धनुष की तरह हो जाता है।

यह आसन कई रोगों में लाभदायक है, विशेषकर किडनी से सम्बन्धित रोग, डिसेन्टरी तथा आंतों की बीमारी में तो आश्चर्यजनक रूप से सफलतादायक है, वक्ष स्थल को पुष्ट करने के लिए यह सर्वोत्तम आसन कहा जाता है।
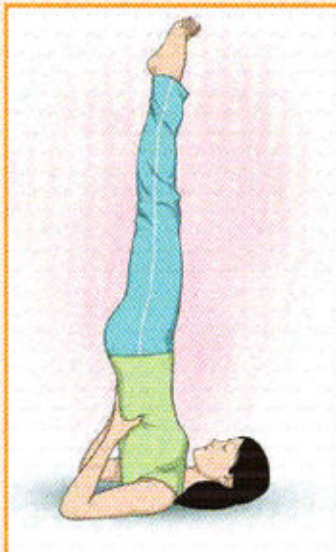
5. सर्वांगासन

पीठ के बल लेट जायें और दोनों पैर धीरे-धीरे ऊपर उठाइये अपनी दोनों कुहनियों को समानान्तर जमीन पर टिका कर दोनों हाथों के पंजों से कमर पकड़े रखिये, इस प्रकार दोनों

पैर जंघाएं व कमर ऊपर उठा दीजिये, जमीन पर केवल सिर, गर्दन व कंधे ही टिके रहेंगे।

स्त्रियोचित्त बीमारियों को दूर करने में यह सर्वोत्तम आसन है, स्मरण शक्ति की कमी, स्वप्नदोष, शरीर के विकास में न्यूनता, डाइबिटीज, बहरापन आदि रोगों में तो यह आसन सर्वोत्तम कहा गया है, इससे मन पर पूरा नियन्त्रण रहता है।

6. बद्ध पद्मासन

पद्मासन लगाकर बैठ जाइये फिर दोनों हाथ पीठ के पीछे ले जाकर बायें हाथ से बायें पैर का तथा दाहिने हाथ से दाहिने पैर का अंगूठा पकड़िये, सिर और रीढ़ की हड्डी सीधी रखिये।

दुबले और कमजोर लोगों को यह पुष्ट, मजबूत और स्वस्थ बनाता है, गर्दन कंधे और पीठ के दर्द से छुटकारा दिलाता है।
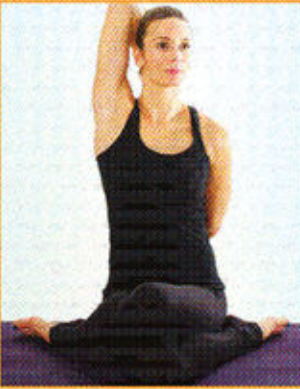
7. गोमुखासन

बैठ जाइये बायें पैर को मोड़कर उसकी ऐड़ी और पैर को दाहिने नितम्ब के नीचे रखिये, फिर दाहिना पैर मोड़कर बायें पैर पर स्थित करें जिससे दाहिने तथा बायें दोनों घुटने एक दूसरे के ऊपर आ जायें।

अब दाहिना हाथ दाहिने कंधे पर से पीठ की ओर ले जाइये बायां हाथ बाई बगल के नीचे से पीठ की ओर ले जाकर परस्पर जोड़ दीजिये।

हाथ पैरों की नाड़ियों की दुर्बलता पीठ के दर्द, डाइबिटीज, प्रमेह, बहुमूत्र, धातु दुर्बलता तथा लूकोरिया में यह आसन आश्चर्यजनक रूप से सफलतादायक है।

8. नौकासन

पीठ के बल लेटिये, सिर और पांवों को एक साथ जमीन से चार अंगुल ऊपर उठाइये और श्वांस रोककर आंखों से पंजों को बराबर देखते रहने का प्रयास कीजिये।

हृदय रोगियों के लिए यह आसन लाजवाब है, यह आसन छाती, हृदय और फेफड़ों को मजबूत बनाता है, तथा पेट के समस्त रोगों को दूर करता है, एक बार में एक मिनट तक ऐसा आसन करना चाहिए, पांच मिनट नित्य दिये जायं, तो हितकर रहता है।

ऊपर महिलाओं के लिए उन आठ आसनों का वर्णन दिया है, जिससे पूरे शरीर का व्यायाम हो जाता है, और कुछ ही दिनों में काया कंचन की तरह दमकने लग जाती है। निरन्तर अभ्यास से ही शरीर लचीला बनता है, लेकिन इसके लिए उतावली न करें।

मनुष्य की तृष्णा

जीर्यंति जीर्यत: केशा: दंता जीर्यंति जीर्यत:।
चक्षु: श्रोत्रे च जीर्येते तृष्णैका तरुणायते।। (नार.महापु.पूर्वखण्ड 35/21)

बुढ़ापे में केश एवं दाँत बूढ़े हो जाते हैं। समय के साथ आँख एवं कान भी जीर्ण हो जाते हैं। परन्तु समय के साथ तृष्णा जवान होती जाती है।

तृष्णा सबसे बढ़कर पापिष्ठ और सदा उद्वेग में डालनेवाली मानी गयी है। इसके द्वारा बहुत से अधर्म होते हैं। तृष्णा का रूप भी बड़ा भयंकर है। वह सबके मन को बाँधनेवाली है। खोटी बुद्धिवाले पुरुषों द्वारा बड़ी कठिनाई से जिसका त्याग हो पाता है, जो इस शरीर के वृद्ध होने पर भी स्वयं बूढ़ी नहीं होती तथा जो प्राणांतकारी रोग के समान है, उस तृष्णा का त्याग करनेवाले को ही सुख मिलता है। जैसे लोहे की मैल लोहे का नाश करती है, उसी प्रकार तृष्णा मनुष्यों के शरीर के भीतर रहकर उसका विनाश करती रहती है। इस तृष्णा का कोई अन्त नहीं है। जब सद्गुरु जीवन की क्षणभंगुरता का अहसास करा देते हैं तभी इसका अन्त हो सकता है। यह सब सिर्फ सद्गुरु की कृपा से ही सम्भव है। अत: हर क्षण सद्गुरु से प्रार्थना करते रहना चाहिए।

छुहारे को खारक भी कहते हैं। यह पिण्ड खजूर का सूखा हुआ रूप होता है। जैसे अंगूर का सूखा हुआ रूप किसमिस और मुनक्का होता है। छुहारे का प्रयोग मेवा के रूप में किया जाता है। इसके मुख्य भेद दो हैं–१. खजूर और २. पिण्ड खजूर। यहाँ इसके विषय में उपयोगी जानकारी प्रस्तुत की जा रही है।

भाषा भेद से नाम भेद– सं.–खर्जूर। हि.–खजूर, पिण्ड खजूर, छुहारा, खारक। म.–शिंदी, खजूर। गु.–खजूर, खारेक। बं.–खूजेर, छोहारा।

गुण–यह शीतल, रस तथा पाक में मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, हृदय को प्रिय, भारी तृप्तिदायक, ग्राही, वीर्यवर्द्धक, बलदायक और क्षय, रक्तपित्त, वायु विकार, उलटी, कफ, बुखार, अतिसार, भूख, प्यास, खांसी, श्वास, दम, मूर्च्छा, वात पित्त और मद्य सेवन से हुए रोगों को नष्ट करने वाला होता है। यह शीतवीर्य होता है पर सूखने के बाद छुहारा गर्म प्रकृति का हो जाता है।

परिचय–यह नारिकेल कुल का, ३० से ५० फुट ऊँचे वृक्ष का फल होता है। इसका प्रचलित नाम छुहारा है। खजूर के पेड़ भारत में सर्वत्र पाये जाते हैं।

रासायनिक संघटन–इसके फल में प्रोटीन १.२, वसा ०.४, कार्बोहाइड्रेट ३३.८, सूत्र ३.७, खनि द्रव्य १.७, कैल्शियम ०.०२२ तथा फासफोरस ०.३८ प्रतिशत होता है। पके पिण्ड खजूर में अपेक्षाकृत अधिक पोषक तत्व होते हैं।

उपयोग–वात पित्त शामक होने से इसका उपयोग वात और पित्त का शमन करने के लिए किया जाता है। यह पौष्टिक मूत्रल है, हृदय और स्नायविक संस्थान को बल देने वाला तथा शुक्र दौर्बल्य दूर करने वाला होने से इन व्याधियों को नष्ट करने के लिए उपयोगी है। इसके वृक्ष के रस से बनाई गई ताजी नीरा कमजोरी,

दुबलापन और पेशाब की रुकावट व जलन दूर करने में उपयोगी होती है। यहाँ कुछ घरेलू इलाज में उपयोगी प्रयोग प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

दुर्बलता–शरीर के दुबले-पतलेपन को दूर करके पुष्ट, सुडौल और भरा हुआ शरीर करने के लिए यह उपाय करें–४ छुहारे एक गिलास दूध में उबाल कर ठण्डा कर लें। प्रात:काल या रात को सोते समय, गुठली अलग कर दें और छुहारों को खूब चबा-चबा कर खाएं और दूध पी जाएं। इस प्रयोग को शीत और वसन्तकाल में ही करना चाहिए। लगातार ३-४ माह सेवन करने से शरीर का दुबलापन दूर होता है, चेहरा भर जाता है, सुन्दरता बढ़ती है, बाल लम्बे व घने होते हैं और बलवीर्य की वृद्धि होती है। यह प्रयोग नवयुवा, प्रौढ़ और वृद्ध आयु के स्त्री-पुरुष, सबके लिए उपयोगी और लाभकारी है।

घाव और गुहेरी–छुहारे की गुठली को पानी के साथ पत्थर पर घिस कर, इसका लेप घाव पर लगाने से घाव ठीक होता है। आँख की पलक पर गुहेरी हो तो उस पर यह लेप लगाने से गुहेरी ठीक होती है।

शीघ्रपतन–प्रात: खाली पेट दो छुहारे टोपी सहित खूब चबा-चबा कर दो सप्ताह तक खाएं। तीसरे सप्ताह से ३ छुहारे लेने लगें और चौथे सप्ताह से चार छुहारे खाने लगें। चार छुहारे से ज्यादा न लें। यह प्रयोग कम से कम ३ माह तक (शीत

और बसन्त ऋतु में) करें। इसके साथ साथ ही रात को सोते समय ऊपर दिया गया प्रयोग भी करें।

दमा–दमा के रोगी को प्रतिदिन सुबह शाम २-२ छुहारे खूब चबा कर खाना चाहिए। इससे फेफड़ों को शक्ति मिलती है और कफ व सर्दी का प्रकोप कम होता है।

सर्दी-जुकाम–सर्दी-जुकाम होने पर, दो दिन छोड़ कर यानी जुकाम होने के दो दिन बाद यह प्रयोग करना चाहिए–४ पिण्ड खजूर साफ कर लें और गुठली हटा कर, पिण्ड खजूर के गूदे को काट कर टुकड़े कर लें। पाव भर दूध में ये टुकड़े और ४ काली मिर्च व एक बड़ी इलायची डाल कर उबलने के लिए रख दें। खूब उबाल कर उतार लें और एक चम्मच शुद्ध घी डाल दें। सोने से पहले टुकड़े खा लें और दूध पी लें। ऐसा ३-४ रात तक करने से सर्दी-जुकाम तो ठीक होता ही है साथ ही इस कारण सिर में दर्द या भारीपन होना, सूखी खांसी, थकावट, हल्का बुखार, भूख की कमी और कमजोरी आदि व्याधियाँ भी ठीक हो जाती है।

बलपुष्टि–शरीर में बल-पुष्टि और वजन बढ़ाने के लिए जब तक पिण्ड खजूर उपलब्ध हो तब तक प्रतिदिन प्रात: नाश्ते के रूप में ५-१० पिण्ड खजूर खूब चबा कर, एक-एक घूंट दूध पीते हुए खाना चाहिए। यह बहुत ही उत्तम और बलपुष्टिवर्द्धक प्रयोग है जो शरीर का दुबलापन दूर कर शरीर को पुष्ट और सुडौल बनाने के साथ त्वचा को चिकना साफ और चमकीला बनाता है, बाल घने व लम्बे करता है, चेहरे पर निखार लाता है, पिचके हुए गालों को भरता है और एसिडिटी एवं गैस ट्रबल को नष्ट करता है। युवक-युवतियों और प्रौढ़ व वृद्ध स्त्री-पुरुषों सभी के लिए उत्तम प्रयोग है। दम्पत्ति को तो यह प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए। एक बात का ख्याल रखें कि पिण्ड खजूर की संख्या अपनी पाचन शक्ति के अनुकूल ही रखें क्योंकि पचने में भारी होने से इसे ज्यादा मात्रा में खाने पर अपच हो जाती है और पेट भारी हो जाता है। यौनदौर्बल्य और शीघ्रपतन के रोगी पुरुषों को तो नाश्ते में पिण्ड खजूर का सेवन २-३ माह तक शीत ऋतु में करना ही चाहिए, बहुत लाभ होगा।

दुबले बच्चे–जो बच्चे दुबले-पतले और कमजोर हो उनको भी सुबह नाश्ते में २-३ पिण्ड खजूर खिला कर दूध पिलाना चाहिए। पिण्ड खजूर के गूदे के टुकड़े करके प्लेट में रख कर दें और एक-एक घूंट दूध पीते हुए १-१ टुकड़ा खूब चबा-चबा कर खाने के लिए समझा कर माताएँ सामने बैठ कर नाश्ता कराएं तो बच्चे खूब स्वस्थ और सुडौल शरीर वाले होंगे।

(प्रयोग से पूर्व अपने वैध की सलाह अवश्य लें)

दृष्टान्तो मैवदृष्टं स्त्रिभुवन जठरे, सद्गुरोर्ज्ञान दातु।
स्पर्शश्चेतत्र कल्प्य: सनयति यदहो, स्वर्णतामश्य सारम।
न स्पर्शत्वं तथापि श्रित चरणयुगे, सद्गुरुः स्वीय शिष्ये।
स्वीयं साम्यं विधत्ते भवति निरूपम, स्तेन वा लौकिकोऽपि।।

अर्थात् इस त्रिभुवन में गुरु की उपमा देने लायक कोई दृष्टान्त नहीं है, गुरु को पारस की उपमा भी नहीं दी जा सकती क्योंकि पारस तो सिर्फ सोना बना सकता है, उस वस्तु को पारस नहीं बना सकता परन्तु सद्गुरु तो शिष्य को स्वयं के समान ही बना देते हैं।

शक्तिपात करते समय गुरु अपने पास जो साधना एवं सिद्धियों का समुद्र है वह सब शिष्य में उड़ेल देते हैं और शिष्य को क्षमतावान बना देते हैं। आवश्यकता है तो सिर्फ शिष्य को अपने आप को रिक्त करने की, बाकी सारी क्षमतायें तो गुरु, शिष्य में पैदा कर देता है।

जब लोहा एक बार पारस को स्पर्श करके सोना बन जाता है तब चाहे मिट्टी में डालो या कूड़े के ढेर पर फेंक दो वह जहाँ भी रहेगा सोना ही रहेगा वापस लोहा नहीं होगा। इसी प्रकार जब शिष्य मन, वचन, कर्म से सत्य को एवं सद्गुरुदेव के कहे वचनों को अपने जीवन में आत्मसात कर लेता है तब उसे संसार का कोई भी विकार या प्रलोभन विचलित नहीं कर सकता।

KAL BHEIRAV ASHTAMI-27.11.21

Or Any Saturday

Bheirav Tantra Sadhana

The invincible deity

Sheeghra Siddhi Beiravaay Kalouyuge

Thus goes famous saying in Sanskrit which means that in the present age of Kaliyug when lies, deceit, evil reign supreme the Sadhana of Lord Bheirav is most easy to accomplish and master in order to be free of all problems of life.

Problems, adversities, sorrows and pain are but a part of life and all through man keeps struggling with them. But it is wrong to blame one's fate for this specially when one has a potenet remedy for these in the form of bheirav Sadhana. The text Bheirav Tantra states that a person who loves himself, who is aware and who loved his family and children surely tries Bheirav Sadhana.

It is the most powerful ritual for not only warding off problems of life but also to neutralise the effect of even enemies and ailments. In fact there is no problem in life for which Bheirav Sadhana fails to produce the right solution – be it indebtedness, pain, affliction, problem in business or job, court cases, fear of death or accident, danger to children, baneful effect of planets and even evil base rituals tried by others to disrupt your life.

Even great asceitcs, Sadhaks and Yogis accomplish Bheirav Sadhana so that they do not have to face any obstacle in their other Sadhanas and spiritual endeavours.

There is perhaps no village, no city, no habitation in India where there isn't a Bheirav temple. And the reason for this is simply that Bheirav as a deity is the most powerful for removing all worries and fears from life. And a big evidence to this fact is that the worship of Bheirav is an inseparable part of every other worship or Sadhana of any other deity, god or goddess.

When no other means seems to work in freeing one of one's problems then resorting to Bheirav Sadhana is the best means. Through this wonderful and powerful ritual one could ensure a trouble free existence.

This Sadhana can be tried on any **Saturday or *Ashtami* (the eight day of the dark fortnight of the lunar month).** It should be tried in the night after 10 pm.

For the Sadhana have a bath and wear yellow or black clothes and then cover yourself with Guru Chaddar (a special protective shawl).

Sit on a yellow or black mat facing the West. Cover a wooden seat with yellow black cloth. On it place a copper plate. In the copper plate spread black sesame seeds and over them place the Mantra energised and consecrated ***Bheirav Yantra.***

On the Yantra place a ***Bheirav Gutika.*** Offer rice grains dyed black and black mustard seeds on the Gutika and Yantra. Also offer a sweet made from jaggery. Chant one round of Guru Mantra and pray to the Guru for success in the Sadhana.

Also light a mustard oil lamp and incense. Then take a ***black Hakeek rosary*** in right hand and chant twenty one rounds of this Manta keeping your eyes constantly fixed on the Yantra.

Om Bhram Bheiravaay Namah.

After the Mantra chanting again chant one round of Guru Mantra and pray to Lord Bheirav to remove the problems for the banishment of which you have tried the Sadhana.

Third day from the day of Sadhana tie the Yantra, Gutika and rosary in a black cloth and drop the bundle in water. If tried with full faith and devotion the Sadhana produces desired result within fifteen days.

Sadhana Articles-510/-

Any Moonless night

Jain Tantra Sadhana

JOBLESS

Tantra is not any ritual or process to be afraid of, Rather it is a system of trying **Mantra Sadhanas** in a proper way. And Tantra is not just popular and important in the **Vedic system of Sadhanas**. It is just as significant in Buddhism and Jainism.

If we study the Jain scriptures we shall find that the scholars have not just stressed on mental peace and purity of the soul but also on Tantra Sadhanas.

The Sadhana of Goddess Padmavati is basically a Jain Sadhana and it has been mentioned in several scriptures. Even the Vedic text **Mantra Maharnnav** contains its description but it is most vividly explained in the Jain system of Sadhanas. In the night of Diwali every Jain Sadhak performs Sadhana of Goddess Padmavati. In fact it would not be wrong to state that the Jain society is so prosperous and wealthy because of the amazing effect of this very Sadhana.

The Jain Munis and scholars have said that Padmavati Sadhana is a wonderful Sadhana which every householder should try. And no matter to which sect, religion or caste one belongs one is eqally eligible to gain from this Sadhana. The knowledge of Sadhanas is not limited to only one sect. Rather any person of any class or creed can benefit from it provided he does so with a pure heart and full devotion.

This Sadhana is primarily for gaining wealth. But presented here is a Padmavati Sadhana that can be tried by the jobless in order to get a good job. Even those who wish for gains from the state side can try this Sadhana with amazing and quick results. In fact so powerful and unfailing is this ritual that no Sadhak who has ever tried it has every failed to get the desired benefit.

In the night of **Amavasya or a moonless night** the Sadhak should have a bath and wear white clothes. Then he should sit on a white mat facing the East or the North. Before himself he should place a wooden seat covered with white cloth.

On it he should write the following Mantra with vermilion. On this inscription then he should place a **Padmavati Yantra** and offer rice grains, white flowers and vermilion on it. Then he should light a ghee lamp and thereafter with a **Sfatik rosary** (rock crystal rosary) he should chant 9 rounds of the following Mantra.

Om Hreem Padme Raajya Praapti Hreem Kleem Kuru Kuru Namah.

The Sadhak should do this daily for twelve days at the same time starting from the night of Amavasya. In the morning of the thirteenth day he should go and drop the Yantra and rosary in a river or pond.

Within these twelve days or a month at the most he would get to hear some good news about some job or chance to start some business of his own.

Sadhana Articles- 450/-

31 अक्टूबर 2021

श्री कमला महालक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल : सक्खर पैलेस, 153 अमितेश नगर, IDA स्कीम नं. 59, चोइथराम सब्जी मंडी के पास, **इंदौर**

आयोजक मण्डल – सिद्धाश्रम साधक परिवार (इन्दौर)-9893333337, 9826686200, 9826067072, 8889116148, 9770647707, 9827747000, 9926751207, 98934.40762, 9669655496, 97130.02121, 7509472494, 9669666708, 8889226327, 9826033100, 9575386437

जोधपुर दीक्षा प्रोग्राम

यह दीक्षा प्रोग्राम 3-4 नवम्बर (दीपावली पर्व) को गुरुधाम, जोधपुर में सम्पन्न होगा

14 नवम्बर 2021

गुरु-शिष्य मिलन समारोह

शिविर स्थल : आर.पी. पैलेस, हाउसिंग बोर्ड, कॉलोनी, देवीजी रोड, **मैहर (म.प्र.)**

आयोजक मण्डल – इन्द्रजीत राय – 8210257911, 9199409003, डी. के. पाण्डेय (सतना) 9752419663, राकेश श्रीवास्तव (कटनी) 8839566954, अनुराग द्विवेदी, (बुढार), 9826612023, पियुस श्रीवास्तव (सतना), 9827241434, डॉ. राजेश वर्मा (रीवा), 7999184589, **बरही –** आचार्य मधुरानन्द, 9111096021, सुभाष पटेल, 9893449023, कमलेश वर्मन, पुरुषोत्तम पटेल, राम भुवन गुप्ता, संतोष चक्रवर्ती, विनोद पटेल, फुलचन्द सोनी, सैलेश मारबी, रामदास साहु, गोड़ेलाल विश्वकर्मा, जी.पी. नामदेव, **कटनी–** शिवचरण कविरा, सुशील विश्वकर्मा, अरविन्द साहु, राम अवतार पटेल, उमेश पाण्डेय, दीपक पाण्डेय, अर्जुन सिंह सरदार जी, बिल्लु सरदार जी, मैहर-नरेश गुप्ता, कमलेश जी, रामेश्वर चर्तुवेदी, चन्द्रवान कुशवाहा, राकेश शुक्ला, **सतना–** ए.पी. मिश्रा, **रीवा–**संजय कुमार शर्मा, अदित्य प्रकाश मिश्रा, मनीश कुमार गुप्ता, डॉ. रामाशंकर वर्मा, श्री निवास पटेल, **राजनगर–**रामाधार साहु, लक्ष्मण यादव, **शिहोरा –** राकेश कुमार पाण्डेय, अमित गड़ग, **उमारिया –** ए.पी. सिंह, **महवा पन्ना –** विनय चनपुड़िया, राजेश खरे, भोपाल, विष्णु बालक कुशवाहा, **सिद्धी –** डॉ. दिक्षित, बुढार- भगवान स्वरूप यादव, **शहडोल–** उमाकान्त वर्मा, सुनील सिंह, गोकुल श्रीवास, अनिल बैरागी, आ.सि.सा. परिवार जबलपुर, आ.सि.सा. परिवार करौंदी खुर्द, आ.सि.सा. परिवार कुठिया मुंहगवां, आ.सि.सा. परिवार बकेली उमरिया, आ.सि.सा. परिवार मोहनी ताली, आ.सि.सा. परिवार सिनगौडी पथरहटा, आ.सि.सा परिवार चित्रकूट, राजेश दुबे उपरोक्त सभी सि. साधक परिवार के समस्त गुरु भाई-बहन, **इलाहाबाद–**सूर्य नारायण दुबे, गया प्रसाद यादव, **मिर्जापुर–**अनिल जयसवाल।

16 नवम्बर 2021

अखण्ड लक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल : गैलेक्सी वेंकट हॉल, सांई हास्पीटल के सामने, दिल्ली रोड, **मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)**

सम्पर्क सूत्र – पुष्पेन्द्रसिंह-9412342835, खिलेन्द्र सिंह-9837458090, मुनेन्द्रसिंह-9756700204, रणजीतसिंह-9027765397, **आयोजक मण्डल–**कैप्टन श्याम वीर सिंह-9997944895, डॉ. सतीश सक्सेना, युवराज सिंह- 9627642048, नितिन अग्रवाल-9258890999, कुसुम लता यादव, रागिनी गुप्ता-8433446020, कृष्ण कुमार मिश्रा- 98971 05859, यशवीर सिंह-9758337325, सोमपालसिंह, कर्मकेन्द्रसिंह, मुकुलसिंह, भूपेन्द्र सिंह,, मनोज विश्नोई, अर्पित विश्नोई, योगेन्द्र चौहान, कुलवीरसिंह, **सम्भल–**मोनू कुमार, रिंकू सैनी, पदमसिंह, सतेन्द्रसिंह, सुरेन्द्रसिंह, विजेन्द्र सिंह, नागेन्द्र सिंह, अक्षय त्यागी, नीतूपाल, मिलन शर्मा, रामनाथ त्यागी, नवीन वर्मा, **गजरौला–**प्रेमनाथ उपाध्याय, श्याम सुन्दर कौशिक, शेखर वर्मा, विकास अग्रवाल, हरवेन्द्र सिंह, अनिल शर्मा, विनोद पाण्डे, अनिल राजपूत, गतेन्द्रसिंह, शत्रुघ्न त्यागी, दीपक कोहली, **बिजनौर–**अनुराग त्यागी, सुरभि अग्रवाल, **धामपुर–**अनिल अग्रवाल, सुरेश रस्तौगी, राजकुमार रस्तौगी, **काशीपुर–**वी.के. मिश्रा, आसू मिश्रा, मयंक मिश्रा, **हल्द्वानी–**आनन्द राणा, हरीश प्रसाद, चन्द्रजीत भसीन, **उधमसिंह नगर–**सुनील रुहेला, हरभजनसिंह, सी.एस. पाण्डे, **बरेली–**राजेश प्रताप, **लखीमपुर खीरी–** भोलेशंकर सिंह, सरोज रस्तोगी, **कानपुर–**शैलेन्द्र सिंह-9721167706, श्रीमती नीलम-8004793975, सुरेश पाण्डे, महेन्द्र सिंह, **कायमगंज–** अरुण कुमार शाक्य, रमाकान्त, **लखनऊ–**अजयकुमार सिंह, सतीश टण्डन, जयंत मिश्रा, **नागपुर–**वासुदेव ठाकरे, **नैनीताल–**पप्पन जोशी।

18-19 नवम्बर 2021

संन्यास दिवस - पूर्णमदः पूर्णमिदं साधना शिविर

शिविर स्थल :

इंडोर स्टेडियम पार्किंग ग्राउण्ड बुंढा तालाब, **रायपुर (छ.ग.)**

आयोजक मण्डल – जी.आर. घाटगे-9669901379, महेश देवांगन -9424128098, लकेश्वर चन्द्रा-9827492838, सेवा राम वर्मा -9977928379, संजय शर्मा-9111342100, बी.सी. साहू- 9425204172, दिनेश फुटान-8959140004, एन.के. कंवर- 9644334011, दुष्यंत पटेल-7089168600, लेखराम सेन- 98269 57606, हितेश ध्रुव-9826541021, प्रताप सिंह प्रधान- 7566555111, देवलाल सिन्हा-9009490734, डॉ. जगजीवन निषाद- 9977026040, राजेश साहू-9981013758, जनक यादव-7987086097, टीकाराम वर्मा-6261180440, अजय पटेल- 8839655810, समेलाल चौहान -7805906027, पिताम्बर ध्रुव-9993242093, सियाराम बरेठ-9755 836240, रामस्वरूप नागवंशी-7697581977, ज्ञानेश तुमरेकी- 9907102649, **रायपुर–**चन्द्रप्रकाश स्वर्णकार-9770218087, पवन

साहू- 9827182257, विजय यादव, दशरथ यादव-8959763666, बलदाउ सिन्हा, मीना देवदास, ममता सोनी, सविता प्रजापति, संजू सोनकर, अश्वनी यादव, हेमलाल सोनकर, आनंद शुक्ला, मेहतरू यादव, ज्ञानिक निषाद, दुर्गेश निषाद, टीकम यादव, भृगु यादव, लालजी यादव, सत्यवान महंत, रानी धीवर, आरती छुरे, उषा वर्मा, दुर्गा वर्मा, हितेश सेन, दिनेश साहू, गणेश हरपाल, राजेश सोनी, कल्याण सिंह उइके, छलिया राम साहनी, गजेन्द्र सोनवानी, **सेजबहार**-गोवर्धन यादव-9754596913, **अभनपुर**-डॉ. सुखदेव साहू, रामेश्वर साहू, **आरंग**-अनुपनाथ योगी, रामेश्वर ठाकुर, तुलसी साहू, विष्णु साहू, सुखेन्द्र सोनकर, **सिलतरा**-भागवत निर्मलकर, धनीराम साहू, राकेश वर्मा, प्रेमलाल निर्मलकर, बंशीलाल साहू, विकास चन्द्र, वंदना लहरी, यशोदा साहू, ईश्वर साहू, तिलक यादव, ढेलूराम वर्मा, नारद साहू, दिलीपचन्द्र यदु, रामशरण गिरि, **तिल्दा-नेवरा**-टीकाराम वर्मा-6261180440, शैलेन्द्र वर्मा-9754291554, शत्रुध्न लाल वर्मा-9406405611, दिलीप देवांगन-7000354515, राधिका वर्मा, **छपोरा**-शत्रुध्न वर्मा, **सिलयारी**-गज्जू वर्मा, **सिमगा**-टीकाराम साहू, जनक देवांगन, हेमसिंह चौहान, गुरुप्रसाद साहू, हुल्लास राम साहू, गेंदराम साहू, शत्रुध्न देवांगन, **बलौदा बाजार**-लेखराम चन्द्राकर-9926114722, देवचरण केंवट-8435112300, अग्रहित धीवर, केशव पटेल, पुरुषोत्तम यादव, जयंती ध्रुव, उमेश्वरी चन्द्राकर, मुकुंद निखिल ध्रुव, तारा चन्द्राकर, देवनारायण वर्मा, **भाटापारा**-पुरुषोत्तम कर्ष-9754251788, लक्ष्मीप्रसाद वर्मा-9009577151, निर्मला कर्ष, **दुर्ग**-मनोज दुबे-9425520202, ललित यदु, खेदू राम देव-9993102516, विकेश शर्मा-7024791221, राजकुमार दिल्लीवार-8458995071, टीका राम यादव, संजय चंद्रवंशी, जितेन्द्र यादव, कुलेश्वर यदु, आनंद रामटेके, **खुर्सीपार**-तेजराम देवांगन, **कांकेर**-राजेश्वरी नागवंशी, सांवली बाई नागवंशी, **राजनांदगांव**-बेनीराम गजेन्द्र-9407608711, भगवती प्रसाद देवांगन-6264377782, चेतन साहू-7771095317, संतोष देशमुख-9908184712, दिनेश यादव-7389045471, बी.ए. राजू, भावेश देवांगन-8770429644, कुलदीप साहू-8770053592, दिनेश प्रजापति-9685493155, नकुल सिन्हा-9827810161, शारदा तुमरेकी, टी. नुकैया, कांती साहू-9753878751, **खैरागढ़**-तेजेश्वर गौतम-9827950765, मुकेश देशमुख- 91748 30776, गुप्तेश्वरी गौतम, गोवर्धन वर्मा-7089626903, जितेन्द्र वर्मा -9165993292, पुखराज श्रीवास-9926132675, **अम्बागढ़ चौकी**-गनपत नेताम-9406012157, कार्तिक राम कोमा, नन्दूराम धनेन्द्र-7772831646, रेणुका महाला-7771065790, **छुरिया**-डॉ. भूषण आनंद-9399782421, भोलेशंकर साहू-8349258500, मनराखन श्याम, **डोंगरगांव**-राजू यदू-9893463106, यादो राम कोठारी-9753941224, रामनारायण सोनवानी-9827413295, हेमंत साहू-9179253555, संतोष चक्रधारी-9340256566, डॉ. जितेन्द्र सिंह-9589445714, अशोक निषाद-6261284718, डॉ. कंवर साहू-8349514324, डोंगरगढ़-संतोष मंडलोई-9406239700, लेखराम वर्मा-9981180036, कार्तिक राम साहू-7974982400, ज्योति भूधर साहू-9407625706, **महासमुंद**-अशोक साहू-9753292562, खोमन कनौजे-9993377750, दिनेश पानीकर-7241190893, तरुण साहू-9098684720, **गरियाबंद**-संतोष जैन-7415537926, मनबोध साहू-7354501298, शिवमूर्ति सिन्हा-7999343781, गैंदलाल साहू-9340036935, अमृत सिन्हा, रमेश सिन्हा, चंचल गायकवाड़, डॉ. कोमल सिन्हा, डेहर पटेल, चन्द्रहास साहू, आरती ध्रुव, गौरी चौहान, **धमतरी**-एन.सी. निराला- 9329278047, संजीव तिवारी-7898009665, सत्यनारायण मीनपाल, दिलीप मीनपाल, डोमेश सिन्हा, अशोक साहू, लोकेश महाराज, सरस सोनी, **मगरलोड**-विषय लाल साहू-9770126672, गंभीर साहू, श्री दीवान-9340605060, **नगरी**-अमृतलाल सिन्हा, भरत निर्मलकर, नरोत्तम साहू, **बालोद**-रमेश निषाद-6265568273, शिव मरकाम- 94241 23804, चुरामन लाल राव, महेश गोस्वामी-7974393438, रुद्रेश साहू-8770467828, कौशल गजमल्ला-9826935021, बेमेतरा-अजय साहू-9009579631, रामचरण साहू, खूबी साहू, शत्रुध्न साहू, **अम्बिकापुर**-रामवृक्ष, रामभगत, परमेश्वरजी, जांजगीर चाम्पा-राधेश्याम साहू-9131863005, संतोष साहू-7999819021, जयचंद पटेल -7725007553, योगेश्वर चौहान, जोगेश्वर कर्ष, मेघनाथ बरेठ, मिलन कुर्रे, गंगासागर, संजय राठौर, ईश्वरीधर देवांगन, वेद श्रीवास, नोबेल पटेल, **कोरबा**-थानसिंह जायसवाल, नरेन्द्र वाकड़े, सत्यवान महंत

3 दिसम्बर 2021

शिव शक्ति साधना शिविर

शिविर स्थल : शिव मूर्ति, पाण्डव सरोवर,
बस स्टैण्ड के पास, **दसुआ** (होशियारपुर-पंजाब)

आयोजक मण्डल - जलाल नंगल - रघुवीरसिंह-9815986613, चंचलसिंह, पुरषोत्तम सिंह-8054685200, सुदेश कुमारी, सुरजीत सिंह-9876520978, सुदेश मनहास, सुन्दरशाम सिंह-9815404868, विशाखा मनहास, सोनिया कुमारी, चंचला देवी, संध्या देवी, कौशल्या देवी, रणजीत सिंह, नीलम देवी, गोदावरी देवी, कांता देवी, सुमन कुमारी, पूरण सिंह, प्रीतम सिंह, ज्योति देवी, मनीषा रानी, सुरजित सिंह, दर्शन सिंह, **मुकेरियां**-बलविन्दर सिंह-9872814107, राजन, बलवंतसिंह-9464060416, सुदेश कुमारी-8437104721, तृप्ता देवी, रेणू कौशल, हिमानी शर्मा, चन्दर रेखा, तिलक सिंह, मोहिन्दर सिंह, नरेश सिंह, मदनसिंह, **पठानकोट**-अविनाश शर्मा-9418086531, प्रवीण अरोड़ा-9417421288, पुष्कर महाजन-8054920639, सुनिता भारत, राजीव शर्मा-9914616659, राजेश शर्मा-9814870777, पवन सिंह, कल्पना -9888681403, ममता अरोड़ा-9417247789, अमित- 8054531730, **होशियारपुर**-प्रदीप-9256119075, जयंत नन्दा- 9779061513, सुभाष चन्द्र बजाज-1822221769, बनवारी लाल- 9888748318, प्रकाश कौर, आशा रानी, मनिन्दर सिंह रतन, **गुरदासपुर**- अतुल महाजन-9041507220, टोनी तिवारी-9872816082, राजीव सिंह, नथू राम, बिशन सिंह-9815851192, भृगु अबरोल-9216444347, सुनीता शर्मा, धर्मबीर, मोती लाल हाण्डा, रज्जन शर्मा, रणदीप अबलोर, **अमृतसर**-रवि शर्मा-9888460561, बॉबी चौहान, जसबीर सिंह, कुणाल खन्ना, **जलंधर**-विजय शर्मा-9417060180, गिरीश निखिल, नवीन कुमान-9041534456, बाबू-8054165988, प्रदीप सिंह राजा-9417029821, सुरेन्द्र शर्मा-9417095840, मनोज गौतम, पवन शर्मा, नगर शर्मा, सी.के. शर्मा-9501060093, सुखविन्दर पाल, पुष्पा देवी, **साम्बा**-गिरधारी सिंह-9596837376, विजय शर्मा-9858275095, भगवान दास-9872900286, सत्य भूषण-9596603296, अतुल शर्मा-9419187550, सुमित सिंह-9858101829, सन्नी साम्याल-9419135133, लखवीर सिंह-9797442614, कुलदीप राज-9622365922, बौद्ध राज-9797428607, सुरजित सिंह-9622066580, राहुल सिंह- 9419152632, अंजु गुप्ता, पण्डित कीमती-9419310155, राजू-8716807692, सोनू पण्डित-9906172054, राजेन्द्र कुमार-7051261692, पण्डित संजय-9419136203, सोनू कथुजा-9419212799, सोनिया प्रोफेसर-9419684423, विमल पंजाब-

9517232165, मंजू लेक्चरर (उधमपुर)-9418695330, मन्नू जी. शर्मा-8743059325, मूलराज-9596610264, राकेश कुमारी- 97976 56917, अश्विनी शर्मा-9419702013, **पालमपुर**-आर.एस. मिन्हास-9418161585, संजय सूद-9816005757, ओमकार राणा, गोरख नाथ, देव गौतम, **कांगड़ा**-अशोक कुमार-9736296077, सुनील नाग, संजीव, **धर्मशाला** -संध्या-9805668100, जुल्फी राम, आशा गोरांग, **नागरोटा**- ओमप्रकाश-9418256074, कौशल गुलेरिया, जगजीत पठानिया, सुभाष चन्द्र शर्मा, मिण्टू, **नूरपुर**-राम स्वरूप रतन- 94185 90516, सुखदेव सिंह गुलेरिया-9816234300, राजेन्द्र कुमार -0179 -3221582, राजेश कपूर -9418246999, प्रवेश कुमार -9418429866, राहुल-9418121206, अश्विनी शर्मा- 8628071179, एन.सी. शर्मा-9816152967, **चिंतापूरणी**-अजित लाल, **जम्मू**-सतपाल शर्मा, विजय खजुरिया, ज्योति खजुरिया, रतन सिंह, कृष्ण देवी, बालकृष्ण शर्मात

5 दिसम्बर 2021

ऐश्वर्य महालक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल : श्री खंडोबा देवस्थान ट्रस्ट, खंडोबा माक आकुड़ी, पिंपरी चिंचवड़ शहर, **पूणे**

आयोजक मण्डल - कदम साहब-9922640064, अनिल सुपेकर-9767395044, संतोष सुपेकर-8308828535, निखिल भोकरे-9895801155, बाळा साहेब बाळवडकर -9762964344, दत्ताजय कविस्कर-9921407825, वैभव कराले- 9823041226, दुष्यंत नैसर्गी, रवि कुमार लंगड़े-9048698121, संजोय डहाके-9011067000, विनोद पंवार-9665065291, विजय अण्णा-7776064286, प्रशांत डफाडे -7972749642, योगेश झा-9850946250, अशोक भागवत

19 दिसम्बर 2021

गुरु-शिष्य मिलन समारोह शिविर

शिविर स्थल : होटल स्वास्तिक मण्डप, बड़ा शंख, पूरी मंदिर रोड, **पूरी (उड़ीसा)**

आयोजक मण्डल - मुख्य अयोजक - इन्द्रजीत राय, 8210257911, 9199409003, चैतन्य गुंजन योगी जी, (भुवनेश्वर), 8144904640, डॉ. लक्ष्मी नारायण पानी ग्राही एवं प्रतिमा कुमारी पत्रा, 9437616301, सूरत ध्रुवा एवं सत्यवती ध्रुवा, (बाण्डामुण्डा), 9337852925, वैष्णोचरण साहु, (बलांगीर), 8249804350, सुब्रतो बोहिदार, 7978047344, **कटक** - शिव विरचरण नारायण त्रिपाठी, 8895972932, अभिषेक शर्मा, 8847857125, **आ.सि.सा. परिवार ब्रह्मपुर के समस्त गुरु भाई गुरू बहन**, डॉ. एस.वी. देव-9437358366, धर्मेन्द्रदास-9040097901, संतोष कु. पति-876344177, मनोज कु. पात्रा-9178813079, संतोष कु. पति-7008449893, **भुवनेश्वर** - प्रदीप कुमार महापात्रो, लिंगराज त्रिपाठी एवं **भुवनेश्वर के समस्त गुरू भाई-बहन, पूरी** - संतोष कुमार परिदा, आ.सि.सा. परिवार कालाहाण्डी के समस्त गुरू भाई गुरू बहन - प्रदीप साहु, **सम्बलपुर** - दिलीप कुमार मिश्रा, लिंगराज प्रधान, किशोक कुमार बरिहा, सुरोज कुमार प्रधान, **राउरकेला**- नरेश रजगड़िया, रोहित कुमार पिलैइ, वृंदावन ताती, गौड़ सिंह भूमीज, **सुन्दरगढ़** - अशोक कुमार प्रसाद, दया सागर, दीपक पटनायक, **झारसुगोड़ा**- हरिबाग, बाबूलाल साहू, वेंकटेश राव, नितीन जी, **बाण्डामुण्डा** - जयदीप नायक, सूरज मलाकार, **तेतलागढ़** - हरशिकेश नाग एवं जमुना नाग, **धर्मगढ़** - नेहारिका नाग, **धनबाद (झारखण्ड)** - राहुल सिंह, मुरारी महतो, **लखीसराय, बिहार, आ.स.सा. परिवार बलंगीर के समस्त गुरू भाई गुरू बहन।**

25 दिसम्बर 2021

दस महाविद्या साधना शिविर

शिविर स्थल : श्री सूरती मोड़, वनिक वाड़ी, लाल दरवाजा मेन रोड, रेल्वे स्टेशन के पास, **सूरत** (गुजरात)

आयोजक मण्डल-विजय पटेल-9925104035, विवेक कापड़े-7984064374, तरंग पटेल-9898965511, नीरज पटेल-96241 59779, प्रियंका-9374012333, दिव्येश भाई-9374716532, शंकर भाई-9128304483, सुरेन्द्र चौरसीया-9725822979, अनिल चौधरी, दिनेश भाई (सायन), निलेश पटेल (सायन), आनन्द भाई, राजु भाई, रमेश भाई, सत्या महाराज, संतोष भाई, चेतन भाई, विजय बंगाली, निराली पाटील, दिपीका आंटी, **वलसाड**-जयनीश पानवाला, प्रमीत मेहता, चंद्रप्रभा कपाडी, **भरूच**-हरेश जोशी, हेमन्त भट्ट, विजयनाथ सहानी, **बडौदा**-हितेश शुक्ला, चिराग माहेश्वरी, पी.के. शुक्ला, **अहमदाबाद** -कमलेश सुतार, बेचर भाई, श्यामलाल, नितिन प्रजापति, मोण्टू प्रजापति, दिपेश गांधी, अंकित प्रजापति, धवल प्रजापति, विक्की प्रजापति, रोहन भाई, भौमिक प्रजापति, प्रशांत प्रजापति

26 दिसम्बर 2021

गुरु-शिष्य मिलन समारोह शिविर

शिविर स्थल : शिक्षण संगीत आश्रम, स्वामी श्रीवल्लभ दास मार्ग, निअर गुरुकृपा हॉटल, प्लॉट नं. 6, सायन (पूर्व), **मुम्बई**
(सायन स्टेशन से 5 मिनट की दूरी पर)

आयोजक मण्डल - तुलसी महतो-9967163865, डॉ. संतलाल पाल-97680 76888, यशवंत देसाई-9869802170, नागसेन पवार -9867621153, अजय मांचरेकर, मानव, पीयूष, सुनील साल्वी, श्रीनिवास, गुरु, रोहित शेट्ठी, मनोज झा, राकेश तिवारी, हमप्रसाद पाण्डे, बुद्धिराम पाण्डे, गंगा, जिया, सीता, सोनू, दिलीप झा, उपाधे, पूर्णिमा (नेपाल), प्रकाश सिंह, संजय गायकवाड़, गोरखनाथ, बसन्ती, पीताम्बर (नेपाल), रामेश्वर, अनयसिंह, जी.डी. पाटिल, रवि पाटिल, मोहनी सैनी, हरिभाई विश्वकर्मा, सुहासिनी दयालकर, गायत्री दयालकर, अजय कुमार सिंह, प्रवीण राय, वीरेन्द्र, श्यामसुन्दर, भावप्रसाद पाण्डे, रवि साहू, राकेश तिवारी, भाव प्रकाश, निर्मल कुमार, राघवेन्द्र प्रताप, प्रवीण भारद्वाज, प्रीतम भारद्वाज, संतोष अम्बेडकर, राजकुमार मिश्रा, अनीता हंसराज भारद्वाज, अरविन्द अरोड़ा, राहुल पाण्ड्या, विवेक पवार, गीता, ममता, राजेश उपाध्याय

पालमपुर (हि.प्र.) में आयोजित साधना शिविर के दृश्य

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 October, 2021
Posting Date : 21-22 October, 2021
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

माह : नवम्बर एवं दिसम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
03-04 नवम्बर
10 दिसम्बर

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
20-21 नवम्बर
11-12 दिसम्बर

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002